जनवरी - मार्च 2018 भाग XXVIII संख्या 4 ISSN 0971 - 1856

भारतीय नारियल पत्रिका

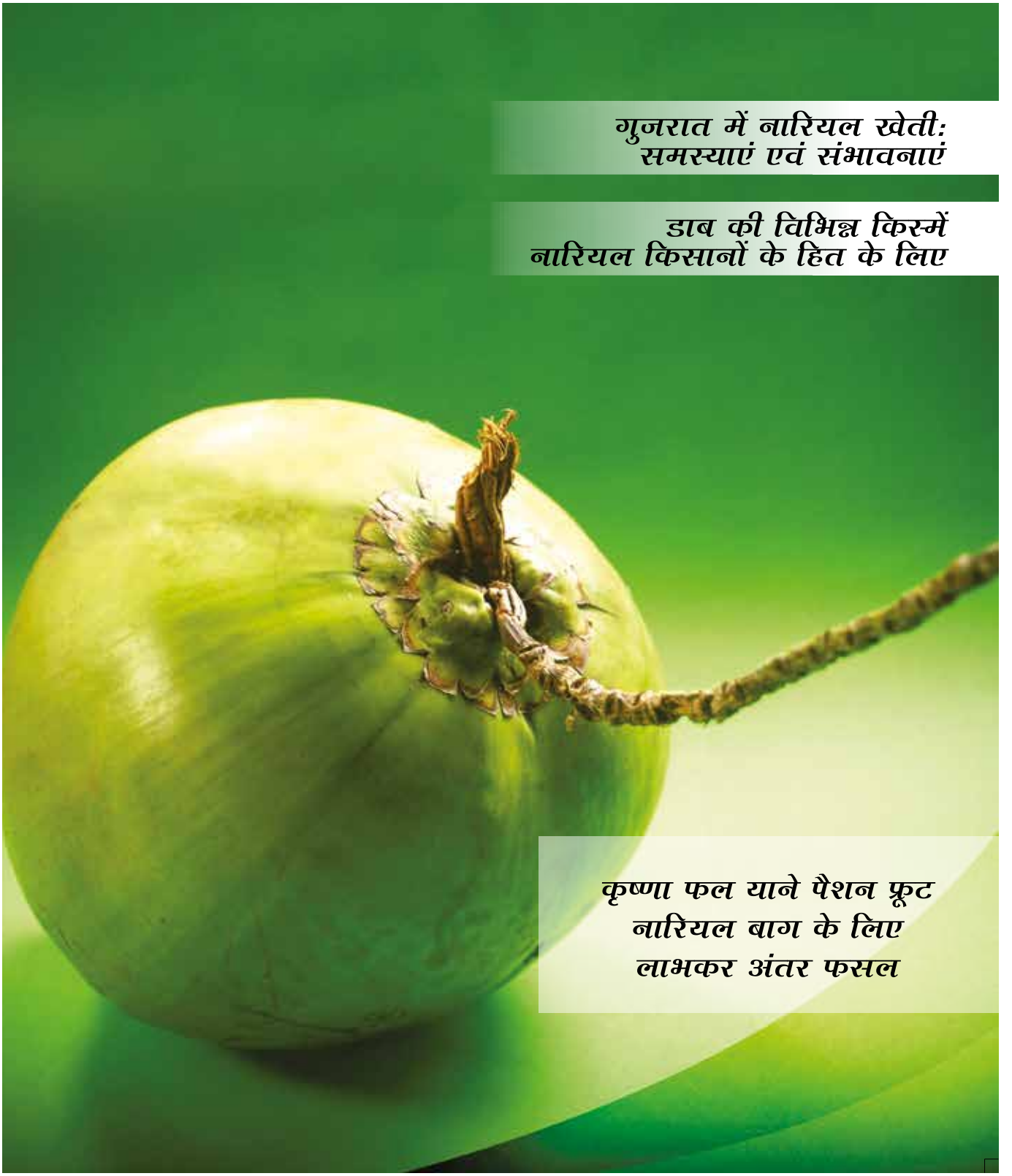

गुजरात में नारियल खेती: समस्याएं एवं संभावनाएं

डाब की विभिन्न किस्में नारियल किसानों के हित के लिए

कृष्णा फल याने पैशन फ्रूट नारियल बाग के लिए लाभकर अंतर फसल

भारतीय
नारियल
पत्रिका

भाग XXVIII संख्या : 4
जनवरी - मार्च 2018 कोची-11

परामर्श मंडल :

अध्यक्ष

डा. बी. एन. एस. मूर्ति

सदस्य

डा.एस.के.मल्होत्रा

ओम प्रकाश

संपादक मंडल

सदस्य

आर. मधु

डा.अल्का गुप्ता

मुख्य संपादक

सरदिंदु दास

संपादक

एस. बीना

उप संपादक

संगीता टी.एस.

संपादन सहयोगी

विन्दु रानी एन.

डा. सूर्या प्रत्यूष

प्रकाशक :

नारियल विकास बोर्ड

(कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग, भारत सरकार)

केरा भवन, कोची - 682 011, भारत

दू. भा. : 0484-2376265, 2377266, 2377267, 2376553.

फैक्स : 91-484-2377902 ग्राम्स : KERABOARD

ई-मेल : kochi.cdb@gov.in, cdbkochi@gmail.com

वेबसाइट : www.coconutboard.gov.in

नारियल कृषि एवं उद्योग के विभिन्न पहलुओं पर आधारित लेख, शोध निबन्ध और पत्र इस पत्रिका में प्रकाशन हेतु आमंत्रित किये जाते हैं। सभी स्वीकृत सामग्रियों को मानदेय दिया जाएगा। इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में प्रकट किए गए विचार लेखकों के अपने हैं और बोर्ड उनके लिए उत्तरदायी नहीं है। शुल्क और पत्र अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन, कोची - 682 011 के नाम पर भेज दें।

नारियल विकास बोर्ड

भारत सरकार ने देश में नारियल खेती एवं उद्योग के समन्वित विकास के लिए स्वायत्त निकाय के रूप में नारियल विकास बोर्ड की स्थापना की। बोर्ड, जो 1981 जनवरी 12 को अस्तित्व में आया, भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्यरत है। इसका मुख्यालय केरल के कोची में है और क्षेत्रीय कार्यालय कर्नाटक के बैंगलूर, तमिलनाडु के चेन्नई, असम के गुवाहटी और बिहार के पटना में हैं। बोर्ड के पाँच: राज्य केन्द्र भी हैं और ये ओड़िशा के भुबनेश्वर, पश्चिम बंगाल के कोलकात्ता, आँध्र प्रदेश के विजयवाड़ा, महाराष्ट्र के ठाणे एवं संघशासित क्षेत्र अंडमान व निकोबार द्वीप समूह के पोर्ट ब्लेयर में स्थित हैं। बोर्ड के प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म नेर्यमंगलम (केरल), वेगिवाड़ा (आँध्र प्रदेश), कोंडागाँव (छत्तीसगढ़), मधेपुरा (बिहार), अभयपुरी (असम), पित्तापल्ली (ओड़िशा), मंड्या (कर्नाटक), पालघर (महाराष्ट्र) धली (तमिलनाडु) तथा साउथ हिच्चाचेरा (त्रिपुरा) में हैं। केरल के आलुवा के पास वाष़क्कुलम में बोर्ड ने प्रौद्योगिकी विकास केन्द्र की स्थापना की है।

बोर्ड के मुख्य प्रकार्य

❑ नारियल उद्योग के विकास हेतु उपाय अपनाना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों का विपणन सुधारने हेतु उपायों की सिफारिश करना। ❑ नारियल खेती एवं उद्योग में लगे लोगों को तकनीकी सलाह देना। ❑ नारियल खेती के अधीन क्षेत्र विस्तार के लिए वित्तीय एवं अन्य सहायता देना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों के संसाधन के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकियाँ अपनाने को प्रोत्साहित करना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों को प्रोत्साहन मूलक भाव मिलने हेतु उपाय अपनाना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों के आयात और निर्यात नियंत्रित करने हेतु उपायों की सिफारिश करना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों के लिए श्रेणी, विनिर्देश एवं मानक निर्धारित करना। ❑ नारियल का उत्पादन बढ़ाने के लिए उपयुक्त योजनाओं को आर्थिक सहायता देना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों के कृषि, प्रौद्योगिकीय, औद्योगिक या आर्थिक अनुसंधानों को सहायता देना, प्रोत्साहन देना, बढ़ावा देना एवं आर्थिक सहायता देना। ❑ केन्द्रीय सरकार तथा बड़े पैमाने में नारियल की खेती वाले राज्यों की सरकारों से विचार विमर्श करके नारियल का उत्पादन बढ़ाने, प्रजातीय गुणवत्ता और उपज सुधारने के लिए उपयुक्त योजनाओं को वित्तीय सहायता देना तथा इसी उद्देश्य के लिए नारियल कृषकों और नारियल उत्पादों के विनिर्माताओं को पुरस्कार और प्रोत्साहन राशि प्रदान करने के लिए योजनाएं बनाना और नारियल एवं नारियल उत्पादों के विपणन के लिए सुविधाएं उपलब्ध कराना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों के उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन संबंधी आँकड़े एकत्रित करना एवं उन्हें प्रकाशित करना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों से संबंधित प्रचार कार्य करना एवं पुस्तकें व पत्रिकाएं प्रकाशित करना।

बोर्ड द्वारा 'भारत में नारियल उद्योग के एकीकृत विकास' परियोजना के अधीन कार्यान्वित विकास कार्यक्रम हैं: रोपण सामग्रियों का उत्पादन व विपणन, नारियल के अधीन क्षेत्र विस्तार, उत्पादकता सुधारने के लिए एकीकृत खेती, प्रौद्योगिकी निदर्शन, बाज़ार संवर्धन और सूचना व सूचना प्रौद्योगिकी।

नारियल प्रौद्योगिकी मिशन के अधीन बोर्ड द्वारा कार्यान्वित कार्यक्रम हैं प्राणी कीटों व रोगों से ग्रस्त नारियल बागानों के प्रबंधन के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास, निदर्शन तथा अंगीकरण, प्रसंस्करण, उत्पाद विविधीकरण, बाज़ार अनुसंधान व संवर्धन के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास और अंगीकरण।

शुल्क

वार्षिक	40 रु.
एक प्रति	10 रु.
आजीवन (30 वर्ष)	1000 रु.

नारियल विकास बोर्ड द्वारा प्रकाशित तथा सर्वश्री पाइको प्रिंटिंग प्रेस, कोची-18 में मुद्रित

इस अंक में

गुजरात में नारियल खेतीः समस्याएं एवं संभावनाएं 2
भलेराव पी.पी, पटेल बी.एन, महेश्वरप्पा एच.पी और जिलु वी साजन

कृष्णा फल याने पैशन फ्रूट-नारियल बाग के लिए लाभकर अंतर फसल 7
आर.ज्ञानदेवन

नारियल का भाव गिर जाए, फिर भी नहीं हिलता कुंजम्बु 10
सी.तंपान, एम.के.राजेष, जेस्मी विजयन

गुणवत्तापूर्ण नारियल पौध लगाएं 15
आर.ज्ञानदेवन

डाब की विभिन्न किस्में नारियल किसानों के हित के लिए 18
वी.निरल, रंजिनी टी.एन

रेगिस्तान में भी नारियल की खेती 23

नारियल विकास बोर्ड के किसान प्रशिक्षण केन्द्र और क्षेत्रीय कार्यालय भवन का लोकार्पण 26

नारियल बागों में मासिक कार्य 30

समाचार 38

बाज़ार समीक्षा 56

बाज़ार रिपोर्ट 59

गुजरात में नारियल खेती: समस्याएं एवं संभावनाएं

भलेराव पी.पी., पटेल बी.एन, महेश्वरप्पा एच.पी और जिलु वी साजन
भा.कृ.अ.प.-अ.भा.स.ता.अ.प., एएसपीईई बागवानी और वानिकी कालेज,
नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी (गुजरात) - 396 450

नारियल पेड़ पाँच देववृक्षों में से एक है और भारतीय साहित्य में कल्पवृक्ष के रूप में इसकी कल्पना की जाती है। देश के परंपरागत नारियल उत्पादक क्षेत्रों के लोग अपनी रोज़मर्रा जिन्दगी में नारियल पेड़ के सभी भागों का किसी न किसी रूप में इस्तेमाल करते हैं। इसके फल को लक्ष्मी फल कहा जाता है और सामाजिक एवं धार्मिक प्रयोजनों के लिए इसका इस्तेमाल किया जाता है चाहे इसकी क्षेत्र विशेष में खेती की जाती है या नहीं।

भारत में नारियल की खेती 18 राज्यों और 3 संघ शासित क्षेत्रों में की जाती है। नारियल खेती के तहत कुल क्षेत्र के लगभग 90 प्रतिशत और कुल उत्पादन के 93 प्रतिशत चार दक्षिणी राज्यों जैसे केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक और आन्ध्र प्रदेश का योगदान है। ऐसे कुछ परंपरागत नारियल उत्पादक राज्य भी हैं जहाँ अधिकाधिक क्षेत्र नारियल खेती के अधीन लाया जा सकता है। विशेष रूप से गोवा, महाराष्ट्र और गुजरात जैसे राज्यों में अनुकूल कृषि जलवायु परिस्थितियाँ और तटीय क्षेत्र मौजूद हैं और इन राज्यों में नारियल की खेती की अच्छी संभाव्यता होती है। एक फसल के रूप में नारियल अंतर खेती तथा मिश्रित खेती के लिए अनेक अवसर प्रदान करता है, इसलिए परंपरागत राज्यों के इन संभाव्य क्षेत्रों में नारियल आधारित एकीकृत खेती प्रणाली को प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है। पूर्वी तट पर, पश्चिम बंगाल के कुछ भाग, ओड़िशा और आन्ध्र प्रदेश में अनुकूल कृषि जलवायु परिस्थितियाँ हैं और वहाँ नारियल आधारित एकीकृत खेती प्रणाली शुरू की जा सकती है। गैर परंपरागत राज्यों जैसे बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड और पूरे उत्तर पूर्वी राज्य भी

नारियल खेती एवं नारियल आधारित खेती प्रणाली के लिए काफी उपयुक्त क्षेत्र प्रदान करते हैं। गैर परंपरागत नारियल उत्पादक राज्यों में डाब की बहुत बडी मांग होती है। अतः हाल में मात्र डाब के लिए नारियल बाग लगाया जा रहा है और इसको और प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है।

गुजरात में नारियल की खेती

गुजरात राज्य के प्रमुख बागान फसलों में एक है नारियल, विशेषतया 1600 कि.मी. के तटीय क्षेत्रों में, जो देश के किसी राज्य के मुकाबले सबसे बड़ा क्षेत्र है। वर्ष 2015-16 के आँकडों के अनुसार गुजरात में 3126.80 लाख नारियल उत्पादन तथा प्रति हेक्टर 13706 नारियल की उत्पादकता के साथ नारियल के अधीन कुल क्षेत्र लगभग 22,813 हेक्टर है। भारतीय राज्यों में गुजरात क्षेत्र एवं उत्पादन में सातवें और उत्पादकता में चौथे स्थान पर है। नारियल के तहत क्षेत्र और उत्पादन का करीब 60 प्रतिशत जूनागढ़, भावनगर, वलसाद, गिर सोमनाथ तथा देव भूमि द्वारका के अविभाजित तटीय जिलों का योगदान है। गुजरात में नारियल के अधीन क्षेत्र 2005-2006 के 14,650 हेक्टर से बढ़कर 2015-2016 में 22,813 हेक्टर हो गया है। त्योहारों के दौरान आम तौर पर नारियल का उपयोग होता है और इसके मूल्य वर्धित उत्पादों के बारे में लोगों को अधिक जानकारी नहीं है।

गुजरात में नारियल अनुसंधान

गुजरात राज्य में नारियल उत्पादन बढ़ाने के उद्देश्य से दो प्रमुख अनुसंधान संगठन कार्यरत हैं। पहला है कृषि अनुसंधान स्टेशन (फल फसल), महुआ (जिला-भावनगर) जो जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय के अधीन है और इसकी स्थापना तटीय क्षेत्र की बंजर भूमि में आम, नारियल, सुपारी, चीकू, केला आदि जैसी बागवानी फसलों की खेती शुरू करने के उद्देश्य से हुई थी। अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना (ए आई सी आर पी) इस केंद्र में नारियल की उच्चतम पैदावार किस्म विकसित करने, नारियल उत्पादन के लिए सबसे उपयुक्त और प्रभावी कृषि विधियाँ निर्धारित करने, किसानों को संकर नारियल पौधों की आपूर्ति करने और नारियल कीट और रोग की रोकथाम के लिए

महुआ की नारियल नर्सरी

उपयुक्त पौधा संरक्षण उपाय विकसित करने के उद्देश्य से कार्यरत था। दूसरा केंद्र है- बागवानी अनुसंधान केंद्र, एएसपीईई बागवानी और वानिकी कालेज, नवसारी जो नवसारी विश्वविद्यालय के अधीन है जहाँ वर्ष 2009 से भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना केंद्र कार्यरत है। दोनों केंद्र नारियल पेड़ के स्वदेशी एवं विदेशी जननद्रव्य का एकत्रीकरण, मूल्यांकन तथा अनुरक्षण, कीट एवं रोग प्रतिरोधी और उच्च पैदावार किस्म के नारियल विकसित करने के लिए जननद्रव्य उत्पन्न करने, विभिन्न परिस्थितियों के तहत उपयुक्तता परखने के लिए नव विकसित जीन प्रारूपों का परीक्षण, फसल और फसलोत्तर प्रौद्योगिकी और उसी तरह जैविक खेती प्रणालियों सहित स्थानीय विशेष उत्पादन प्रौद्योगिकी विकसित करने, नारियल के विभिन्न किस्मों के अच्छे गुणवत्तापूर्ण पौधों का उत्पादन एवं वितरण करने और विभिन्न विस्तार साधनों के ज़रिए किसानों तक नारियल खेती की उत्पादन प्रौद्योगिकी प्रसारित करने के उद्देश्य से कार्यरत हैं।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना केंद्र की उपलब्धियाँ

अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना केंद्र गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियों के उपयोग के लिए किसानों को प्रोत्साहित करके और नारियल उत्पादन के लिए वैज्ञानिक तकनीकी अपनाने हेतु किसानों को सलाह देकर राज्य का संपूर्ण नारियल उत्पादन एवं उत्पादकता सुधारने में मदद करता है।

हल्दी की अंतर खेती

केला और जिमीकंद के साथ उच्च सघन बहु फसलीय खेती प्रणाली

फसल सुधार

जननद्रव्य एकत्रीकरण एवं मूल्यांकनः चार स्थानीय जननद्रव्य एकत्रित किए गए और उनका मूल्यांकन किया जा रहा है।

विमोचित नारियल किस्मों का निदर्शनः केरा बस्तर, कल्याणी नारियल-1, कल्प मित्रा, कल्प धेनु, गौतमी गंगा और कल्प प्रतिभा नारियल किस्मों को राज्य के स्थानीय कृषि जलवायु परिस्थिति के लिए उपयुक्त पाया गया है।

नारियल बागों में मिश्रित फसल के रूप में कोको क्लोन की उपयुक्तता का मूल्यांकनः कोको की बढ़वार, उपज तथा गुणवत्ता में वीटीएलसीसी-1 क्लोन बेहतर रहा।

फसल उत्पादन

नारियल आधारित एकीकृत फसल प्रणाली नमूना का विकास

- नारियल बाग में अंतर फसल के रूप में हल्दी
- एकल फसल के रूप में नारियल की खेती की तुलना में नारियल + केला + हल्दी + जिमीकंद + कालीमिर्च का संयोजन लाभदायक पाया गया है।
- नारियल के साथ अंतर फसल के रूप में नोनी *(मोरिन्डा सिट्रिफोलिया)*: नारियल आधारित मिश्रित फसल प्रणाली में नोनी को लाभदायी सह फसल के रूप में पहचाना गया है। ऊतक संवर्धन से विकसित पौधों की तुलना में स्वाभाविक रूप से विकसित पौधे बेहतर पाए गए हैं।
- जूनागढ़ और गिर सोमनाथ क्षेत्र में किसान नारियल बागों में केला और सब्जी फसलों की अंतर खेती कर रहे हैं।

नारियल क्षेत्र की संभाव्यता

नारियल खेती परंपरागत तटीय जिलों के अलावा राज्य के अन्य गैर-परंपरागत जिलों में भी करनी चाहिए। यह अनुमानित है कि राज्य में स्थान विशिष्ट कार्यक्रमों के कार्यान्वयन द्वारा गुजरात सरकार तथा भा.कृ.अ.प.-अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना के सहयोगात्मक प्रयासों से और 40,000 हेक्टर क्षेत्र में नारियल की खेती की जा सकती है। भले ही गुजरात एक नारियल उत्पादक राज्य है फिर भी राज्य में एक भी नारियल तेल उत्पादन इकाई नहीं है। तथापि यहाँ प्रसाधन प्रयोजनों के लिए नारियल तेल के लिए अच्छा बाज़ार है और प्रति वर्ष लगभग 8 हज़ार टन नारियल तेल की वार्षिक खपत होती है। गर्मियों में डाब की माँग बढ़ जाती है। राज्य में खाद्य खोपरे की खपत ज्यादा नहीं है जबकि त्योहार के अवसर पर माँग बढ़ती है। डेसिकेटड नारियल का उपयोग मुख्यतः बिस्कुट, बेकरी और मिठाई निर्माण उद्योगों में होता है। जूनागढ़, भावनगर और वलसाद जिलों में और उनके आसपास की निजी और सहकारी क्षेत्रों में कुछ निर्माण इकाइयाँ हैं। नारियल के उत्पादन तथा फसलोत्तर प्रसंस्करण की संभाव्यता को ध्यान में रखते हुए राज्य में नारियल के उत्पादन को और बढ़ाने तथा नारियल उद्योग के विकास के लिए एकीकृत विकास प्रणाली अपनानी चाहिए।

उत्पादकता बढ़ाने हेतु अवसर

गुजरात राज्य में नारियल किसानों की कृषि भूमि बहुत छोटी है, इसलिए खेती से आय बढ़ाने का उचित तरीका नारियल आधारित खेती प्रणाली को बढ़ावा देना है। कृषक

समूह को अधिकतम लाभ प्रदान करने के लिए गुजरात सरकार और भा.कृ.अ.प.-अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना को राज्य में राष्ट्रीय बागवानी मिशन (एनएचएम), राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (आरकेवीवाई) एवं आत्मा के तहत कार्यान्वित विभिन्न योजनाओं/कार्यक्रमों और राज्य योजनाओं के सम्मिलन करने हेतु एक साथ मिलकर काम करने की आवश्यकता है। नारियल के अधीन क्षेत्र विस्तार, मौजूदा बागों की उत्पादकता में सुधार, नूतन प्रौद्योगिकी पर दक्षता संवर्धन, कौशल प्रशिक्षण, नारियल आधारित उद्योग में उद्यमिता विषयक जागरूकता अभियान आदि पर अधिक ज़ोर देना चाहिए। सरकारी एजेंसियों द्वारा किसानों की देहली पर गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री का यथा समय आपूर्ति सुनिश्चित करना चाहिए। नारियल विकास बोर्ड और बागवानी निदेशालय, गुजरात सरकार द्वारा नूतन योजनाओं और स्थान विशेष के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी के अभिग्रहण के ज़रिए नारियल का उत्पादन तथा उत्पादकता सुधारने के लिए ठोस प्रयास किया जाना चाहिए। प्रमुख नारियल उत्पादक जिलों में खेत पर ही नारियल का मूल्य बढ़ाने के लिए मूल्य वर्धित उत्पाद जैसे पैकटबंद डाब पानी, डेसिकेटड नारियल, विर्जिन नारियल तेल, सक्रियित कार्बन, खोपड़ी कोयला, कयर आधारित उत्पाद आदि के लिए एकीकृत नारियल आधारित उद्योग स्थापित करना चाहिए।

राष्ट्रीय बागवानी मिशन तथा नाविबो की उपयुक्त योजनाओं के कार्यान्वयन के एकीकरण के जरिए नारियल आधारित खेती प्रणाली अपनाने के लिए किसानों को राष्ट्रीय बागवानी मिशन के अधीन वित्तीय सहायता उपलब्ध कराया जा सकता है। गुणवत्तापूर्ण नारियल पौधों से पुनर्रोपण/पूरक रोपण को बढ़ावा देने के लिए राज्य के निजी और सार्वजनिक क्षेत्र के नर्सरी कार्यक्रम को पुनर्रोपण कार्यक्रमों के साथ जोडना चाहिए ताकि किसानों को नारियल के पौधे उपलब्ध कराए जा सके। नर्सरी कार्यक्रम विभिन्न कृषि जलवायु परिस्थितियों के तहत खेती के लिए उपयुक्त उच्च पैदावारयुक्त संकर या चयनित परिस्थिति अनुकूल किस्म के उत्पादन एवं आपूर्ति करने के लिए ही लक्षित होना चाहिए। डाब फलों की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए नई जगह तथा मौजूदा बाग में जहाँ भी जगह उपलब्ध हो, बौनी किस्मों के रोपण को प्रोत्साहित करना चाहिए।

गुजरात में डाब व्यापार

एपीएमसी, महुआ (जूनागढ़) नारियल का प्रमुख बाज़ार है और नारियल की कुल बिक्री की करीब 70 प्रतिशत यहाँ होती है। तथापि हाल ही में उना, कोडिनार, मांगरोल, गिर सोमनाथ और देवभूमि द्वारका में भी राज्य में नारियल का स्वतंत्र एकत्रण तथा विपणन केंद्र विकसित हुआ है। रिपोर्ट की गयी है कि राज्य में उत्पादित कुल नारियल के लगभग 20 प्रतिशत की खपत डाब के रूप में होती है और घरेलू उपयोग एवं बीजफल के रूप में उपयोग हेतु 5 प्रतिशत फल किसान अपने पास रखते हैं। किसानों द्वारा डाब की तुड़ाई होती है और वे इन्हें छोटे ट्रक या छोटी गाड़ी में संग्रह केंद्र पहुँचाते हैं। देश के विभिन्न भागों में पहुँचाने के लिए इन्हें बड़े ट्रकों में चढ़ाया जाता है। नारियल उत्पादन के लगभग

42 प्रतिशत की खपत राज्य में ही होती है और 33 प्रतिशत दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश ले जाए जाते हैं। डाब वर्षभर उपलब्ध होते हैं, अतः राजपथ, बस अड्डे, रेलवे स्टेशन तथा ग्रामीण विपणन केंद्र के साथ साथ पूरे राज्य में इसकी बिक्री होती है। मार्च से जून तक की गर्मियों के महीनों में इसकी माँग बढ़ जाती है।

नारियल खेती की चुनौतियाँ

गुजरात में नारियल एक वासभूमि फसल है और किसानों द्वारा उगाई जानेवाली विभिन्न फसलों में से एक मुख्य फसल है। गुजरात के खेतों की खासियत यह है कि वहाँ के खेत छोटे आकार के होते हैं। अधिकतर खेत 0.1 हेक्टर से कम आकार के हैं और केवल कुछ ही किसानों के पास 0.40 हेक्टर से बड़े खेत हैं। छोटे खेत और इनमें से अधिकांश वासभूमि बाग होने के कारण इन पर निर्भर परिवारों को पर्याप्त आय प्राप्त नहीं होती है। कामगारों की कमी और उच्च मज़दूरी भी कृषि कार्य समय पर अपनाने की तथा नियमित तुड़ाई की उपेक्षा करने के लिए किसानों को मजबूर कर देता है। इसके परिणाम स्वरूप वे प्रबंधन विधियाँ अपनाने पर विशेषकर छोटे खेतों में, ध्यान नहीं देते हैं और इसका नतीजा निकलता है कम उत्पादकता एवं उच्च उत्पादन लागत। प्रति हेक्टर 200 पेड़ों से ज्यादा के हिसाब से पेड़ों की अधिकता के साथ साथ सही रूप में प्रबंधन तरीके न अपनाना कम उत्पादकता के कारण बनते हैं। हालांकि अधिकतर किसान जैव खाद प्रयोग अपनाते हैं किंतु बहुत कम ही किसान अनुशासित स्तर पर अजैविक उर्वरकों का प्रयोग करते हैं। अधिकतर खेतों में परंपरागत खेती प्रणालियाँ अपनाई जा रही हैं। नारियल बागों को पुनरुज्जीवित करने के लिए नए पौध लगाते समय किसानों द्वारा सामने की जानेवाली दूसरी प्रमुख समस्या है पेड़ों पर गंभीर रूप से रोगों एवं कीटों का आक्रमण।

वैज्ञानिक पौधा संरक्षण उपाय और उर्वरक प्रयोग को व्यापक तौर पर अभी तक नहीं अपनाए जाते हैं। इसका कारण है उर्वरकों की उच्च लागत और पौधा संरक्षण उपायों का प्रयोग करने के लिए प्रशिक्षित लोगों को मिलने में कठिनाई। पौधा संरक्षण और उर्वरक प्रयोग के क्षेत्र की बाधाएं विकासात्मक कार्यक्रमों के ज़रिए वित्तीय सहायता प्रदान करके दूर करना चाहिए। नारियल आधारित उद्योगों के लिए कच्ची सामग्रियों की कमी और कमज़ोर विपणन अवसंरचनाओं की वजह से गुजरात राज्य में नारियल आधारित उद्योगों की स्थापना के लिए उद्यमी आगे नहीं आ रहे हैं।

नारियल उद्योगों के विकास के लिए राज्य कार्यक्रम/परियोजनाएं/योजनाएं

अब भा.कृ.अ.प., राज्य कृषि विश्वविद्यालय तथा बागवानी निदेशालय, गुजरात राज्य पिछले पाँच वर्षों के दौरान अधिकतम बजट परिव्यय के साथ एक महत्वकांक्षी नारियल खेती कार्यक्रम पर लगे हुए हैं, जिसका लक्ष्य इसका पुराना गौरव वापस लाना ही नहीं बल्कि गुजरात को नारियल के अधीन क्षेत्र और नारियल उत्पादकता में सर्वोच्च तीन राज्यों में एक बनाना भी है। कृषक समूह के लिए उपयुक्त नूतन योजनाएं तथा प्रौद्योगिकियाँ अपनाकर नारियल का उत्पादन और उत्पादकता सुधारने के लिए राज्य कृषि विश्वविद्यालय तथा बागवानी निदेशालय, गुजरात सरकार को ठोस प्रयास करना चाहिए। कृषि विश्वविद्यालयों और गुजरात सरकार को गुजरात में नारियल खेती के लिए उपयुक्त सभी संभावित क्षेत्र (लगभग 40,000 हेक्टर) को नारियल के तहत मिशन मोड पर लाना चाहिए जिसके लिए इच्छुक किसानों को अधिकाधिक प्रोत्साहन तथा समय पर गुणवत्तापूर्ण पौधों की आपूर्ति करनी चाहिए। किसानों को ड्रिप सिंचाई प्रणाली अपनाने और नारियल का उत्पादन तथा उत्पादकता बढ़ाने के साथ साथ इकाई क्षेत्र से आय बढ़ाने के लिए अन्य लाभदायक फसलों के साथ नारियल आधारित उच्च सघन बहु फसलीय प्रणाली अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। खेत पर ही नारियल का भाव बढ़ाने तथा नारियल के बेहतर उपयोग के लिए प्रमुख नारियल उत्पादक जिलों में मूल्य वर्धित उत्पादों जैसे पैकटबंद डाब पानी, नीरा, नारियल शक्कर, डेसिकेटड नारियल, विर्जिन नारियल तेल, सक्रियित कार्बन, खोपड़ा कोयला, कयर आधारित उत्पाद आदि के लिए एकीकृत नारियल आधारित उद्योग स्थापित किया जाना चाहिए।

कृष्णा फल याने पैशन फ्रूट-नारियल बाग के लिए लाभकर अंतर फसल

आर.ज्ञानदेवन,
उप निदेशक, नाविबो, कोची-11

नारियल एक ऐसी फसल है जिसकी खेती दूसरी सह फसलों के साथ की जा सकती है। नारियल बाग में अंतर फसलों की खेती करने से अधिक खाद्य एवं कृषि उत्पाद प्राप्त होते हैं जिससे ग्रामीण और शहरी इलाकों के लोगों के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित हो जाती है। यह नारियल बाग से प्राप्त आय बढ़ाने के साथ साथ रोज़गार और आजीविका सुरक्षा प्रदान करता है और किसान समूह से गरीबी का उन्मूलन करता है। नारियल आधारित एकीकृत फसल प्रणाली अपनाने से प्राकृतिक संसाधनों का बेहतर उपयोग होता है और सह फसलों के जैव अवशिष्ट लगातार मिट्टी में मिल जाने से मिट्टी की उर्वरता भी बढ़ जाती है। अतः मिट्टी की उर्वरता बढ़ाकर नारियल की उत्पादकता बढ़ाने और इकाई जोतों से उच्चतर आमदनी प्राप्त करने की प्रबंधन विधि के रूप में भी इसकी अनुशंसा दी जाती है। नारियल बाग में एकल फसल के रूप में नारियल पेड़ उगाने से बाग में उपलब्ध मिट्टी, पानी और सूरज की रोशनी जैसे मूल संसाधनों का शतप्रतिशत उपयोग नहीं होता है। पेड़ों के बीच 25 फुट X 25 फुट की दूरी छोड़कर वैज्ञानिक तरीके से लगाए गए नारियल बाग में, नारियल द्वारा मात्र 25 प्रतिशत मिट्टी का ही उपयोग होता है और शेष मिट्टी यूँ ही पड़ी रहती है जहाँ पर सह फसलों की खेती की जा सकती है। ऐसे बागों से न ही परिवार के लिए पर्याप्त रोज़गार प्राप्त होते हैं और न ही परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आवश्यक आमदनी सालभर मिल जाती है। अनुसंधानों के ज़रिए कोको, जायफल, लौंग, अनन्नास, कालीमिर्च, केला, सब्जियाँ आदि कई फसलें नारियल के लिए बेहतरीन सह फसलों के रूप में पहचानी गई हैं।

एकल फसल के रूप में नारियल की खेती करना मुनाफेदार नहीं होने के कारण किसान नारियल बागों के लिए सर्वोत्तम सह फसल की तलाश में रहता है। प्रबंधन प्रणालियाँ अपनाने, फसल की तुड़ाई, खरपतवार निकालना आदि जैसे कृषि कार्यों में मज़दूरी में हुई वृद्धि के कारण किसान नारियल बाग में कम उत्पादन लागत से अधिक कमाई मिलने वाली उपयुक्त सह फसलों की खेती करने के बारे में सोचते रहते हैं। नारियल बाग से अधिक आमदनी मिलने वाली अंतर फसल के रूप में एक नयी परंपरागत अर्ध वार्षिक फलदार फसल की ओर किसान आकृष्ट हो रहे हैं और वह है पैशन फ्रूट (*Passiflora edulis*) याने कृष्णा फल। यह अर्ध वार्षिक, शाकीय, लता-तंतु वाली बेल है जिसकी खेती नारियल बाग में अंतर फसल के रूप में अन्य फसलों के साथ की जा

सकती है। इसकी खेती मुख्यतः फल के लिए की जाती है। पैशन फ्रूट का जन्म ब्राजील में हुआ था और भारत में इसकी खेती मुख्यतः पश्चिम हिमाचल प्रदेश और मणिपुर, त्रिपुरा और मेघालय जैसे उत्तरपूर्वी राज्यों में की जाती है। इसकी खपत ताजा फल के रूप में नहीं बल्कि ज्यूस के रूप में होती है। इसके पौष्टिक एवं औषधीय गुणों को जानने के बाद दक्षिण भारतीय बाज़ारों में इसकी बहुत बड़ी माँग है। यह स्वादिष्ट फल आहारीय रेशे, विटामिन सी और प्रोटीन, आयरन, कोपर, मैगनीशियम आदि खनिजों का बेहतरीन स्रोत है।

शहरी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को सूपर मार्केटों में जाते समय इस लाजवाब फल का जायका लेने का अवसर प्राप्त होता है। गहरी जामुनी से लेकर हल्का पीले रंग के इस फल के भीतर का रसीला गूदा चखने के बाद लोगों के मन में यह ख्याल ज़रूर आता होगा कि "मैं इस फल के बारे में पहले क्यों अनजान रहा"। इस फल का इतना जबरदस्त प्रभाव रहा कि केरल और कर्नाटक जैसे राज्यों के शहरी इलाकों में धीरे धीरे यह अपनी जगह बना रहा है। केरल और कर्नाटक के कुछ इलाकों के किसान नारियल की सह फसल के रूप में सफलतापूर्वक इसकी खेती कर रहे हैं। श्रीलंका में अर्ध वार्षिक अंतर फसल के रूप में नारियल बाग में इसकी खेती करने की सिफारिश की जाती है।

उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में नारियल की खेती के लिए जो जलवायु परिस्थितियाँ अपेक्षित हैं वह पैशन फ्रूट के लिए भी उपयुक्त है। इससे उच्चतम उपज प्राप्त करने के लिए अच्छी जलनिकासी वाली मिट्टी, अच्छी वितरित वर्षा और 20^0सें. से 30^0सें. के बीच तापमान उपयुक्त है। पैशन फ्रूट की खेती के लिए पर्याप्त नमी और जैव तत्व निहित मिट्टी सबसे उत्तम है। इस फल की बेल 6.5-7.5 पीएच मान वाली जैवतत्वों से समृद्ध हल्की बलुई दोमट और चिकनी बलुई दोमट मिट्टी में अच्छी तरह बढ़ती है। यह औसत समुद्र स्तर से 750 से 1500 मीटर के बीच ऊँचाई में बढ़ता है। पैशन फ्रूट की कई किस्में उपलब्ध हैं। फिर भी वाणिज्यिक रूप से खेती करने के लिए पीला और जामुनी रंग के पैशन फ्रूट या संकर (जामुनी x पीला) जैसी लोकप्रिय किस्मों की सिफारिश की जाती है। नारियल बाग में 25 वर्ष की आयुवाले नारियल पेड़ों की आंशिक छाया में इन किस्मों की खेती की जा सकती है। उष्णकटिबंधीय क्षेत्र के मैदानी दक्षिणी नारियल उत्पादक राज्यों में खेती करने के लिए पीली किस्म सबसे उपयुक्त है। भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित संकर किस्म उच्च पैदावार वाली *कावेरी* किस्म है और इसके साथ जामुनी किस्म का फल भी नारियल बाग में खेती के लिए उपयुक्त है।

नारियल बाग में पैशन फ्रूट का रोपण

पैशन फ्रूट अक्सर बीज से उगाया जाता है। नर्सरी में या पोली बैग में बीज उगाया जा सकता है। जब पौध 20-30 सें.मी.ऊँचा हो जाता है, तब 25 वर्ष की आयु वाले नारियल बाग में इसका प्रतिरोपण किया जाता है। पौध की कलमें लगाकर भी यह बढ़ाया जा सकता है। 3 से 4 गाँठ वाली अच्छी तरह परिपक्व बेल को 22-30 सें.मी. लंबाई में काटा जाता है। नर्सरी या पोली बागों में लगाई गई कलमें अच्छी तरह जड़ पकड़ने के बाद 90 दिनों में प्रतिरोपण के लिए तैयार हो जाती हैं। इसकी बेल औसतन सात वर्ष तक फल देती रहती हैं।

नारियल बाग में रोपण के लिए पौध/जड़ वाली कलमों का प्रयोग किया जा सकता है। श्रीलंकन कोकनट कल्टिवेशन बोर्ड द्वारा नारियल बाग में 26 फुट x 26 फुट की दूरी में लगाए गए नारियल पेड़ों की दो कतारों के बीच 6 फुट x 6 फुट की दूरी पर अंतर फसल के रूप में पैशन फ्रूट का रोपण अनुशंसित है, जैसा कि चित्र में दर्शाया गया है।

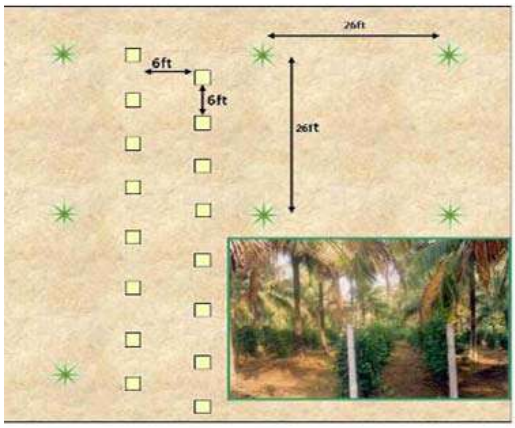

एक एकड़ के नारियल बाग में पैशन फ्रूट की तकरीबन 400 बेलों का रोपण किया जा सकता है। बारिश के मौसम

की शुरुआत में रोपण करना वांछनीय है। कम से कम 30 दिन पहले 45 सें.मी. x 45 सें.मी. x 45 सें.मी. आकार के गड्ढे तैयार करने चाहिए जिनमें अच्छी तरह जैव तत्व और ऊपरी मृदा डालनी चाहिए और इसे मौसम का असर झेलने के लिए यूँ ही छोड़ देना चाहिए। छोटे पौधों का रोपण ध्यान से करना चाहिए और इनकी जड़ों को कोई नुकसान नहीं पहुँचना चाहिए। गर्मी के महीनों में नारियल बाग में पौधों का प्रतिरोपण करने के बाद सिंचाई और छाया प्रदान करनी चाहिए। 25 फुट x 25 फुट की दूरी में लगाए गए एक एकड़ के नारियल बाग में 6 फुट x 6 फुट की दूरी पर 400 पैशन फ्रूट पौधों का रोपण किया जा सकता है।

हरेक पौधे के नीचे अस्थायी रूप से सहारा देने की आवश्यकता है ताकि इससे पौधा जाली तक बढ़कर तारों पर बेल की पकड़ अच्छी तरह मज़बूत हो जाए। बगल की 4-6 बेलों को ज़मीन से ऊपर की ओर लगे तारों की दिशा में फैलाना चाहिए और जब ये बेल मचान के बराबर फैल जाती हैं तब इसमें फूल आने लगते हैं। पैशन फ्रूट की बेल भी करेला जैसी अन्य सब्जियों की तरह रस्सी या लोहे के तारों से बने मचान पर फैलानी चाहिए। मचान बनाने के लिए सहारा देने हेतु नारियल पेड़ का भी प्रयोग किया जा सकता है। पैशन फ्रूट की खेती के लिए 7 से 8 फुट ऊँचा मचान अनुशंसित है। इसमें बेल का फैलाव बेहतर होता है, शीघ्र आय एवं उच्चतम पैदावार प्राप्त होती है और छँटाई एवं फलों की तुडाई का काम भी आसानी से हो जाता है। मचान के तारों को बाँस और पेड़ की शाखाओं से टेक दी जाती है जो पौधों को सहारा देने के साथ साथ जाली के तारों पर बेल के बेहतर फैलाव के लिए मदद करता है।

बेल को मचान पर ही रखने के लिए छँटाई करने की आवश्यकता है जिससे फलों की तुड़ाई का काम आसान हो जाता है, पौधों की बढ़वार बेहतर होने से यह अधिक फलदायी रहता है और इसमें नए अंकुर भी जल्दी निकलते हैं। अक्सर फसल की तुड़ाई के बाद छँटाई की जाती है। निकटतम सक्रिय अंकुर तक बगल की बेलों को काटकर छँटाई की जाती है।

पैशन फ्रूट की खेती में छँटाई व्यवस्थित रूप से की जाती है क्योंकि इससे नई बेलों की वृद्धि होती है जिसके फलस्वरूप

उच्च पैदावार मिलती है। फलों की तुड़ाई करने के बाद 4 से 5 अंकुरों को छोड़कर बाकी बगलवाली सारी बेलों की छँटाई करनी चाहिए। पैशन फ्रूट की उपज बढ़ाने के लिए प्रति बेल 10 कि.ग्रा. की दर पर जैव खाद और केंचुआ खाद का प्रयोग करना चाहिए। शुष्क मौसम में बेल में लगातार फूल और फल निकलने के लिए नियमित रूप से सिंचाई करना आवश्यक है। रोपण के 10 महीने बाद पैशन फ्रूट की बेल पर फल लगने लगते हैं और 15-18 महीने के बाद इसपर सर्वाधिक फल लगता है। फल पकने के लिए लगभग 80-90 दिन लगते हैं। फलों की उपज उगायी गई किस्म और जलवायु परिस्थितियों पर निर्भर है। पीली/जामुनी किस्मों के मामले में प्रति हेक्टर से 10 टन की औसतन पैदावार मिलती है। संकर किस्म में पैदावार अधिक होती है और इससे प्रति हेक्टर तकरीबन 18-20 टन तक फल प्राप्त होते हैं। सामान्यतः एक साल में प्रति बेल 8-9 टन(200-250 फल) की औसत उपज मिलती है। सूपर मार्केटों में पैशन फ्रूट की वर्तमान बिक्री दर प्रति कि.ग्रा. 220 रुपए है। यदि किसानों को खेत पर ही प्रति कि.ग्रा. 40 रुपए का भाव प्राप्त हो जाए तो एक एकड़ के नारियल बाग से पैशन फ्रूट की बिक्री से 1,60,000 रुपए की कुल आमदनी मिल जाएगी। उच्च आय मिलने वाले पैशन फ्रूट की कम उत्पादन लागत के मद्देनज़र बाग से आमदनी बढ़ाने के लिए नारियल बागों में इसकी खेती एकदम उपयुक्त है और साथ साथ समाज को स्वास्थ्यपूर्ण एवं स्वादिष्ट फल भी उपलब्ध कराया जा सकता है।

नारियल का भाव गिर जाए, फिर भी नहीं हिलता कुंजम्बु

सी.तंपान, एम.के.राजेष, जेस्मी विजयन
केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड

भारत में नारियल की खेती आम तौर पर लघु एवं सीमांत खेतों में की जाती है। किंतु ऐसी कृषि भूमि में एकल फसल के रूप में नारियल की खेती करना किसान परिवार के लिए लाभदायक नहीं होता है। मात्र इस आमदनी से अपेक्षाओं की पूर्ति अक्सर मुमकिन नहीं हो पाती है। यही नहीं जिन बागों में एकल फसल के रूप में नारियल की खेती अपनाई जाती है वहाँ मिट्टी और सूरज की रोशनी जैसे मूल संसाधनों का भरपूर उपयोग नहीं होता है। इसलिए नारियल बागों में बहु फसलीय खेती प्रणाली, याने नारियल के साथ अन्य फसलों की अंतर खेती करने से नारियल की उत्पादकता बढ़ने के साथ साथ आमदनी भी बढ़ जाती है। यही नहीं उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों के बेहतर उपयोग से अधिक आय भी सुनिश्चित हो जाती है। यह बहु फसलीय प्रणाली आजकल नारियल के भाव में जो घट-बढ़ दर्शित होती है इससे बचने का उपाय भी है।

आजकल नारियल के लिए काफी बढ़िया भाव मिल रहा है। किंतु ऐसा भी एक दौर था कि नारियल की खोपड़ी के लिए आज जो भाव मिल रहा है, उतना तक भी नारियल के लिए नसीब नहीं होता था। उस दौर में भी नारियल बाग में बहु फसलीय खेती प्रणाली अपनाकर खेती को लाभकर बना रहे थे यह नारियल किसान।

नारियल के साथ खेती करने के लिए उपयुक्त कई फसलें हैं। बहु फसलीय प्रणाली की सफलता मुख्यतः बाग में उपलब्ध सूरज की रोशनी, फसल का अनुरक्षण आदि पर

निर्भर होती है। नारियल पेड़ के जीवन चक्र का तीसरा चरण याने बीसवें वर्ष से लेकर नारियल बाग में किसी भी अंतर फसल(ह्रस्वकालीन हो या दीर्घकालीन फसल) की खेती की जा सकती है। क्योंकि बीस वर्ष की आयु तक आते नारियल पेड़ पर्याप्त ऊँचाई तक बढ़ जाते हैं। इस तरह बहुफसलीय खेती प्रणाली में नारियल पेड़ के नीचे अंतर फसल के रूप में जिन फसलों को लगाया जाता है उन्हें लगभग 55 प्रतिशत सूरज की रोशनी प्राप्त होती है। नारियल पेड़ की 85 प्रतिशत जड़ें तने के निचले भाग से 30 से 120 सें.मी. तक गहराई में केन्द्रित होती हैं। सहायक जड़ें धड़ से दो मीटर तक की दूरी में फैल जाती हैं। याने पेड़ों के बीच 7.5 मीटर की दूरी छोड़कर लगाए गए नारियल बाग में नारियल पेड़ की जड़ें मात्र 25 प्रतिशत मिट्टी का ही उपयोग करती हैं। इसलिए नारियल की बढ़वार के इस चरण में मिट्टी, खाद, पानी और सूरज की रोशनी का बेहतर उपयोग करने के लिए दीर्घकालीन अंतर फसलों की खेती करना उचित होता है।

नारियल बाग में बहु फसलीय खेती प्रणाली की सफलता के लिए सिंचाई सुविधा की अत्यंत अहम भूमिका होती है। नारियल पेड़ और अंतर फसलों के लिए अनुशंसित प्रबंधन तरीके अपनाना भी समान रूप से अनिवार्य है। नारियल पेड़ और दूसरी फसलों की बढ़वार में प्रतिस्पर्धा नहीं होनी चाहिए। अन्यथा नारियल से प्राप्त आय में शायद कमी आ जाएगी। नारियल पेड़ के नीचे से दो मीटर की दूरी पर बनाए गए थालों में दूसरी फसलों की खेती नहीं करनी चाहिए। किंतु नारियल थालों में कालीमिर्च पालने से नारियल उत्पादन पर कोई असर नहीं पड़ता है। इसका कारण यह है कि कालीमिर्च की जड़ें और नारियल पेड़ की जड़ें अलग अलग गहराई में पौष्टिक तत्वों का अवशोषण करती हैं। प्रारंभिक वर्षों में नारियल पेड़ के साथ केले की खेती की जा सकती है। यह दूसरी अंतर फसलों को छाया प्रदान करता है जिससे अधिक आमदनी प्राप्त होती है। उपलब्ध जगह पर अनन्नास, जिमीकंद, अदरक जैसी ह्रस्वकालीन फसलों की खेती भी इस दौरान की जा सकती है। बहु फसलीय खेती प्रणाली अपनाने से बाग की अन्य फसलों से जो अवशिष्ट प्राप्त होता है, नारियल थालों में पलेवा करने के लिए इसका उपयोग किया जा सकता है। नारियल आधारित बहुफसलीय खेती प्रणाली में इस प्रकार फसलों के अवशिष्टों का पुनर्चक्रण करने से बाग की मिट्टी की उर्वरता भी बढ़ जाती है।

नारियल के साथ काली मिर्च की खेती - सफलता की इबारत

नारियल बागों में लाभदायी रूप से खेती करने के लिए उपयुक्त प्रमुख मिश्रित फसल है कालीमिर्च। केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान जैसे अनुसंधान संस्थानों के अध्ययन के अनुसार एकल फसल के रूप में नारियल की खेती करने के बदले उसके साथ कालीमिर्च की खेती करना आर्थिक एवं तकनीकी रूप से फायदेमंद सिद्ध हुआ है। कई किसानों ने यह दावा किया है कि नारियल के साथ कालीमिर्च की अंतर खेती करने से नारियल का उत्पादन बढ़ जाता है और साथ साथ कालीमिर्च से अधिक आमदनी भी प्राप्त होती है। ऐसे ही एक किसान से यहाँ परिचय कराया जा रहा है जिन्होंने नारियल के साथ अंतर फसल के रूप में कालीमिर्च की खेती करके सफलता हासिल की है।

कासरगोड जिले के पेरिया गाँव के निवासी कुंजम्बु नायर 68 वर्षीय लघु किसान है। वे 17 वर्ष की आयु से अपने ढाई एकड़ ज़मीन में खेती करते आ रहे हैं। आज के ज़माने में कुंजम्बु नायर जैसे किसान बहुत विरले ही मिलते हैं जो खेतीबाड़ी में अपना पूरा समय लगाते हैं। यानी अपनी आजीविका के लिए वह मात्र खेती पर निर्भर है। नारियल उनके बाग की मुख्य फसल है। इसके साथ कुछ सुपारी के पेड़ भी हैं। मुख्य फसल नारियल के साथ अंतर फसल के रूप में वे कालीमिर्च की खेती कर रहे हैं। इसके साथ केले और कुछ सब्जियाँ भी लगाए गए हैं। पासवाली ज़मीन पट्टे पर लेकर वहाँ पर भी केले और सब्जियों की खेती कर रहे हैं। उनकी ढालू कृषि भूमि की ऊपरी 70 सेंट भूमि में वे नारियल और कालीमिर्च की खेती कर रहे हैं। नीचे की 50 सेंट भूमि में वे सुपारी की खेती कर रहे हैं। इसमें से 20 सेंट भूमि में लगे सुपारी ताड़ों पर उन्होंने कालीमिर्च के पौधे चढ़ाए हैं। शेष 30 सेंट में सुपारी की खेती एकल फसल के रूप में कर रहे हैं।

कुंजम्बु नायर की 70 सेंट भूमि में 15 वर्ष आयु के 50 नारियल पेड़ हैं। ये सभी पश्चिम तटीय लंबी किस्म के हैं।

पेड़ों के बीच 9 मीटर की दूरी छोड़ी गई है। नारियल थालों से तीन मीटर छोड़कर आपस में चार मीटर की दूरी पर कालीमिर्च की खेती कर रहे हैं। बाग में इसप्रकार कालीमिर्च के 40 पौधे लगाए गए हैं। कुंजम्बु नायर ने फसलों के बीच दोनों के लिए अनुशंसित दूरी से भी अधिक दूरी छोड़ दी है। उनकी राय में अधिक दूरी छोड़कर यदि हम फसलों का अनुरक्षण करें तो पानी और खाद के लिए ये एक दूसरे के साथ होड़ नहीं करेंगे। यही नहीं शेष जगह पर हम केला और सब्जियाँ जैसी ह्रस्वकालीन फसलों की खेती भी कर सकते हैं।

काली मिर्च को सहारा देने के लिए फरहद पेड़ के तने लगाए जाते हैं। चार-चार मीटर की दूरी में 50 सें.मी. लंबे, चौड़े और गहरे गड्ढ़े खोदकर उसमें गोबर, ऊपरी मिट्टी आदि भरकर फरहद का तना लगाया जाता है। तीन साल में फरहद पेड़ बढ़ जाने के बाद उस पर कालीमिर्च की बेल फैलायी जाती है। ऐसा करने से ही इनके लिए पर्याप्त सूर्य प्रकाश प्राप्त होता है। मानसून शुरू होने पर फरहद के तने के उत्तरी ओर 30 सें.मी. छोड़ कर 50 सें.मी. लंबे, चौड़े और गहरे गड्ढ़े खोदकर उसमें कालीमिर्च की कलम लगानी चाहिए। कलम का रोपण करने से पहले पाँच कि.ग्रा. कंपोस्ट, 150 ग्राम रोक फोसफेट, मित्र फफूँद ट्राइकोडेर्मा मिश्रित नीम खली आदि मिट्टी के साथ मिलाकर हरेक गड्ढ़े में भरना चाहिए। जिन कलमों पर जड़ें आयी हैं उनका रोपण इन गड्ढ़ों में करना चाहिए। सामान्यतः अच्छी उपज देने वाली पन्नियूर-1 किस्म कुंजम्बु के मिश्रित फसल वाले बाग में भी अच्छी उपज दे रही हैं। उनकी राय में फसलों के बीच निर्दिष्ट दूरी और पर्याप्त जगह देने के कारण ही यह संभव हुआ है। हरेक गड्ढ़े में काली मिर्च की दो-दो कलमें लगायी जाती हैं। काली मिर्च बढ़ने के साथ साथ जो नई बेल निकलती हैं उन्हें सहारा देने वाले पेड़ के साथ बाँधना चाहिए।

कालीमिर्च लगाने के बाद बची ज़मीन पर पहले वर्ष के दौरान ही उन्होंने 700 केले के पेड़ लगाए थे। इससे कालीमिर्च की छोटी बेलों को पर्याप्त छाया भी प्राप्त हुई। केले के प्रति पेड़ से 15 कि.ग्रा. वज़न के केले के गुच्छे प्राप्त हुए। गुच्छे काटने के बाद शेष अवशिष्टों को टुकड़ा करके कालीमिर्च के पौधे और नारियल पेड़ों के लिए पलेवा लगाया गया। जून और सितंबर के दौरान फरहद पेड़ के डालों को काटकर निकालके कालीमिर्च के पौधे के लिए पर्याप्त रूप से सूर्य का प्रकाश उपलब्ध कराया गया। अन्यथा फरहद की डालें बड़े होकर काली मिर्च को पर्याप्त सूर्य प्रकाश नहीं मिलने देंगी जिससे कि कीटों के प्रकोप की संभावना बनी रहती है। कुंजम्बु नायर के अनुसार बारिश का मौसम खत्म होने पर कालीमिर्च के पौधों के मूल भाग पर हरे पत्ते या जैव अवशिष्टों से पलेवा लगाना उचित होता है। इससे किसी भी हालत में कालीमिर्च के पौधों की जड़ों को कोई नुकसान नहीं होता है। यदि किसी कारणवश पौधे का निचला भाग हिल जाता है तो जड़ों को नुकसान पहुँच सकता है और यदि जड़ों को नुकसान होता है तो जड़ सड़न रोग के कारक फफूँद के प्रकोप की संभावना बन जाती है।

दूसरे वर्ष के दौरान मिश्र फसल के रूप में प्रियंका किस्म के करेले की खेती की गई। पिछले वर्ष के दौरान केले की खेती करते समय केले के गुच्छे को सहारा देने के लिए जो 700 डंडे लगाए थे उस पर करेले को फैलाया गया। एक

पौधे से 5-6 कि.ग्रा. उपज प्राप्त हुई। कुल मिलाकर उन्होंने चार टन करेले की बिक्री की। करेले की फसल लेने के बाद उन्होंने लोबिया की खेती की। उससे भी दो टन उपज प्राप्त हुई। तीसरे साल फिर से केले की खेती की। प्रति पेड़ से केले के 15 कि.ग्रा. वजन वाले गुच्छे प्राप्त हुए। इस प्रकार पहले के तीनों सालों में उन्हें अंतर फसलों से बहुत अच्छी आमदनी प्राप्त हुई। आर्थिक फायदे के साथ साथ कालीमिर्च के पौधों को पर्याप्त छाया भी प्राप्त हुई और फसलों के अवशिष्टों का बड़े पैमाने पर पुनर्चक्रण करके नारियल के लिए आवश्यक जैव खाद भी उपलब्ध कराए गए। तीसरे साल कालीमिर्च की बेलों पर फूल लगने लगे। तब उन्होंने सब्जियों एवं केले की खेती करना बंद कर दिया।

कुंजम्बु नायर ने नारियल और कालीमिर्च की खेती में मिट्टी की जाँच करवाकर उसके आधार पर खाद डालने का तरीका अपनाया है। खेती में उनकी सफलता का प्रमुख राज़ भी यही है। खाद प्रयोग के लिए वे जैव खादों को अहमियत देते हैं। यह मिट्टी की उर्वरता बढ़ाती है। उनकी कृषि भूमि में लाल दुमट मिट्टी होने के कारण भूमि में नमी बरकरार रहती है। प्रति नारियल पेड़ के लिए वे साल में 25-30 कि.ग्रा. बकरी की लेड़ी और 5 कि.ग्रा. नीम की खली नियमित रूप से देने के अलावा दो साल में एक बार 2 कि.ग्रा. मछली खाद भी देते हैं। बाग से तथा पड़ोस से इकट्ठे किए गए हरे पत्ते भी नारियल थालों में डाल देते हैं। बारिश खत्म होने पर जैव खाद का प्रयोग किया जाता है। दो कि.ग्रा. पोटेश तीन बार मई-जून, सितंबर और जनवरी महीनों में नारियल थालों में मिलाया जाता है। मिट्टी की जाँच करने पर बोरोन की कमी पायी गयी थी जिसके लिए प्रति ताड़ 100 ग्राम के हिसाब से बोरोक्स का प्रयोग किया जाता है। मिट्टी की अम्लता नियंत्रित करने के लिए प्रति ताड़ एक कि.ग्रा.के हिसाब से डोलोमाइट भी दिया जाता है। यह अम्लता कम करने के साथ साथ मैगनीशियम की कमी भी पूरा करता है। कालीमिर्च के लिए एकीकृत खाद प्रयोग प्रणाली अपनायी गयी है। सभी पौधों को चार कि.ग्रा. बकरी की लेड़ी और गोबर दिए जाते हैं। इसके अलावा एक कि.ग्रा. नीम की खली, साल में दो बार के हिसाब से 100 ग्राम यूरिया, 400 ग्राम पोटेश आदि भी दिए जाते हैं। हर दूसरे साल में मई-जून महीनों में रासायनिक खाद डालने के दो हफ्ते पहले कालीमिर्च के हरेक पौधे को 500 ग्राम डोलोमाइट भी दिया जाता है। कालीमिर्च की बेल पर फूल लगने के एक महीने पहले और फूल लगने के एक महीने बाद साल में दो बार हरेक पौधे को पाँच ग्राम सूक्ष्मपोषक तत्व एक लीटर पानी में घोलकर स्प्रिंक्लर सिंचाई के ज़रिए दिए जाते हैं।

बाग में लगाए गए बोरवेल से बहुतायत में पानी उपलब्ध होने के कारण दिसंबर से मई महीने तक चार दिनों में एक बार हरेक नारियल पेड़ को 200-250 लीटर पानी दिया जाता है। उन्होंने थालों में पानी देने के लिए होस पाइप से सिंचाई करने का तरीका अपनाया है। मार्च से मई तक कालीमिर्च के पौधों को भी पानी देते हैं। हरेक पौधे के जड़ क्षेत्र में 40-45 लीटर पानी पहुँचाया जाता है।

कुंजम्बु नायर के नारियल बाग में गैंडा भृंग और माइट के अतिरिक्त और कोई रोग-कीट प्रकोप नहीं पाया गया है। निश्चित अंतराल में नारियल पेड़ के शिखरों की सफाई की जाती है। गैंडा भृंगों को भृंग अंकुश से पकड़ कर मार देते हैं। कुंजम्बु नायर ने बताया कि नारियल के साथ अंतर फसल के रूप में कालीमिर्च की खेती में सफलता पाने के लिए कालीमिर्च के जड़ सड़न रोग के निवारण के लिए एकीकृत प्रबंधन प्रणाली अपनाना अनिवार्य हैं। कासरगोड में पेरिया इलाके के कालीमिर्च किसानों को कालीमिर्च के जड़ सड़न रोग से जो गंभीर नुकसान पहुँचा था उस से वे अच्छी तरह अवगत हैं और इसलिए अपनी कृषि भूमि से इस रोग को दूर रखने के लिए वे सदा चौकन्ने रहते हैं। वे रोग की रोकथाम हेतु सभी उपाय अपनाते हैं। सूखे और खराब कालीमिर्च की बेलों को तुरंत काटकर जलाना और निराई-गुड़ाई करते

समय जड़ों को नुकसान न होने पर ध्यान देना जैसी एकीकृत प्रबंधन प्रणाली का वे अनुसरण करते हैं। इसके अलावा जो नई बेल निकलती हैं, ज़मीन पर उनका फैलने को रोकने के लिए उन्हें काटकर निकालना, सहारा देने वाले पेड़ों की डालें काटकर पर्याप्त मात्रा में सूरज की रोशनी उपलब्ध कराना, पौधे के जड़ क्षेत्र से 50 सें.मी.की दूरी पर चारों ओर प्रति लीटर पानी में 3 ग्राम के हिसाब से तैयार किए गए 5-10 लीटर कोपर ऑक्सिक्लोराइड घोल का प्रयोग, मई महीने में पहली बारिश के बाद और अगस्त एवं सितंबर महीनों में और यदि ज़रूरत हो तो अक्तूबर में पौधों पर एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव आदि जैसी फसल प्रबंधन प्रणाली भी अपनाई जाती है। यदि किसी पौधे पर रोग का प्रकोप पाया जाता है तो एक प्रतिशत सांद्र बोर्डो पेस्ट या पोटेशियम फोसफोनेट आदि में से किसी एक का प्रयोग किया जाता है।

पहली फसल तुड़ाई में याने खेती शुरू करने के तीसरे साल कुंजम्बु नायर को अपनी कृषि भूमि से 100 कि.ग्रा. कालीमिर्च प्राप्त हुई। बाद के सालों में भी फसल की मात्रा में वृद्धि होती रही और छठे वर्ष तक आते पैदावार में स्थिरता आ गई। अब प्रति पौधे से औसतन 5-6 कि.ग्रा. कालीमिर्च प्राप्त हो रही है। वर्तमान में केरल में कालीमिर्च की औसत उपज प्रति पौधा 1 कि.ग्रा. है जबकि कुंजम्बु नायर को अपनी कृषि भूमि से इतनी अधिक उपज प्राप्त हो रही है। इस एकीकृत खेती प्रणाली के ज़रिए अपने बाग में नारियल की उत्पादकता बढ़ाने में भी वे कामयाब हुए। कुंजम्बु नायर को एक नारियल पेड़ से साल में औसतन 150 नारियल प्राप्त होते हैं। अपना पूरा समय खेती कार्यों में व्यस्त श्री कुंजम्बु नायर के परिवार वाले भी उनकी खेती में हाथ बँटा रहे हैं। नारियल और कालीमिर्च की तुड़ाई, थालों से खरपतवार निकालना, खाद डालना, पौधा संरक्षण उपाय आदि कार्यों के लिए वे मज़दूरों की सहायता ले रहे हैं। कुंजम्बु नायर के अनुसार जब नारियल के भाव में भारी गिरावट हुई थी तब उस संकट की स्थिति से उन्हें कालीमिर्च ने बचाया था। उनके तजुर्बे के अनुसार नारियल आधारित बहुफसलीय खेती प्रणाली अपनाना सब से लाभकर होता है। चाहे नारियल का भाव गिरे या कालीमिर्च का, उसका कुंजम्बु पर कोई असर नहीं होगा।

कुछ साल पहले जब नारियल के भाव में भारी गिरावट हुई थी तब कालीमिर्च के भाव ने आसमान छू लिया था। अब हालात एकदम उल्टा पड़ गया है। नारियल का भाव सर्वकालीन रिकार्ड में है और कालीमिर्च का भाव गिरता जा रहा है। फिर भी मात्र 70 सेंट में नारियल आधारित एकीकृत खेती से कुंजम्बु नायर को लगभग 1.60 लाख रुपए की आमदनी प्राप्त हुई है।

कुंजम्बु नायर को खेती से जो सफलता हासिल हुई है उसका मुख्य आधार मिट्टी और फसल का वैज्ञानिक स्वास्थ्य प्रबंधन तकनीक है। सूरज की रोशनी, पानी और मिट्टी जैसे प्राकृतिक संसाधनों का प्रभावी उपयोग करके मिश्रित खेती प्रणाली अपनाकर छोटी सी कृषि भूमि से भी अधिक आय कमाना संभव है, जिसका जीवंत उदाहरण है कुंजम्बु नायर जैसा लघु किसान। मुख्य फसल के रूप में नारियल की खेती करने के साथ साथ वे पट्टे पर ली गई भूमि में केला, करेला तथा अन्य सब्जियों की खेती हर वर्ष करते आ रहे हैं। जब केले के तना छेदक कीट का प्रकोप होता है उसके नियंत्रण हेतु कसावा के पत्ते से उत्पादित 'नन्मा' और 'मेन्मा' जैसी जैव कीटनाशियों का प्रयोग करके एकीकृत कीट नियंत्रण उपाय अपनाते हैं। इसके लिए कुंजम्बु नायर को कासरगोड के कृषि विज्ञान केन्द्र से मदद मिल रही है। इस साल पट्टे पर लिए गए दो एकड़ ज़मीन पर करेले के 600 पौधे, तोरई के 300 पौधे और चिचिंडे के 300 पौधे लगाए हैं। इस बार वे अकेले नहीं है, स्वयं सहायता समूह के छह लोग भी उनके साथ हैं। इसके अलावा कालीमिर्च का सहारा फरहद पेड़ों की अच्छी डालें वे ज़रूरतमंदों को दे रहे हैं।

खेती में उनका जो अनुभव है, दूसरों के साथ बाँटने वाला आदर्श किसान भी है कुंजम्बु नायर। एकीकृत खेती में विशेषतया नारियल, कालीमिर्च, केले, सब्जियाँ आदि की खेती में उन्होंने जो सफलता हासिल की है वह समाचार पत्र, रेडियो आदि के माध्यम से कई लोगों के लिए प्रेरणादायी बन गया है। वे केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, पटन्नक्काट कृषि कॉलेज के साथ निरंतर संपर्क में रहते हैं। इन संस्थाओं में किसानों और वैज्ञानिकों के बीच जो चर्चाएं संपन्न होती हैं उनमें भी वे सक्रिय सहभागी हैं।

गुणवत्तापूर्ण नारियल पौध लगाएं

आर.ज्ञानदेवन
उप निदेशक, नारियल विकास बोर्ड, कोची

नारियल बाग से पूरी तरह रोगग्रस्त, अधिक आयु के जीर्ण पेड़ों को काटकर निकालके यथासमय गुणवत्तापूर्ण नारियल पौध लगाना नारियल का उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने के लिए अनिवार्य है। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो नारियल के अधीन क्षेत्र कम हो जाएगा और सालाना उत्पादन में भी भारी कमी आ जाएगी।

हमें यह भूलना नहीं चाहिए कि नारियल पेड़ छाता समान पत्तों के वितान के साथ हमारी पारिस्थितिकी का शुद्धीकरण करने की प्रक्रिया में भी लगा रहता है। यह कल्पवृक्ष वातावरण से कार्बन डाई ऑक्साइड का अवशोषण करके वातावरण को स्वच्छ बनाने के साथ साथ वायुमंडल का तापमान भी कम करता है। इसलिए बारिश के मौसम में कम उत्पादन देने वाले नारियल पेड़ों को काटकर निकालके इसके स्थान पर गुणवत्तापूर्ण नए पौधों से पुनर्रोपण करना अनिवार्य है।

बारिश का मौसम शुरू होने से पहले नारियल पौध लगाने का स्थान तय करके तदनुसार गड्ढ़े तैयार करने चाहिए। बारिश की शुरुआत के साथ इसमें नारियल पौध लगाएं। बारिश के मौसम को ध्यान में रखते हुए नारियल बाग में पूरकरोपण (मौजूदा पेड़ों के बीच रोपण) और नए रोपण के लिए लाखों नारियल पौध तैयार किए जाते हैं। किंतु इनमें से अधिकांश पौधे ऐसे हैं कि इन पर यथासमय फल नहीं लगता है। यदि फल लगता भी है तो वांछित मात्रा में उपज प्राप्त नहीं होती है। इसका प्रमुख कारण गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियों के चयन में होने वाली चूक है। गुणवत्तापूर्ण नारियल पौध चुनकर रोपण करने से ही नारियल पेड़ से हमें अधिक मात्रा में उपज प्राप्त होती है। नारियल पेड़ से अधिकाधिक जितनी उपज प्राप्त हो सकती है, उसके मात्र 40 प्रतिशत नारियल ही हमें प्राप्त हो रहे हैं। इसलिए अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए गुणवत्तापूर्ण नारियल पौध लगाना अनिवार्य है।

गुणवत्तापूर्ण नारियल पौध चुनकर रोपण करने के बाद पर्याप्त मात्रा में यदि पानी, खाद और सूर्य का प्रकाश प्राप्त हो जाए तो लंबी किस्म के नारियल पौधों पर पाँचवें साल और बौनी किस्म के नारियल पौधों पर तीसरे साल फल लगने चाहिए। किंतु यहाँ अधिकांश नारियल पौधों पर रोपण के सात या आठ वर्ष बाद ही फल लगते हैं। इसका प्रमुख कारण आनुवंशिक गुणों से युक्त बढ़िया किस्म के नारियल पौध चुनने में हमारी लापरवाही है। निजी नर्सरियों से बढ़िया किस्म

के नारियल पौध समझकर अच्छे दाम देकर कम गुणवत्ता के नारियल पौध खरीदकर शिक्षित लोग भी धोखा खा जाते हैं।

गुणवत्ता से तात्पर्य क्या है? नारियल की उत्पादकता सहित नारियल के सभी गुणधर्म इसकी प्रत्येक कोशिका में निहित 32 क्रोमोसोम(गुणसूत्र) के वंशाणु पर निर्भर है। ये वंशाणु आनुवंशिक रूप से नारियल पेड़ को पैतृक गुणों का स्थानांतरण करते हैं। गुणवत्तापूर्ण मातृ वृक्षों, बीजफलों और नारियल पौधों का चयन करने से हमें इन पैतृक गुणों का लाभ प्राप्त होता है।

उच्च उत्पादकता वाली मातृ वृक्षों से एकत्रित बीजफलों का नर्सरी में रोपण करके नारियल पौध उत्पादित करनी चाहिए। इस प्रकार उत्पादित पौधों में जो विशेषताएं प्रकट हो जाती हैं उन्हें परखकर मात्र गुणवत्ता पूर्ण नारियल पौधों का चयन करके बाग में रोपण करना चाहिए। ऐसा करने से आनुवंशिक गुणों से युक्त गुणवत्तापूर्ण नारियल पौधों का उत्पादन किया जा सकता है। आनुवंशिक गुणों से युक्त अच्छी गुणवत्ता के नारियल पौधों का चयन करने के साथ साथ इन पौधों की बढ़वार के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करना भी अनिवार्य है। हालांकि यह अपेक्षित नहीं है कि पानी, खाद और सूर्य का प्रकाश पर्याप्त मात्रा में देने और समय समय पर पौधा संरक्षण उपाय अपनाने से एक पौधा अच्छी तरह बढ़कर अच्छी पैदावार देता रहेगा। बल्कि पौधों में अनुकूल वातावरण का लाभ उठाने के आनुवंशिक गुण

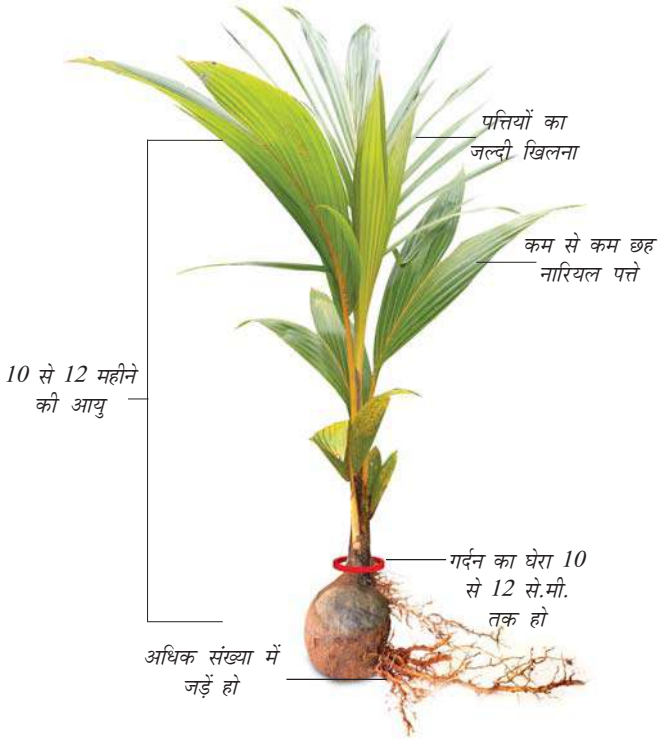

निहित होने चाहिए और ये गुण पौध लगाते समय हम जिन पौधों का चयन करते हैं उन पर निर्भर होते हैं। गुणवत्तापूर्ण नारियल पौध और बीजफल के लिए अनिवार्य गुणधर्म संबंधी विवरण सारणी 1 और 2 में दिया गया है।

नारियल पौध लगाते समय किसानों के मन में अक्सर यह सवाल ज़रूर उठता है कि कौन सी किस्म का चयन करना चाहिए। कम अवधि में फल लगने वाली तथा अधिक

सारणी 1: नारियल पौध के लिए गुणवत्ता मानदंड

गुणधर्म	मानदंड
पौध की आयु	12 महीने
नारियल पत्तों की संख्या	6-8 तक, पत्तियाँ खिली हुई हों
पौध के गर्दन (नारियल और पौध जुड़ने का भाग) का घेरा	बौनी किस्म - कम से कम 8 सें.मी. लंबी/संकर किस्म- कम से कम 10-12 सें.मी.
पौध की कद	बौनी किस्म - कम से कम 80 सें.मी. लंबी/संकर किस्म- कम से कम 100 सें.मी.
पत्ते के डंठल का रंग	बौनी किस्म - मातृ ताड़ का रंग संकर किस्म - हरा, भूरा, मातृ-पितृ ताड़ों का सम्मिश्रित रंग
रोग/कीट	प्रकोप न हो

सारणी 2: अच्छे बीजफल के विशेष गुण

गुणधर्म	मानदंड
अंकुरण	80 प्रतिशत से कम न हो
नारियल का वज़न	बौनी किस्म - 400 ग्राम से कम न हो
	लंबी किस्म - 600 ग्राम से कम न हो
नारियल पानी	होना चाहिए
रोग/कीट प्रकोप	नहीं होना चाहिए
आनुवंशिक परिशुद्धता (दूसरी किस्मों का संकर न हो)	98 प्रतिशत

मात्रा में उपज देने वाली आनुवंशिक गुणों से युक्त बौनी x लंबी संकर किस्मों (बौनी किस्म को मातृ वृक्ष और लंबी किस्म को पितृ वृक्ष के रूप में संकरण करके उत्पादित) के उपयुक्त गुणों युक्त पौधे लगा सकते हैं। जड़मुर्झा रोगग्रस्त क्षेत्रों में इसकी रोगरोधी क्षमता वाली चावक्काट हरी बौनी किस्म से विकसित कल्पसंकरा किस्म एवं चयन प्रक्रिया से खोजे गए कल्पश्री हरा नारियल पेड़ का उपयोग किया जा सकता है। जड़मुर्झा रोगग्रस्त क्षेत्रों के लिए मलयन हरी बौनी किस्म की भी सिफारिश की गई है। इस किस्म की खासियत यह है कि 10-15 साल तक इसका कद अधिक ऊँचा नहीं होता है जिससे कि नारियल की तुड़ाई करना आसान होता है। इसके अलावा डाब, नीरा टैपिंग, खोपरा आदि प्रयोजनों के लिए भी यह उत्तम है। किंतु इसके लिए समय समय पर उचित पौधा प्रबंधन उपाय अपनाना अनिवार्य है। यदि मात्र डाब के उत्पादन के लिए खेती करने की सोच रहे हैं तो बौनी किस्म के गौरीगात्र, मलयन पीली बौनी किस्मों का चयन कर सकते हैं।

इसके अलावा हरेक क्षेत्र में पायी जाने वाली बेहतरीन लंबी किस्म के नारियल पेड़ों से उपर्युक्त गुणवत्ता मानदंडों के अनुसार पौधों का चयन करके रोपण किया जा सकता है।

बढ़िया नारियल पौधों का चयन करके पौधा प्रबंधन विधियाँ अपनाकर इसका अनुरक्षण करें तो नारियल पेड़ की अच्छी बढ़वार होगी और यथा समय इस पर फल भी लग जाएगा। नारियल पौध का रोपण करते समय खाद देने की आवश्यकता नहीं है। किंतु पौध लगाने के लिए गड्ढे तैयार करने के बाद इसके आधे भाग तक ऊपरी मृदा के साथ नमक, राख, रेत आदि मिलाकर भरना चाहिए। नारियल पौध लगाने के तीन महीने के भीतर पहली बार उर्वरक देनी चाहिए। तीन साल बाद चौथे वर्ष से लेकर बड़े नारियल पेड़ के लिए अनुशंसित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करना चाहिए(सारणी 3)।

सारणी 3: पौधों के लिए उर्वरकों की मात्रा

पौध की आयु	यूरिया	सूपर फोस्फेट	म्यूरिएट ऑफ पोटैश
पौध लगाने के तीन महीने बाद	100 ग्राम	200 ग्राम	200 ग्राम
पौध लगाने के एक साल बाद	330 ग्राम	650 ग्राम	650 ग्राम
पौध लगाने के दो साल बाद	660 ग्राम	1300 ग्राम	1300 ग्राम
पौध लगाने के तीन साल बाद (चौथा वर्ष)	1500 ग्राम	2000 ग्राम	2000 ग्राम

इसके अलावा नारियल पौधों को दूसरे वर्ष से रासायनिक उर्वरक देने से पहले जैव खाद का प्रयोग करना चाहिए। उपलब्धता के अनुसार प्रति पौध के लिए 25 कि.ग्रा. तक जैव खाद दी जा सकती है।

बारिश के मौसम में फफूँद के प्रकोप से नारियल पौध का शिखर सड़ने की संभावना है। इसकी रोकथाम उपाय के रूप में 5 ग्राम डाइथेन एम 45 नामक फफूँदनाशी एक लीटर पानी में घोलकर शिखर के अंकुरण हिस्से पर छिड़कना चाहिए।

नारियल पौध लगाने के लिए बीजफल और नारियल पौध का चयन गुणवत्ता मानदंडों के आधार पर करना चाहिए ताकि नारियल पेड़ पर यथा समय फल लग जाए और इससे अधिकाधिक उपज प्राप्त हो सके।

डाब की विभिन्न किस्में

नारियल किसानों के हित के लिए

वी.निरल, प्रधान वैज्ञानिक और **रंजिनी टी.एन.,** वैज्ञानिक,
फसल सुधार प्रभाग, भा.कृ.अ.प.-के.रो.फ.अ.सं., कासरगोड

भारत में नारियल पेड़ (*कोकोस नूसिफेरा एल.*) को कल्प वृक्ष कहा जाता है, जिसका अर्थ है, पेड़ जो जीवन के लिए ज़रूरी सभी चीज़ें प्रदान करता है। पौष्टिक आहार, ताज़गी भरा पेय, तेल(खाना पकाने, दवा बनाने, औद्योगिक उपयोगों और जैव ईंधन के लिए उपयोगी), वाणिज्यिक मूल्य के रेशे, कोयला, निर्माण सामग्री और घरेलू एवं औद्योगिक प्रयोजनों के लिए तरह-तरह के उत्पादों के स्रोत के रूप में इस पेड़ के सैकड़ों उपयोग हैं।

नारियल के वैश्विक उत्पादन का बहुत बड़ा योगदान उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों के 12.47 दशलक्ष हेक्टर का है। भारत में, नारियल की खेती 18 राज्यों और तीन संघ शासित क्षेत्रों में 20.70 लाख हेक्टर में की जाती है। विश्व के सर्वाधिक नारियल उत्पादक तीन देशों में एक भारत है और यहाँ का वार्षिक नारियल उत्पादन 2335.10 करोड़ फल और उत्पादकता प्रति हेक्टर 10,614 नारियल है(नारियल विकास बोर्ड, 2015-16)। नारियल की खेती के अधीन कुल क्षेत्र का 90 प्रतिशत हिस्सा परंपरागत क्षेत्र का है जो केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक और आँध्र प्रदेश आदि चार नारियल उत्पादक राज्यों में है। लक्षद्वीप और अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह जैसे द्वीपीय क्षेत्रों की मुख्य फसल नारियल है। नारियल की खेती अब बिहार, छत्तीसगढ़, गुजरात, पश्चिम बंगाल और उत्तरपूर्वी राज्य जैसे गैर-परंपरागत क्षेत्रों में भी की जाती है।

हाल के कुछ सालों में, स्वास्थ्यपूर्ण आहार के रूप में नारियल को काफी अहमियत मिल रही है। खोपरा एवं नारियल तेल के अलावा डाब पानी, विर्जिन नारियल तेल

और नारियल पुष्पक्रम रस(नीरा) के रूप में भी इसकी खपत को बढ़ावा दी जा रही है। ताज़गी भरा स्वास्थ्य पेय के रूप में डाब पानी की लोकप्रियता दिन ब दिन बढ़ती जा रही है। डाब पानी से तात्पर्य है 6-8 महीने आयु के डाब में निहित तरल भ्रूणपोष जो ठोस भ्रूणपोष या सफेद गरी बनने से पहले की अवस्था है। यह कुदरती समपरासारी(आईसोटोनिक) पेय है जिसकी इलेक्ट्रोलाइट(लवण व खनिज) संतुलन हमारे खून के बराबर है। अतः विश्व युद्ध I और II के दौरान चिकित्सा संबंधी आपातिक स्थितियों में अंतःशिरीय द्रव (आई वी फ्लूइड) के रूप में डाब पानी का प्रयोग होता था। आयुर्वेद में, डाब पानी शुक्रवर्धक, पाचन बढ़ाने वाला और मूत्र नलियाँ साफ करने वाला माना जाता है। डाब पानी में शक्कर, खनिज पदार्थ और लेश मात्रा में नाइट्रोजनी संयुक्त(प्रोटीन/अमिनो अम्ल) निहित होते हैं। नारियल पानी का प्रमुख पौष्टिकतत्व पोटेशियम है। यह इसे उच्च स्तरीय इलेक्ट्रोलाइट पेय बनाता है और खून की मात्रा बरकरार रखने, हृदय को स्वस्थ रखने, निर्जलीकरण रोकने और तनाव कम करने में मदद करता है।

हाल के सालों में, डाब पानी के स्वास्थ्य लाभों को नए सिरे से प्रस्तुत किए जा रहे हैं, जिसे कई विपणनकर्ता प्रकृति का स्पोर्ट्स पेय और आयुर्बल वर्धक बता रहे हैं। ताज़गी भरे स्वास्थ्य पेय के रूप में वैश्विक तौर पर डाब पानी के प्रति बढ़ती जागरूकता और लोकप्रियता के फलस्वरूप वातिल(एरेटेड) पेयों के कई निर्माता इस क्षेत्र में कदम रख रहे हैं। वर्ष 2020 तक नारियल का वैश्विक बाज़ार 26.75 प्रतिशत बढ़ने की उम्मीद है। वर्तमान में, विश्व में पैकेट बंद डाब पानी का सबसे बड़ा बाज़ार ब्राजील है, जहाँ पर वर्ष 2010 में ज्यूस की कुल बिक्री के 67 प्रतिशत डाब पानी की बिक्री हुई थी और इसकी बिक्री संतरे के ज्यूस के मुकाबले बढ़ती जा रही है। परंपरागत और गैर परंपरागत क्षेत्रों में डाब पानी के उत्पादों की लोकप्रियता तेज़ी से बढ़ती जा रही है, जिससे डाब के बढ़ते बाज़ार पर कब्जा करने हेतु नारियल उद्यमियों के लिए नए अवसर खुल रहे हैं।

कल्प समृद्धि

बाज़ार में डाब की माँग को पूरा करने के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान में उपलब्ध नारियल किस्मों एवं परीक्षणात्मक संकरों के जननद्रव्य पर निरंतर मूल्यांकन चला रहे हैं। इसका लक्ष्य बेहतर गुणवत्ता और अधिक मात्रा में पानी वाले डाब की उन्नत किस्में विकसित करना है जो डाब के लिए और डाब तथा खोपरा उत्पादन दोनों प्रयोजनों के लिए उपयुक्त हो ताकि देश के विभिन्न कृषि पारिस्थितिकीय क्षेत्रों में इन्हें जारी करके इनकी खेती की जा सके। राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान तंत्र के अंतर्गत देश में विकसित किस्मों की सूची सारणी में दी गई है।

चंद्र संकरा

खोपरा और डाब, दोनों प्रयोजनों वाली उन्नत किस्में

किस्म	प्रमुख गुण	डाब पानी की मात्रा (मि.ली. प्रति फल)	खोपरा की मात्रा (प्रति वर्ष प्रति हेक्टर टन में)	खेती के लिए अनुशंसित क्षेत्र	जारी एजेंसी
लंबी किस्म					
केरा चंद्रा	उच्च पैदावार	450	3.68	केरल, कर्नाटक, कोंकण क्षेत्र, आँध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल	आईसीएआर- सीपीसीआरआई, कासरगोड
कल्प प्रतिभा	उच्च पैदावार	448	4.12	केरल, आँध्र प्रदेश, तमिलनाडु महाराष्ट्र	आईसीएआर-सीपीसीआरआई, कासरगोड
कल्प हरिता	हरा फल, एरियो फिड माइट से कम नुक्सान	440	3.72	केरल, कर्नाटक	आईसीएआर- सीपीसीआरआई, कासरगोड
कल्प शताब्दि	उच्च पैदावार, गैंडा भृंग का कम प्रकोप	612	5.01	केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु	आईसीएआर-सीपीसीआरआई, कासरगोड
कल्याणी नारियल-1	उच्च पैदावार	274	3.84	पश्चिम बंगाल	बिधान चंद्र कृषि विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल
बौनी/मध्यम लंबी किस्म					
कल्प रक्षा	मध्यम लंबी, उच्च पैदावार, हरा फल	290	2.11	केरल	आईसीएआर-सीपीसीआरआई, कासरगोड
केरा मधुरा	मध्यम लंबी, उच्च पैदावार, हरा फल	287	4.80	केरल	केरल कृषि विश्वविद्यालय, केरल
गौतमी गंगा	बौनी, हरा फल	467	1.80	आँध्र प्रदेश	एआईसीआरपी ऑन पाम्स, अंबाजीपेटा, आँध्र प्रदेश
कल्पश्री	बौनी, हरा फल	240	1.51	केरल	आईसीएआर- सीपीसीआरआई, कासरगोड
सीएआरआई -सी1 (अन्नपूर्णा)	बौनी, खोपरा की उच्च मात्रा, हरा फल	470	2.23	अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह	आईसीएआर- केन्द्रीय द्वीपसमूह कृषि अनुसंधान संस्था, पोर्ट ब्लेयर

संकर किस्म

किस्म	मातृ-पितृ ताड़ों का स्त्रोत	प्रमुख गुण	डाब पानी की मात्रा (मि.ली. प्रति फल)	खोपरा की मात्रा (प्रति वर्ष प्रति हेक्टर टन में)	खेती के लिए अनुशंसित क्षेत्र	जारी एजेंसी
चंद्र संकरा	सीओडी x डब्ल्यूसीटी	उच्च पैदावार	347	4.27	केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु	आईसीएआर- सीपीसीआरआई, कासरगोड
चंद्र लक्षा	एलसीटी x सीओडी	उच्च पैदावार, नमी की कमी सहनशील	339	3.76	केरल, कर्नाटक	आईसीएआर- सीपीसीआरआई, कासरगोड
कल्प समृद्धि	एमवाईडी x डब्ल्यूसीटी	नमी की कमी सहनशील, बेहतरीन पौष्टिक तत्व उपयोगी क्षमता	346	4.5	केरल, असम	आईसीएआर- सीपीसीआरआई, कासरगोड
कल्प श्रेष्ठा	एमवाईडी x टीपीटी	उच्च पैदावार	368	6.28	केरल, कर्नाटक	आईसीएआर- सीपीसीआरआई, कासरगोड

कल्प श्रेष्ठा

कल्प ज्योति

आईसीएआर-सीपीसीआरआई, आईसीएआर-सीआईएआरआई, विभिन्न राज्य कृषि विश्वविद्यालय, राज्य बागवानी विभाग और अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना के केन्द्रों के साथ साथ नारियल विकास बोर्ड के प्रबीउ फार्म किसानों, गैर सरकारी संगठनों, विकासात्मक एजेंसियों और अनुसंधान संगठनों को उन्नत किस्मों/संकरों के बीजफल/नारियल पौधों की आपूर्ति कर रहे हैं ताकि ये उच्च उत्पादकता और अधिकाधिक आमदनी हासिल कर सके। उन्नत किस्मों की आपूर्ति को बढ़ावा देने और नारियल किसानों को उच्च उत्पादकता एवं बेहतर आय सुनिश्चित कराने के लिए किसानों/किसानों के संगठनों और विकासात्मक एजेंसियों को बीज बाग स्थापित करने के लिए भी प्रोत्साहन दिया जाता है।

डाब और सजावटी प्रयोजनों वाली उन्नत बौनी किस्में

किस्म	प्रमुख गुण	डाब पानी की मात्रा (मि.ली. प्रति फल)	खोपरा की मात्रा (प्रति वर्ष प्रति हेक्टर टन में)	खेती के लिए अनुशंसित राज्य/क्षेत्र	जारी एजेंसी
चावक्काट नारंगी बौनी	संतरे रंग के फल, एरियोफिड माइट से नुक्सान कम	351	2.78	सभी नारियल उत्पादक क्षेत्र	आई सी ए आर-सी पी सी आर आई, कासरगोड
कल्प ज्योति	पीला फल, पानी की कमी का अपेक्षाकृत सहनशील	380	2.83	केरल, कर्नाटक, असम	आई सी ए आर-सी पी सी आर आई कासरगोड
कल्प सूर्या	संतरे रंग का फल	400	4.00	केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु	आई सी ए आर-सी पी सी आर आई, कासरगोड
सीएआरआई सी-2(सूर्या)	सजावटी, संतरे रंग का फल	154	1.31	अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह	आई सी ए आर-सी आई ए आर आई, पोर्ट ब्लेयर
सीएआरआई सी-3(ओमकार)	सजावटी, पीले रंग का फल	117	1.45	अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह	आई सी ए आर-सी आई ए आर आई, पोर्ट ब्लेयर
सीएआरआई सी-4(चंदन)	सजावटी, संतरे रंग का फल	198	1.74	अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह	आई सी ए आर-सी आई ए आर आई, पोर्ट ब्लेयर

नारियल का बाज़ार भाव कम होने पर आय में जो कमी होती है उससे निपटने और ताज़गी भरे स्वास्थ्य पेय के रूप में डाब पानी की बढ़ती लोकप्रियता का फायदा उठाने के लिए मात्र डाब के लिए और दोनों प्रयोजनों वाली किस्में लगाकर नारियल बाग स्थापित करने की सलाह दी जाती है ताकि डाब पानी की घरेलू माँग के साथ साथ उत्पाद विविधीकरण को भी बढ़ावा दिया जा सके। इससे बाज़ार में खोपरे की अधिकता के कारण नारियल के भाव में होने वाली गिरावट से नारियल किसानों को बचाया जा सकता है। यही नहीं, डाब की तुड़ाई 6-8 महीनों में की जाती है जिससे खोपरे के उत्पादन हेतु फल विकास के लिए अधिक लगने वाले 4-6 महीने की पौष्टिक अपेक्षाओं की बचत होती है जो बेहतर तरीके से फल लगने में सहायक होता है और साथ साथ आने वाले पुष्पक्रमों के विकास में भी मदद करता है। इसके फलस्वरूप प्रति ताड़ मिलने वाली पैदावार में भी वृद्धि होती है। तमिलनाडु के पोल्लाची और कोयंबत्तूर जिलों में डाब की स्थानीय माँग की आपूर्ति करने और निर्यात बाज़ार के अवसरों का फायदा उठाने के लिए किसानों ने खेतीगत ज़मीन के अधिकांश क्षेत्र में डाब की विभिन्न किस्में लगाई हैं। अब केरल, कर्नाटक, आँध्र प्रदेश, महाराष्ट्र और पश्चिम बंगाल आदि राज्यों में भी यही रुख चलने लगा है। अतः नारियल किसानों को बौनी सहित डाब की उन्नत किस्मों, दोनों प्रयोजनों वाली किस्मों और संकर किस्मों का रोपण करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। सिंचित और बेहतर प्रबंधन वाली परिस्थितियों में किसानों को लंबी किस्मों की तुलना में संकर किस्मों से अधिक आय प्राप्त हो सकती है। नए बाग स्थापित करने के लिए ही नहीं बल्कि जीर्ण ताड़ वाले बागानों में पुनर्रोपण और पुनरुज्जीवन करने के लिए भी इन उन्नत किस्मों की सिफारिश की जाती है। इससे नारियल खेती से प्राप्त पूरी आमदनी बढ़ाने और देश में नारियल खेती को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी।

Statement of ownership and other particulars about the BHARATIYA NARIYAL PATRIKA

FORM IV
(See Rule 8)

1.	Place of Publication	:	Kochi - 11
2.	Periodicity of Publication	:	Quarterly
3.	Printer's Name	:	Mini Mathew
	Nationality	:	Indian
	Address	:	Publicity Officer Coconut Development Board, Kochi - 11, Kerala.
4.	Publisher's Name	:	Mini Mathew
	Nationality	:	Indian
	Address	:	Publicity Officer Coconut Development Board, Kochi - 11, Kerala
5.	Editor's Name	:	Beena S.
	Nationality	:	Indian
	Address	:	Assistant Director (OL) Coconut Development Board, Kochi - 11, Kerala
6.	Names and address of individuals who own the newpaper and partners or shareholders holding more than one percent of the total capital	:	The periodical is owned by the Coconut Development Board which is a body corporate set up by the Government of India under the Coconut Development Board Act, 1979.

I, Mini Mathew, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-

Date : 15-3-2018

(Mini Mathew)
Publisher

रेगिस्तान में भी नारियल की खेती

नाविबो न्यूज़ ब्यूरो, कोची

विश्व के नारियल उत्पादक देशों में भारत का स्थान अद्वितीय है और यहाँ के किसान अपनी आजीविका चलाने और अधिक आय कमाने के उद्देश्य से राजस्थान के रेगिस्तानी इलाकों और बंजर ज़मीन में भी नारियल की खेती सफलतापूर्वक कर रहे हैं।

राजस्थान में जालोर जिले का एक देहाती गांव कुअर्दा के किसान राजपुरोहित की कृषि भूमि का नज़ारा ही कुछ अलग है। उस इलाके में रहने वाले किसानों के लिए उनका खेत एक प्रेरणा स्रोत रहा है। उनकी कृषि भूमि अब एक पर्यटन केन्द्र बन चुका है। नरपत सिंह राजपुरोहित के अनुसार राजस्थान के सुदूर इलाकों से भी लोग इनकी कृषि भूमि देखने रोज आया करते हैं। राजपुरोहित के दो हेक्टर ज़मीन में पर्यटकों की भीड़ उमड़ रही है। इसका कारण वहाँ के 750 हरे भरे नारियल पेड़ है। सैर करने के लिए वहाँ आ रहे पर्यटकों की राय में यह नज़ारा ही निराला है। रेगिस्तान राज्य राजस्थान में नारियल की खेती करके कोई आजीविका चलाएं तो यह मामूली बात नहीं है। राजस्थान में नारियल का पेड़ अनोखा ही है।

राजस्थान वासी राजपुरोहित और उनका परिवार सालों से महाराष्ट्र के सावंतवाड़ी में अतिथि गृह चला रहे हैं। कोंकण क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले इस प्रान्त में बिताए 58 साल की ज़िंदगी ने उनके मन में नारियल की खेती करने की ख्वाहिश जगा दी। इस ख्वाहिश को पूरा करने के लक्ष्य से ही उन्होंने विपरीत जलवायु परिस्थितियों में भी अपने पुशतैनी गाँव में नारियल खेती करने की हिम्मत की थी।

उनके अनुसार-"मैं ने सबसे पहले अपनी कृषि भूमि की मिट्टी की जाँच करवाई। उसके आधार पर मिट्टी के लिए आवश्यक खाद आदि मिलाकर नारियल खेती के लिए ज़मीन को तैयार किया। बाद में वर्ष 2008 में केरल के तिरुवनंतपुरम से नारियल के पौधे लाकर उसका रोपण किया। केरल के कुछ लोगें ने भी मेरी मदद की थी। नारियल क्षेत्र के विशेषज्ञों की सलाह की यथाविधि अनुपालन करते हुए मैंने अपने नारियल पौधों की देखभाल की। सिंचाई के लिए ड्रिप सिंचाई प्रणाली लगाई। इसके बावजूद भी नौ साल लगे नारियल पेड़ पर फल लगने के लिए।"

अब राजपुरोहित के नारियल बाग से प्रति नारियल 22 रुपए की दर पर नारियल खरीदे जाते हैं। वे नारियल की खेती में इतने कामयाब हुए हैं कि प्रति वर्ष नारियल से 2 लाख रुपए की आय मिलने की उम्मीद है।

महाराष्ट्र में रायगढ़ जिले के चौल गाँव के निवासी रवीन्द्र पटेल सहित कई किसान नारियल की खेती से आय कमा रहे हैं। खाद की फैक्टरी में केमिस्ट की हैसियत से काम कर रहे रवीन्द्र पटेल अपने नारियल पेड़ों से प्राप्त डाब की बिक्री से प्रति वर्ष एक लाख रुपए से अधिक आय कमा रहे हैं। उन्होंने अपने तीन एकड़ के नारियल बाग में 187 नारियल पेड़ लगाए हैं।

पिछले साल पटेल ने अपने पड़ोस के 35 युवकों को नारियल पेड़ पर चढ़ने और नारियल की तुड़ाई करने का प्रशिक्षण दिया। प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद ये युवक भी अच्छी खासी कमाई कर रहे हैं।

जनार्दन ज्ञानदेव तुपे जो परंपरागत तौर पर नारियल की खेती कर रहे हैं, अहमद नगर जिले के चन्दा गाँव के निवासी हैं। वे अपने छह एकड़ ज़मीन में ईख, सीताफल जैसी फसलों के साथ 450 नारियल पेड़ भी पाल रहे हैं। सिंचाई के लिए उन्होंने ड्रिप सिंचाई प्रणाली अपनाई है। प्रति डाब 15 रुपए की दर पर वे 150 डाब की बिक्री रोज़ करते हैं। आसपास के डाब व्यापारी इनसे डाब खरीदते हैं। उनका दावा है कि नारियल की खेती आय कमाने का बेहतरीन ज़रिया है। लेकिन धीरज से काम करना ज़रूरी है। क्योंकि नारियल पेड़ पर फल लगने में आठ से 10 साल तक लग जाता है।

किसान प्रशिक्षण केन्द्र और क्षेत्रीय कार्यालय भवन के लोकार्पण के दौरान माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री का भाषण

केन्द्र सरकार के अधीन नारियल विकास बोर्ड के किसान प्रशिक्षण केन्द्र एवं क्षेत्रीय कार्यालय भवन के लोकार्पण के इस सुअवसर पर आप सबको हार्दिक शुभकामनाएं।

कल्प वृक्ष नारियल पेड़ मानव के स्वस्थ एवं समृद्ध जीवन के लिए प्रकृति का अमूल्य वरदान है। हमारे देश में नारियल की खेती हज़ारों वर्षों से होती आ रही है। नारियल हमारी संस्कृति और परंपरा, धार्मिक एवं सामाजिक अनुष्ठानों, लोक गीत, खान-पान आदि का अभिन्न अंग रहा है। लोक साहित्य में जिससे पोषण मिलता है वह नारियल है, वह दाय है और वह विरासत है। यह वृक्ष मनुष्य का सच्चा मित्र है और राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है।

केन्द्र सरकार बिहार में नारियल की खेती और इससे जुड़ी गतिविधियों को आगे बढ़ाने के लिए कटिबद्ध है। भारत सरकार ने देश में नारियल खेती एवं उद्योग के समन्वित विकास के लिए 12 जनवरी, 1981 को नारियल विकास बोर्ड की स्थापना की। बोर्ड के चार क्षेत्रीय कार्यालय कर्नाटक के बेंगलूरु, तमिलनाडु के चेन्नै, असम के गुवाहटी एवं बिहार के पटना में हैं। 1985-86 में नारियल विकास बोर्ड के क्षेत्रीय कार्यालय का पटना, बिहार में कार्यारंभ हुआ। वर्ष 2003 में बिहार सरकार ने जगदेव पथ, पटना में राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा की एक हेक्टर ज़मीन का आबंटन नारियल विकास बोर्ड को औपचारिक पत्र द्वारा किया। वर्ष 2005 में संपन्न बोर्ड की 85वीं बैठक में डा.के.एल.चद्दा की अध्यक्षता में क्षेत्रीय कार्यालय, पटना के पुनः संगठन पर अध्ययन करके रिपोर्ट देने हेतु एक समिति गठित करने का निर्णय लिया। समिति की सिफारिश तथा उसके पश्चात प्राप्त मंत्रालय के अनुमोदन के आधार पर वर्ष 2009 में नारियल विकास बोर्ड का क्षेत्रीय कार्यालय पटना, बिहार से गुवाहटी, असम में अंतरित कर दिया गया।

भारत सरकार के कृषि मंत्रालय के कृषि एवं सहकारिता विभाग द्वारा गठित केन्द्रीय टीम ने बोर्ड के क्षेत्रीय कार्यालयों की वर्तमान स्थापना को बरकरार रखते हुए राज्य केन्द्र, पटना के स्थान पर पटना में बोर्ड का नया एवं चौथा क्षेत्रीय कार्यालय स्थापित करने का प्रस्ताव किया। नारियल विकास बोर्ड ने दिनांक 10.01.2015 को संपन्न 120वीं बोर्ड बैठक में इस प्रस्ताव के साथ सहमति व्यक्त की। बोर्ड की 120वीं बैठक में बोर्ड ने बिहार, झारखंड तथा छत्तीसगढ़ की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नारियल विकास बोर्ड के क्षेत्रीय कार्यालय के पुनःस्थापन करने की डा.एस.के.मल्होत्रा, तत्कालीन बागवानी आयुक्त की अध्यक्षता में गठित समिति की सिफारिशों का अनुमोदन किया। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, दिल्ली के आदेश दिनांक 04.05.2016 के अनुसार नारियल विकास बोर्ड के क्षेत्रीय कार्यालय का पटना, बिहार में कार्यारंभ हुआ।

बोर्ड की 127वीं बैठक में ज़मीन का मूल दस्तावेज़ प्राप्त करने के बाद नेशनल प्रोजेक्ट्स कन्स्ट्रक्शन कोर्पोरेशन लिमिटेड(एनपीसीसी), पटना के ज़रिए किसान प्रशिक्षण केन्द्र-सह-क्षेत्रीय कार्यालय, पटना के निर्माण कार्य एवं मौजूदा चारदिवारी की मरम्मत के लिए 3,46,19,006 रुपए मंजूर किया गया। 2.60 करोड़ रुपए की राशि नेशनल प्रोजेक्ट्स कन्स्ट्रक्शन कोर्पोरेशन लिमिटेड(एनपीसीसी), पटना को निर्माण कार्य करने के लिए अंतरित की गई। 12 जनवरी 2017 को पटना, बिहार में नारियल विकास बोर्ड का किसान प्रशिक्षण केन्द्र तथा क्षेत्रीय कार्यालय भवन की आधार शिला का अनावरण किया गया और ठीक एक साल बाद हम यहाँ कार्यालय भवन का लोकार्पण कर रहे हैं।

पटना में नारियल विकास बोर्ड का कार्यालय और मधेपुरा जिले के सिंहेश्वर में प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म की स्थापना के साथ 1987 में नारियल खेती में गति आई थी। बिहार राज्य में 14900 हेक्टर में नारियल की खेती होती है और नारियल का उत्पादन 14.14 करोड़ है। उत्तर बिहार का कोसी क्षेत्र याने कोसी नदी के दोनों तरफ के इलाके नारियल की खेती के लिए उपयुक्त है। बिहार में तकरीबन 50000 हेक्टर क्षेत्र में सिंचाई करके नारियल की खेती की जा सकती है।

विश्व में नारियल उत्पादन और उत्पादकता में भारत अग्रणी देश है। हमारा वार्षिक नारियल उत्पादन वर्ष 2016-17 में 20.82 लाख हेक्टर से 2395 करोड़ नारियल है और उत्पादकता प्रति हेक्टर 11505 नारियल है जो वर्ष 2014-15 में 19.76 लाख हेक्टर से 2044 करोड़ नारियल एवं उत्पादकता प्रति हेक्टर 10345 नारियल था और वर्ष 2015-16 में 20.88 लाख हेक्टर से 2217 करोड़ नारियल एवं उत्पादकता प्रति हेक्टर 10614 नारियल था। देश के सकल घरेलू उत्पाद में नारियल का योगदान करीब 27900 करोड़ रुपए है। हमारे देश से वर्ष 2014-15 के 1312 करोड़ रुपए एवं वर्ष 2015-16 के 1450 करोड़ रुपए से बढ़कर वर्ष 2016-17 में 2084 करोड़ रुपए मूल्य के नारियल उत्पादों का निर्यात किया गया है। वर्ष 2016 में हम ने मलेशिया, इंडोनेशिया और श्रीलंका जैसे देशों को नारियल तेल का निर्यात शुरू किया है जहाँ से हम पहले नारियल तेल का आयात करते थे। पहली बार भारत से यूएस और यूरोप में बड़ी मात्रा में डेसिकेटड नारियल का निर्यात भी शुरू किया है। हमारे देश में एक करोड़ से अधिक लोग अपनी जीविका चलाने के लिए इस फसल पर निर्भर करते हैं। नारियल विकास बोर्ड का लक्ष्य है कि नारियल किसानों को नारियल के उत्पादन, प्रसंस्करण, विपणन और नारियल एवं मूल्य वर्धित उत्पादों के निर्यात में सहायता देकर भारत को नारियल के उत्पादन, उत्पादकता, प्रसंस्करण एवं निर्यात में अग्रणी बनाना।

बिहार नारियल की खेती के गैर पारंपरिक क्षेत्र में आता है और राज्य में नारियल क्षेत्र के विकास पर बोर्ड विशेष ध्यान देता है। बिहार में धार्मिक प्रयोजन के लिए एवं खाने के लिए नारियल की बड़ी माँग होती है। इसलिए बिहार में वास भूमि में भी अच्छी तरह देखभाल करके नारियल की खेती की जा सकती है। बिहार में बोर्ड की प्रमुख योजनाएं नारियल के उत्पादन, उत्पादकता, नारियल उत्पादों के प्रसंस्करण, मूल्यवर्धन, विपणन एवं निर्यात बढ़ाने में ज़ोर दे रही हैं।

बिहार में नारियल से जुड़ी योजनाओं को लागू करने के लिए वर्ष 2014 से लेकर कुल 409.01 लाख रुपए नारियल विकास बोर्ड द्वारा मंजूर किए गए हैं। बिहार में नारियल की खेती के विस्तारण के लिए नारियल के अधीन क्षेत्र विस्तार योजना के लिए प्राथमिकता दे रहे हैं। इस योजना के अधीन नारियल के नए रोपण के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। वर्ष 2014 से लेकर 141.26 हेक्टर क्षेत्र में नारियल की खेती का फैलाव किया गया है। नारियल खेती के वैज्ञानिक तरीकों का निदर्शन करने के लिए निदर्शन प्लोटों की स्थापना योजना के लिए वर्ष 2017-18 के दौरान 46.25 लाख रुपए आबंटित किए गए हैं।

ग्रामीण इलाकों में कौशल विकास एवं संभाव्य रोज़गार सृजन के लिए बोर्ड फ्रेंड्स ऑफ कोकनट ट्री योजना का कार्यान्वयन कर रहा है। प्रशिक्षित युवक पर्याप्त रूप से उच्च आय कमा सकते हैं और इससे उनके जीवन स्तर में सुधार आ जाता है। वर्ष 2014 से लेकर बिहार में कुल 8 बैचों में 159 लोगों ने एफ ओ सी टी प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

सिंहेश्वर के मधेपुरा में बोर्ड का प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म कार्यरत है। यहाँ एकीकृत कीट, रोग एवं पोषण प्रबंधन, अंतरा खेती और एकीकृत खेती आदि वैज्ञानिक नारियल खेती प्रणालियों में किसानों को मार्गदर्शन मिल जाएगा। इस फार्म में बिहार की कृषि जलवायु परिस्थितियों के लिए उपयुक्त गुणवत्तायुक्त नारियल पौधों का उत्पादन किया जाता है। पिछले तीन वर्षों के दौरान विभिन्न किस्मों के कुल 162704 नारियल पौधों का उत्पादन करके किसानों को वितरित किए गए। बिहार राज्य में जनजातीय किसानों को 25000 नारियल पौधे मुफ्त वितरित किए गए हैं। बोर्ड के इन सभी प्रयासों से बिहार राज्य में नारियल खेती एवं उद्योग को अवश्य बढ़ावा मिल जाएगा।

अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि किसान प्रशिक्षण केन्द्र एवं क्षेत्रीय कार्यालय भवन का आज लोकार्पण हो रहा है। मुझे यकीन है कि इससे बिहार के किसानों को कौशल विकास के अवसर सुनिश्चित हो जाएंगे और नारियल की वैज्ञानिक खेती अपनाने में भरपूर सहायता मिल जाएगी। यही नहीं, बोरोज़गार युवकों एवं महिलाओं के आगे नारियल उद्योग में रोजगार के अवसर खुल जाएंगे। यह केन्द्र, राज्य में नारियल की खेती और उद्योग को मज़बूत बनाने में मदद देंगे।

मैं किसानों, उद्यमियों, सरकारी अधिकारियों और नीति निर्माताओं से आह्वान करता हूँ कि बिहार में नारियल क्षेत्र में उपलब्ध संभावी अवसरों का भरपूर लाभ उठाएं। मैं आशा करता हूँ कि यह क्षेत्रीय कार्यालय अपने प्रयासों द्वारा बिहार के नारियल किसानों एवं उद्यमियों की उम्मीदों को पूरा करने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। मेरी उम्मीद है कि नारियल किसानों को सहारा देने के लिए आप जो प्रयास करते आ रहे हैं, उनके फलस्वरूप बिहार राज्य में नारियल के स्वर्णिम युग की शुरुआत अवश्य होगी।

नारियल विकास बोर्ड के किसान प्रशिक्षण केन्द्र और क्षेत्रीय कार्यालय भवन का लोकार्पण संपन्न

श्री राधा मोहन सिंह, माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार किसान प्रशिक्षण केन्द्र और क्षेत्रीय कार्यालय भवन का लोकार्पण करते हुए

नारियल विकास बोर्ड के किसान प्रशिक्षण केन्द्र सह क्षेत्रीय कार्यालय भवन का लोकार्पण समारोह और राज्य स्तरीय संगोष्ठी 27 जनवरी 2018 को पटना के जगदेवपथ के नए कार्यालय भवन परिसर में संपन्न हुई। क्षेत्रीय कार्यालय, पटना द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में श्री राधा मोहन सिंह, माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार मुख्य अतिथि रहे। माननीय केन्द्रीय कृषि मंत्री जी के कर कमलों द्वारा किसान प्रशिक्षण केन्द्र सह क्षेत्रीय कार्यालय भवन का लोकार्पण डा. प्रेम कुमार, माननीय कृषि मंत्री, बिहार; डा.बी.एन.एस.मूर्ति, अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड; डा. संजीव कुमार चौरसिया, विधायक, दीघा; नारियल विकास बोर्ड के सदस्य, विभिन्न केन्द्र सरकारी कार्यालयों के अध्यक्षों, बिहार सरकार के बागवानी अधिकारियों, बिहार राज्य के विभिन्न प्रान्तों के किसानों एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों की समुपस्थिति में संपन्न हुआ। नाविबो अध्यक्ष

माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री जी के करकमलों से फलक का अनावरण

उद्घाटन कार्यक्रम की झलक

डा.बी.एन.एस.मूर्ति ने स्वागत भाषण दिया। तत्पश्चात् माननीय केन्द्रीय कृषि मंत्री जी ने उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों की समुपस्थिति में परंपरागत दीप प्रज्ज्वलित करके राज्य स्तरीय संगोष्ठी का भी उद्घाटन किया।

माननीय केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री राधा मोहन सिंह जी ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि पटना में स्थापित यह किसान प्रशिक्षण केन्द्र सह क्षेत्रीय कार्यालय बिहार के किसानों एवं उद्यमियों के उम्मीदों को पूरा करने में कोई कसर नहीं

किसान प्रशिक्षण केन्द्र और क्षेत्रीय कार्यालय भवन

छोडेंगे। बिहार में नारियल खेती के लिए 50000 हेक्टर भूमि उपलब्ध है। किसान प्रशिक्षण केन्द्र सह क्षेत्रीय कार्यालय भवन का निर्माण सात महीनों के अंदर पूरा हुआ था जो कि न्यूनतम समय में निर्माण की मिसाल है।

उन्होंने कहा कि नारियल विकास बोर्ड की प्रमुख योजनाओं में नारियल उत्पादन, उत्पादकता, नारियल उत्पादों का प्रसंस्करण, मूल्यवर्धन, विपणन और निर्यात संवर्धन पर ज़ोर दिया जाता है। भारत वैश्विक नारियल उत्पादन और उत्पादकता में अग्रणी देश है। देश का नारियल उत्पादन 20.82 लाख हेक्टर से 2395 करोड नारियल है और उत्पादकता प्रति हेक्टर 11505 नारियल है। देश की सकल घरेलू उत्पाद(जीडीपी) में नारियल लगभग 27900 करोड़ रुपए का योगदान देता है। वर्ष 2016-17 के दौरान भारत से 2084 करोड़ रुपए मूल्य के नारियल उत्पादों का निर्यात किया गया। भारत में एक करोड़ से अधिक लोग अपनी जीविका चलाने के लिए नारियल खेती पर निर्भर करते हैं। नारियल विकास बोर्ड का लक्ष्य नारियल उत्पादन, प्रसंस्करण, विपणन और नारियल के मूल्यवर्धित उत्पादों का निर्यात करने में नारियल किसानों को सहायता देते हुए भारत को नारियल उत्पादन, उत्पादकता, प्रसंस्करण और निर्यात में विश्व का अग्रणी देश बनाना है।

मंत्रीजी ने बताया कि देश में नारियल के निर्यात में महत्वपूर्ण वृद्धि हासिल हुई है। नारियल उत्पादों का निर्यात मूल्य वर्ष 2011-14 के 3017.30 करोड़ रुपए से बढ़कर 2015-17 में 4846.36 करोड़ रुपए हो गया है, याने निर्यात के क्षेत्र में 60.62 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जो कि एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। वर्ष 2016 में हम ने मलेशिया, इंडोनेशिया और श्रीलंका जैसे देशों को नारियल तेल का निर्यात शुरू किया है जहाँ से हम पहले नारियल तेल का आयात करते थे। पहली बार भारत से यूएस और यूरोप में बड़ी मात्रा में डेसिकेटड नारियल का निर्यात भी शुरू किया है।

उन्होंने आगे कहा कि बिहार में नारियल की खेती समुचित प्रबंधन के साथ वासभूमि खेती के रूप में भी की जा सकती है। वर्तमान में 14,900 हेक्टर में नारियल की खेती हो रही है। बोर्ड के प्राक्कलन के अनुसार सिंचाई करके 50000 हेक्टर क्षेत्र में नारियल की खेती बढ़ायी जा सकती है। किसान प्रशिक्षण केन्द्र में प्रशिक्षित किसान नारियल खेती करने पर विचार कर सकते हैं। यही नहीं नारियल उत्पादन में बढ़ोत्तरी के साथ साथ रोज़गार सृजन में भी वृद्धि होगी। नारियल चिप्स, नारियल दूध, नारियल शक्कर, नारियल पानी, डाब पानी, नारियल शहद, नारियल गुड़, नारियल दूध शेक, नारियल स्नैक्स, विर्जिन नारियल तेल, नारियल नेचुरल क्रीम, नीरा कुकीज़ जैसे नारियल आधारित उत्पादों के उत्पादन के ज़रिए कई अधिक लोगों को रोज़गार प्राप्त हो सकते हैं।

अपना भाषण समाप्त करते हुए मंत्रीजी ने कहा कि नाविबो ने वर्ष 2014 से 2017 के दौरान बिहार में नारियल संबंधी योजनाओं के कार्यान्वयन हेतु 409.01 लाख रुपए की मंजूरी दी थी। बिहार में नारियल खेती के अधीन क्षेत्र में वृद्धि लाने के लिए नारियल के अधीन क्षेत्र विस्तार योजना पर ध्यान केन्द्रित किया जा रहा है और नए बागानों के लिए

योजना के अंतर्गत वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। वैज्ञानिक नारियल खेती के निदर्शन हेतु वर्ष 2017-18 की अवधि के लिए निदर्शन प्लोटों की स्थापना योजना के अंतर्गत 46.25 लाख रुपए आबंटित किए गए हैं।

बिहार के माननीय कृषि मंत्री डा.प्रेम कुमार ने अपने अध्यक्षीय भाषण में बिहार में नारियल खेती की अहमियत पर जोर देते हुए कहा कि बिहार राज्य नारियल की खेती में अग्रसर होंगे। डा.संजीव कुमार चौरसिया, विधायक, दीघा ने अपने भाषण में किसानों को आह्वान किया कि वे नारियल की खेती में आगे बढ़ें और राज्य में नारियल किसानों के कल्याण के लिए नाविबो द्वारा कार्यान्वित की जा रही योजनाओं का लाभ उठाएं। श्री सरदिंदु दास, मुख्य नारियल विकास अधिकारी, नाविबो के धन्यवाद ज्ञापन के साथ उद्घाटन सत्र संपन्न हुआ।

उद्घाटन सत्र के बाद संपन्न तकनीकी सत्र में बिहार के माननीय कृषि मंत्री डा.प्रेम कुमार ने अध्यक्षता की। श्री खोकन देबनाथ, उप निदेशक, नाविबो, राज्य केंद्र, कोलकाता ने नारियल खेती और नाविबो योजनाओं पर व्याख्यान दिया। बिहार के विविध जिलों से आए किसानों के साथ विचार-विनिमय के सत्र में वैज्ञानिक नारियल खेती के संबंध में किसानों की शंकाओं का समाधान भी किया गया।

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना ने इस अवसर पर नारियल चिप्स, नारियल दूध, नारियल शक्कर, नारियल नीरा, डाब, नारियल शहद, नारियल गुड़, नारियल दूध शेक, नारियल स्नैक्स, विर्जिन नारियल तेल, नारियल नैचुरल हेयर क्रीम, डेसिकेटड नारियल पाउडर, नीरा कुकीज़ जैसे नारियल आधारित उत्पाद और दस्तकारी सामग्रियाँ प्रदर्शित कीं। बोर्ड के सदस्यों, पदधारियों और देशभर के तकरीबन 500 किसानों ने कार्यक्रम में भाग लिया। श्री राजीव भूषण प्रसाद, निदेशक, नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना के धन्यवाद ज्ञापन के साथ तकनीकी सत्र संपन्न हुआ।

नारियल बागों में मासिक कार्य

अप्रैल से जून तक

अन्डमान व निकोबार द्वीप समूह

अप्रैल

नर्सरियों में पानी देना जारी रखें। यदि गर्मी चल रही है तो ताड़ों को सिंचित करें। जलनिकासी सुचारू बनाने के लिए बंधों और नालों की मरम्मत करें। बीजफलों को इकट्ठा करें। पौद तैयार करने के लिए नर्सरियाँ तैयार करें। नारियल पौध लगाने के लिए गड्ढ़े तैयार करें। नई रोपाई और प्रतिरोपाई हेतु दोनों तरफ 7.5 मीटर की दूरी पर बलुई और बलुई दुमट मिट्टी में 100 घन सें.मी. का और मटियारी मिट्टी में 60 घन सें.मी. का गड्ढ़ा खोदें। एकल कतार प्रणाली में 6मी. x 9मी. का और द्विकतार प्रणाली में 6मी. x 6मी.x 9मी. की दूरी छोड़ दें। उत्तर दक्षिण दिशा में कतारों की तैयारी करें। जल जमाव वाले क्षेत्रों में मटियारी और रेतीली मिट्टी बारी बारी से डालकर टीला बनाकर प्रतिरोपण किया जाए।

पानी बचाने के लिए चार नारियल पेड़ों के बीच एक के हिसाब से 4 मी.लंबी और 50 सें.मी. गहरी खाई खोदनी चाहिए। इसमें नारियल छिलके भरें। निचली परतों पर छिलकों का भीतरी भाग ऊपर की ओर करके और सबसे ऊपर के दो परतों में छिलकों का बाहरी भाग ऊपर की ओर करके रखने चाहिए। फफूँदजन्य रोगों के रोगरोधी उपाय के रूप में सभी नारियल पेड़ों पर एक प्रतिशत सांद्र बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करना चाहिए। जहाँ हर साल कलिका विगलन पाया जाता है ऐसे क्षेत्रों के सभी ताड़ों पर एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का रोगरोधी छिड़काव करें। बीच की खाली जगह पर सब्जियों और अंतर फसलों की खेती करें।

पहले ही बनाए गए गड्ढ़ों के आधे भाग तक लकड़ी की राख, रेत और ऊपरी मिट्टी के मिश्रण से भरें। उसके मध्य भाग में बनाए छिद्र में पौध लगाएं। बरसाती पानी का जमाव रोकने के लिए गड्ढ़े के चारों ओर बांध बनायें। गैंडा भृंग के प्रकोप को रोकने के लिए सभी फलदायी ताड़ों के शिखरों को साफ करें और सबसे ऊपर के 2-3 पर्ण कक्षों में 2 से 3 नैफ्थलीन गोलियाँ रखकर ऊपर रेत डालें।

मई

बारिश शुरू होने से पहले थाला खोलें। मिट्टी के कटाव की गुँजाइश वाली जगह में बाँध पक्का करें। बारिश शुरू होने से पहले ही थालों में 360 ग्राम यूरिया, 665 ग्राम सिंगल सूपर फोस्फेट, 665 ग्राम म्यूरिएट ऑफ पोटेश आदि डालें।

नर्सरी में बीजफल बोएं। दीमक के प्रकोप से बचने के लिए नर्सरी की क्यारियों में 20-25 दिनों के अंतराल में दो बार 0.05 प्रतिशत सांद्र क्लोरपाइरिफोस का प्रयोग करें।

जून

ताड़ के चारों ओर 2 मीटर की दूरी पर थाला बनाएं। प्रति ताड़ 25 से 50 कि.ग्रा. गोबर या कंपोस्ट और 10-20 कि.ग्रा. राख डाल दें और थालों को मिट्टी से ढक दें। नर्सरी से खरपतवार निकाल दें। ज्वार-भाटा के समय बाग में चढ़ने वाले पानी का उतरना सुगम बनाने के लिए नारियल पेड़ों के कतारों के बीच नाला खोलकर समंदर के पानी को बह जाने दें। नारियल पेड़ के नीचे भाग से 1.5 मीटर की दूरी में थाला बनाकर प्रति ताड़ 2 कि.ग्रा. की दर पर सेंधा नमक डालें। इसके साथ बड़ी मात्रा में सूखी जैव खाद भी मिलायी जा सकती है।

नारियल पौध लगाने के लिए गड्ढ़े तैयार करें। गड्ढ़ा एक मी. लंबा, चौड़ा और गहरा होना चाहिए। गड्ढ़े से ही निकाली गई मिट्टी से गड्ढ़े के चारों ओर ठोस बाँध

बनाएं ताकि बारिश का पानी बहकर उसमें न गिरें। गड्ढे के निचले भाग से 60 सें.मी. ऊँचाई तक ऊपरी मिट्टी, सूखा गोबर और राख मिलाकर भरें। इसके मध्य भाग पर बनाए गए छिद्र में पौध लगाएं। मिट्टी डालते समय बीजफल का ऊपरी भाग मिट्टी से ढकना नहीं चाहिए। पौध के चारों ओर की मिट्टी अच्छे से दबाकर जमाएं।

आंध्र प्रदेश

अप्रैल

नर्सरी क्यारियां तैयार करें। यदि दीमक का प्रकोप है तो बलुई मृदा में नर्सरी तैयार करें या नर्सरी क्यारियों में नदी की रेत की मोटी परत डालें या नर्सरी क्यारियों में 0.05 प्रतिशत क्लोरपाइरीफोस से 20 से 25 दिन के अंतराल में दो बार उपचार करें। क्यारियों में बीजफल बोएं। यदि नारियल छिलका उपलब्ध हैं तो ताड़ों की कतारों के बीच 3 मीटर की दूरी पर बनाई गई खाई में या तने से 2 मीटर की दूरी पर ताड़ों के चारों ओर बनाए गए थालों में गाड़ दें। छिलके का भीतरी भाग ऊपर की ओर करके परतों में छिलका गाड़ दें। छिलका गाड़ने से नमी बरकरार रहती है और पोषकतत्व खासतौर पर पोटैश की आपूर्ति होती है। छिलका गाड़ने का अनुकूल प्रभाव 5 से 7 साल तक मिलता रहेगा। वयस्क ताड़ों के थालों में उर्वरकों की पहली मात्रा यानी 400 ग्राम यूरिया, 700 ग्राम सिंगल सूपरफोस्फेट और 750 ग्राम म्यूरिएट ऑफ पोटैश आदि दें। प्रति ताड़ दो टोकरे भर हरी खाद का प्रयोग करें और इसे मृदा से ढक दें तथा सिंचाई करें। यदि गोबर उपलब्ध हो तो उपर्युक्त खादों के साथ 25 कि.ग्रा. गोबर का प्रयोग करें। उपलब्ध है तो एक चौथाई कार्टलोड टंकी गाद का प्रयोग करें। मुख्य खेतों में एक वर्ष की आयुवाले नारियल पौधों की रोपाई करें। यदि कृष्णशीर्ष इल्ली का प्रकोप पाया जाए तो कीट ग्रस्त पत्तों को काटकर जला दें ताकि कीटों का फैलाव रोका जा सके। कीट ग्रस्त ताड़ों पर 0.02 प्रतिशत डाइक्लोरवोस का छिड़काव करें।

कीटों की अवस्थानुसार वयस्क ताड़ों पर सक्षम विशेष परजीवियों को छोड़ दें। सभी अवस्था के कीटों की स्थिति में सभी परजीवियों को एक साथ छोड़ देना आवश्यक है। कीटनाशी से उपचार किया गया है तो इसके छिड़काव के तीन हफ्ते बाद ही परजीवियों को छोड़ दिया जाए।

यदि माइट का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खासतौर पर बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और कीट ग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा दें।

नारियल छिलकों से थालों में पलेवा लगाया जाता है

मई

बागों में नियमित रूप से सिंचाई करें। अगर आवश्यक है तो सिंचाई नालों को साफ करें। नारियल थालों में नारियल छिलका, कयर गूदा आदि से पलेवा करके मृदा की नमी संरक्षित रखने की कोशिश करें। चयनित मातृ ताड़ों से बीजफल इकट्ठा करें। बागों की जुताई करें और मृदा की उर्वरता बढ़ाने के लिए हरी खाद के बीजों की छिटका बोआई करें। मृदा की उर्वरता बढ़ाने के लिए बागों में तालाबों की गाद डाल दें। फलों का झड़ना रोकने के लिए झुके हुए गुच्छों को बाँध दें। यदि कृष्ण शीर्ष इल्ली का प्रकोप पाया जाए तो इससे प्रकोपित ताड़ों पर 0.02 प्रतिशत डाइक्लोरवोस से छिड़काव करें और छिड़काव के तीन हफ्ते बाद डिंभक या प्यूपा अवस्था के परजीवियों को छोड़ दें। यदि माइट का प्रकोप पाया गया है तो इसके नियंत्रणोपाय अपनाएं।

जून

यदि मई में उर्वरकों का प्रयोग नहीं किया गया है तो उर्वरकों का अभी प्रयोग करें। मुख्य खेत में पौदों का रोपण करें। गैंडा भृंग के रोगरोधी उपाय के रूप में साल में तीन बार सबसे अंदर के तीन पर्णकक्षों में 250 ग्राम चालमुगरा /नीम

खली चूर्ण के साथ उसी मात्रा में रेत मिलाकर भरें या नैफ्थलीन गोली (प्रति ताड़ 12 ग्राम) रखें और उसे मिट्टी से ढक दें। यदि माइट का प्रकोप पाया गया है तो इसके नियंत्रणोपाय अपनाएं।

असम

अप्रैल

मुख्य खेत में पौदों का रोपण जारी रखें। नवरोपित पौदों के गड्ढ़ों में जमा बरसाती पानी नियमित रूप से बाहर बहा दें। पेड़ों के शिखर की सफ़ाई करें और फलगुच्छों का झुकाव रोकने हेतु उन्हें बाँध लें या सहारा दें। रोगों से बचाने हेतु रोकथाम के उपाय अपनायें। अगर दीमक का प्रकोप पाया जाता है तो 0.05 प्रतिशत क्लोरपैरिफॉस से 20 से 25 दिनों के अंतर से दो बार नर्सरी क्यारियों एवं नवरोपित पौदों के थालों की मृदा को अच्छी तरह शराबोर करें। पत्ता सड़न रोग की रोकथाम हेतु सड़े हुए हिस्सों को काटकर निकालने के बाद तर्कु पत्ते के मूलभाग के चारों ओर प्रति ताड़ 300 मि.ली.पानी में 2 मि.ली. की दर पर कॉनटैफ 5 ईसी या 300 मि.ली.पानी में 3 ग्राम मैंकोज़ेब डाल दें।

मई

मुख्य खेतों में गुणवत्तापूर्ण पौदों की प्रतिरोपाई करें। यदि चाहिए तो सिंचाई जारी रखें। उर्वरकों की पहली मात्रा यानि 500 ग्राम यूरिया, 1000 ग्राम सिंगल सूपर फोसफेट (एसएसपी), 1000 ग्राम म्यूरिएट ऑफ पोटैश (एम ओ पी) और 25 ग्राम बोरैक्स इस अवधि के दौरान दें। यदि फलों का झड़ना और फलों का टूटना पाया जाए तो पोटैश की मात्रा बढ़ाएं। एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का रोगनिरोधी छिड़काव करें। यदि गैंडा भृंग के प्रकोप से बचने के लिए मार्च में कोई उपचार नहीं किया गया है तो पर्णकक्षों में 25 ग्राम सेविडोल (8जी) और 250 ग्राम महीन रेत के मिश्रण से भर दें।

जून

तना स्रवण रोगग्रस्त नारियल पेड़

प्रतिरोपित पौधों के गड्ढ़ों में बारिश का पानी जमने न दें। ताड़ के शिखरों को साफ करें। यदि तना स्रवण रोग पाया गया है तो (1) रोगग्रस्त ऊतकों को काटकर निकालके घाव पर 5 प्रतिशत कैलिक्सिन लगाएं। यह सूख जाने पर गरम कोलतार लगाएं (2) साल में चार बार प्रति ताड़ 100 मि.ली. पानी में 5 मि.ली.कैलिक्सिन घोलकर जड़ों द्वारा दें (3) मानसून के बाद जैव खादों के साथ प्रति वर्ष प्रति ताड़ 5 कि.ग्राम नीम खली डालें (4) बारिश के समय उचित जलनिकासी व्यवस्था करें और गर्मी के महीनों में ताड़ों की सिंचाई करें। यदि कली सड़न पाया जाता है तो, रोगग्रस्त ऊतकों को निकालकर साफ करें और रोगग्रस्त भागों पर बोर्डो पेस्ट लगाएं। उपचारित भाग को ढक दें ताकि बारिश के पानी में यह पेस्ट बह न जाए। निकटस्थ पौधों पर भी एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण से छिड़काव करें। जब मौसम ठीक रहता है तो पौधा संरक्षण उपाय अपनाएं। नर्सरी से खरपतवार निकाल दें।

बिहार/मध्य प्रदेश/छत्तीसगढ़

अप्रैल

सिंचाई की आवृत्ति बढ़ाएं। दीमक के प्रकोप/ फफूँद रोगों की तलाश करें और नियंत्रणोपाय अपनाएं। मखरली मिट्टी में 1.2 मी. x 1.2 मी. x1.2 मी. का तथा बलुई मिट्टी में 1 मी. x 1 मी. x1मी. आकार का गड्ढ़ा खोदकर पौधा लगाना शुरू करें।

मई

यदि आवश्यक हो तो सिंचाई के नालों को साफ करें और गर्मियों के महीनों में बागों में लगातार सिंचाई करते रहें। थाला सिंचाई करें तो मृदा की नमी धारण क्षमता के अनुसार 4-5 दिन में 200 लीटर पानी पर्याप्त है। 3 साल तक के छोटे ताड़ों को 3 दिन में कम से कम एक बार सिंचित करना चाहिए। छोटी पौदों को ठीक से छाया प्रदान करें। यदि पानी की कमी हो तो पानी बचाने के लिए ड्रिप सिंचाई प्रणाली अपनाएं। खेत की जुताई और निराई करें। थालों से खरपतवार निकाल दें। नारियल के चारों ओर थाला खोदें और नारियल पत्ते, कयर गूदा आदि से पलेवा करें। नारियल शिखरों को साफ करें और पौधा संरक्षण रासायनिकों का प्रयोग करें। यदि कलिका विगलन पाया जाए तो रोगग्रस्त ऊतकों को काटकर निकाल दें और बोर्डो पेस्ट लगाएं।

जून

उचित जल निकासी की व्यवस्था करें। गड्ढ़ों में अधिक समय तक बारिश का पानी जमने न दें। पहले से ही तैयार किए गए और आधे भरे गड्ढ़ों में गुणवत्तायुक्त पौदों का रोपण करें। दीमकों के प्रकोप से बचने के लिए पौदों के थालों में 20 से 25 दिनों के अंतराल में दो बार 0.05 प्रतिशत क्लोरपाइरिफोस से शराबोर करें। रोपण से पहले गड्ढ़ों में 2 कि.ग्राम अस्थिचूर्ण या सिंगल सूपरफोस्फेट डालें। ताड़ के चारों और 2 मीटर की दूरी पर 15-20 सें.मी.गहरे थाले बनाएं और खाद एवं उर्वरक डालकर मिट्टी से ढक दें। इस महीने के दौरान उर्वरकों का प्रयोग करने से पहले प्रति ताड़ 30-50 कि.ग्राम गोबर की खाद/कंपोस्ट थाले में डाल दें। सिंचित और अच्छी तरह अनुरक्षित बागों में उर्वरक जैसे 275 ग्राम यूरिया, 500 ग्राम सिंगल सूपर फोसफेट और 500 ग्राम म्यूरिएट ऑफ पोटैश डाल दें। बारानी खेती वाले बागों में उर्वरकों की पहली मात्रा (अनुशंसित मात्रा का एक तिहाई भाग) यानि प्रति वयस्क

ड्रिप सिंचाई

ताड़ 250 ग्राम यूरिया, 350 ग्राम सिंगल सूपरफोस्फेट और 400 ग्राम म्यूरिएट ऑफ पोटैश डाल दें और मिट्टी से ढक दें। पिछले वर्ष रोपित पौदों के मर जाने पर जो खाली जगह पड़ती है वहाँ पोलीबैग पौदों से रोपण करें। वैसे ही सभी दुर्बल और खराब पौदों को हटाकर अच्छी पौदों से पुनर्रोपण करें। कली सड़न की जाँच करें। यदि कली सड़न पाया जाता है तो रोगग्रस्त भागों को निकालकर वहाँ बोर्डो पेस्ट लगाएं। निकटस्थ ताड़ों/पौदों पर 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण से छिड़काव करें।

कर्नाटक

अप्रैल

मानसून शुरू होने से पहले बीजफल बोएं और यदि आवश्यक हो तो सिंचित करें। यदि शुष्क मौसम जारी हो तो पौधों की सिंचाई करें। नहरों को साफ करें और बाँधों की मरम्मत करें। यदि बारिश नहीं शुरू हुआ तो सिंचाई जारी रखें। पहले से ही तैयार किए गए गड्ढ़ों में लकड़ी का राख, गोबर और सतही मिट्टी के मिश्रण से भरने के बाद नया रोपण किया जा सकता है। उर्वरकों की पहली मात्रा के साथ प्रति ताड़ 50 कि.ग्रा. जैव खाद और 5 कि.ग्रा. नीम खली का प्रयोग करें। फफूँदजन्य रोगों के खिलाफ रोगरोधी उपाय के रूप में एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण या कोपर युक्त फफूँदनाशी का छिड़काव करें। यदि माइट का प्रकोप पाया जाता है तो, 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा(नीमाजाल टी/एस 1 प्रतिशत प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर) का छिड़काव करें। इसकी बूँदें दूसरे से पाँचवे महीने आयु के गुच्छों पर पड़नी चाहिए।

मई

सिंचाई और चयनित मातृ ताड़ों से बीजफल इकट्ठा करना जारी रखें। बीजफलों को बोने के लिए नर्सरी क्यारियाँ तैयार करना शुरू करें। नर्सरी ऐसी मृदा में होनी चाहिए जो अच्छी जल निकास वाली हल्की संरचना की हो और सिंचाई की भी सुविधा हो। ताड़ों की पौष्टिक स्थिति सुधारने के लिए पर्याप्त मात्रा में जैव खाद और रासायनिक उर्वरकों का संतुलित प्रयोग अनुशंसित है। जैव खाद (गोबर की खाद) 50 कि.ग्रा. और नीम खली 5 कि.ग्रा. प्रति ताड़ प्रति वर्ष की दर पर डाल दें। यदि तापमान अधिक है तो पत्ता भक्षक इल्लियों के प्रकोप पर भी ध्यान दें और यदि पहले नहीं किया गया तो उचित उपाय अपनाएं ।

यदि माइट का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खासतौर पर बुतामों के परिदलपुंज

नर्सरी में बोए गए बीजफल

भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा दें।

जून

ताड़ के चारों ओर नीचे भाग से 2 मीटर की दूरी में वृत्ताकार में थाला बनाएं। यदि गैंडा भृंग और लाल ताड़ घुन का प्रकोप पाया जाता है तो उचित नियंत्रण उपाय अपनाएं। बागों से खरपतवार निकाल दें। यदि पिछले महीने नहीं किया गया है तो 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण से रोगरोधी छिड़काव करें। इस महीने पौद की रोपाई की जा सकती है।

यदि माइट का प्रकोप पाया गया है तो उचित नियंत्रण उपाय अपनाएं।

केरल / लक्षद्वीप

अप्रैल

पेड़ के चारों ओर नीचे भाग से 2 मी. की दूरी पर थाला खोलें और अगर हरी खाद फसल मुख्य खेत में नहीं उगायी गयी है तो थाले में बोयें। मृदा में नमी संरक्षण के लिए छिलके गाड़ दें। पर्याप्त मात्रा में जैव खादों का तथा संतुलित मात्रा में अकार्बनिक उर्वरकों का प्रयोग करके ताड़ों का पोषण बढ़ाया जा सकता है। प्रति वर्ष प्रति पेड़ जैव खाद 50 कि.ग्रा. और नीम की खली 5 कि.ग्रा. दें।

पत्ता भक्षक इल्लियों की तलाश करें और इससे प्रकोपित पत्तों को काटकर जला दें। कीट ग्रस्त ताड़ों पर 0.02 प्रतिशत डाइक्लोर्वोस से छिड़काव करें। पुराने ताड़ों पर कीटों की अवस्था के अनुसार परजीवियों को छोड़ दें। जब विविध अवस्थाओं के कीट मौजूद हैं तो सभी अवस्थाओं के परजीवियों को एकसाथ छोड़ दें। यदि कीटनाशी का प्रयोग पहले से किया गया है तो परजीवियों को छिड़काव के तीन हफ्ते बाद ही छोड़ना चाहिए।

गैंडा भृंग एवं लाल ताड़ घुन के लिए पेड़ के शिखरों की जाँच करते रहें। गैंडा भृंग को अंकुश से बाहर निकाल कर मार डालें। लाल ताड़ घुन ग्रस्त पेड़ों को एक प्रतिशत कार्बरिल कीप द्वारा दें। कली सड़न रोग की जाँच करें। अगर रोग-प्रकोप पाया जाता है तो रोगग्रस्त ऊतकों को काटकर निकाल दें तथा बोर्डो पेस्ट से उपचार करें और रोगनिरोधी उपाय के रूप में आसपास के पेड़ों पर 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें।

गैंड़ा भृंग से प्रकोपित नारियल पेड़

यदि माइट का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खासतौर पर बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और कीट ग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा दें।

मई

यदि सिंचाई की सुविधा हो तो नारियल पौदों का रोपण करें। इससे मानसून शुरू होने से पहले ही जड़ें जम जाएंगी और बारिश का पूरा लाभ प्राप्त होगा। मानसून के जल जमाव को बरदाश्त करने में यह सहायक होगा। महीने के दौरान बीजफलों को एकत्रित करना जारी रखें। बलुई मिट्टी में स्थित ताड़ों को प्रति पेड़ आधा टन नदी की गाद या तालाब की गाद डाल दें। नारियल की नई रोपाई/पूरकरोपाई के लिए गड्ढ़े खोद लें। यदि माइट का प्रकोप पाया गया है तो उचित नियंत्रण उपाय अपनाएं।

जून

ताड़ के चारों ओर थाला बनाएं और यदि मई में नहीं किया गया है तो उसमें प्रति ताड़ 25 कि.ग्राम की दर पर हरी खाद या हरे पत्ते या प्रति वयस्क ताड़ 50 कि.ग्राम की दर पर गोबर, कंपोस्ट आदि जैसी जैव खाद डालें और भागिक रूप से थालों को ढक दें। पौद लगाए गए गड्ढ़ों को साफ करें। ताड़ के शिखरों पर गैंडा भृंग, लाल ताड़ घुन आदि की तलाश करें और कलिका विगलन रोग की भी जांच करें। पेड़ के शिखर को साफ करें। यदि माइट का प्रकोप पाया गया है तो उचित नियंत्रण उपाय अपनाएं।

महाराष्ट्र/गोवा/गुजरात

अप्रैल

ज़मीन की एक या दो बार जुताई करें और खरपतवार निकालें। जंगली सनई, ढैंचा, अगस्त या कलौंजी जैसी हरी खाद फसल का बीज प्रति हेक्टर 28 से 34 कि. ग्रा. की दर पर बोयें। उर्वरक यदि पहले नहीं डाला गया है तो अब डालें।

मई

निचले क्षेत्रों में जहाँ नारियल बंदों पर रोपित हैं, बंदों के बीच के नाले साफ करें और नालों से निकाली गई ऊपरी मृदा बंदों के पार्श्व में डाल कर उन्हें मज़बूत कर दें। बीजफलों को एकत्र करना जारी रखें और एकत्रित बीजफलों को छाया में रखें। पौदों की रोपाई हेतु गड्ढ़ा खोदें।

जून

ताड़ों के बीच के गड्ढ़ों में भीतरी भाग ऊपर की तरफ करके छिलका गाड़ दें। फफूंदजन्य रोगों से बचने के लिए 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण से रोगरोधी छिड़काव करें।

ओडिशा

अप्रैल

मखरली मिट्टी में 1.2 मी. x 1.2 मी. x 1.2 मी. का तथा बलुई दोमट मिट्टी में 1मी. x 1मी. x 1मी.आकार का गड्ढ़ा खोदकर मुख्य खेतों में पौधे लगाना शुरू करें। मुख्य खेत में पौदों की रोपाई शुरू करें। पेड़ों के चारों ओर थाला बनाएं। दक्षिण पश्चिम मानसून शुरू होते ही हरी खाद और गोबर डालें। पहले हरी खाद डालें और बाद में गोबर डालकर मिट्टी से ढक दें। उर्वरकों की पहली मात्रा यानि प्रति पेड़ 250 ग्रा. यूरिया, 500 ग्रा. सिंगल सूपर फॉसफेट एवं 500 ग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटैश डालें। उर्वरकों की उपर्युक्त मात्रा के एक चौथाई, आधा एवं तीन चौथाई भाग क्रमशः एक वर्ष, दो वर्ष एवं तीन वर्ष की आयुवाले पेड़ों को दें।

मई

सिंचाई जारी रखें। खरपतवार निकाल दें और थालों में सूखे नारियल पत्ते और कयर गूदे से पलेवा करें। थालों में छिलका गाड़ने का कार्य भी किया जाए। यदि रोग-कीटों का प्रकोप पाया जाए तो यांत्रिक, रासायनिक और जैविक प्रणालियों को मिलाकर एकीकृत कीट प्रबंधन प्रणाली अपनाएं। पत्ता भक्षक इल्लियों के प्रकोप से बचाने के लिए बुरी तरह से कीट ग्रस्त पत्तों को काटकर जला दें और निचले पत्तों के नीचे भाग पर 0.02 प्रतिशत डाइक्लोरवास का छिड़काव करें। ब्रैकोनिड जैसे परजीवियों को पेड़ों पर छोड़ दें। गैंडा भृंग के आक्रमण पर काबू पाने के लिए भृंग अंकुश से भृंगों को निकालकर मार दें। प्रति पेड़ 25 ग्राम सेविडोल (8जी) के साथ 250 ग्राम महीन रेत

पत्ता भक्षक इल्ली

मिश्रित करके सबसे भीतर के 2-3 पर्ण कक्षों में भर दें। खाद के गड्ढ़ों को 0.01 प्रतिशत कार्बरिल (50 प्रतिशत नम पाउडर) से उपचार करें। एरियोफिड माइट के प्रकोप से बचाने के लिए एज़ाडिरेक्टिन 10000 पीपीएम (7.5 मि.ली.) 7.5 मि.ली. पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा दें।

जून

गैंडा भृंग के प्रकोप से बचने के लिए कीटरोधी उपाय के रूप में साल में तीन बार सबसे ऊपर के तीन पर्णकक्षों में 250 ग्राम चालमुगरा/नीम खली चूर्ण में तुल्य मात्रा में रेत मिलाकर भर दें या नैफ्थलीन गोली (12 ग्राम/ताड़) रख दें और उसे मिट्टी से ढक दें। गैंड़ा भृंगों को हुक से निकाल दें। सब्जियों और अन्य फसलों को खाद दें। फफूंदजन्य रोगों से बचने के लिए 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण से रोगरोधी छिड़काव करें।

तमिलनाडु/पुदुच्चेरी

अप्रैल

नर्सरी में बीजफलों की बुवाई शुरू करें। बागों की सिंचाई जारी रखें। ड्रिप सिंचाई वाले बागों में प्रति दिन प्रति ताड़ 80 लीटर पानी या थाला सिंचाई वाले बागों में पश्चिमी क्षेत्रों में 6 दिनों में एक बार और पूर्वी क्षेत्रों में 5 दिनों में एक बार प्रति ताड़ 500 लीटर पानी दें। ताड़ों के थालों में सनई और ढैंचा जैसी हरी खाद फसल की बुवाई शुरू करें। कृष्ण शीर्ष इल्ली की तलाश करें। यदि कीट प्रकोप पाया जाए तो कीट ग्रस्त पत्तों और पत्तों के भागों को काटकर जलाएं। यदि कृष्णशीर्ष इल्ली का प्रकोप पाया जाए तो कीट ग्रस्त ताड़ों पर 0.02 प्रतिशत डाइक्लोरवोस का छिड़काव करें और छिड़काव करने के 3 हफ्ते बाद कृष्ण शीर्ष इल्ली की अवस्था के अनुसार लार्वा या प्यूपा परजीवियों को छोड़ दें। यदि धूसर पर्ण चित्ती रोग पाया जाए तो 0.3 प्रतिशत की दर पर कोपर ऑक्सीक्लोराइड/कार्बेन्डाज़िम 0.1 प्रतिशत का छिड़काव करें या 100 मि.ली.पानी में 2 ग्राम कार्बेन्डाज़िम जड़ों द्वारा दें। जड़ों द्वारा दवा देने और नारियल की अगली तुड़ाई के बीच 45 दिनों का अंतराल होना चाहिए।

मई

ऐसे क्षेत्रों में सिंचाई जारी रखें जहाँ पर ग्रीष्मकालीन बारिश नहीं मिलती हो। मृदा की उर्वरता बढ़ाने के लिए और मृदा की संरचना और बेहतर करने के लिए बलुई मिट्टी वाले बागों में तालाब की गाद डाल दें। बीजफलों को एकत्रित करते रहें।

यदि माइट का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खासतौर पर बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और कीट ग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा दें।

माइट से प्रकोपित नारियल

जून

ताड़ों के चारों तरफ थाला बनाएं। बागों से खरपतवार निकाल दें। कलिका विगलन और अन्य फफूंदजन्य रोगों से बचने के लिए एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण से रोगरोधी छिड़काव करें। यदि पिछले महीने नहीं डाला है तो उर्वरकों की पहली मात्रा यानि प्रति ताड़ 300 ग्राम यूरिया, 500 ग्राम सिंगल सूपर फोस्फेट और 500 ग्राम म्यूरिएट ऑफ पोटैश डालें। ताड़ के शिखरों पर गैंडा भृंग की तलाश करके उसे बीटल हुक से निकाल दें और मार दें। गैंडा भृंग के प्रकोप से बचने के लिए रोगरोधी उपाय के रूप में साल में तीन बार सबसे ऊपर के तीन पर्णकक्षों में 250 ग्राम चूर्णित चालमुगरा/नीम खली में तुल्य मात्रा में रेत मिलाकर भर दें या नैफ्थलीन गोली (12 ग्राम/ताड़) रख दें और उसे मिट्टी से ढक दें। इस महीने में मुख्य खेत में पौधों की रोपाई की जा सकती है। तंजावुर मुर्झा रोग से प्रकोपित ताड़ों की तलाश करें और उचित प्रबंधन उपाय अपनाएं।

यदि माइट का प्रकोप पाया गया है तो उचित नियंत्रण उपाय अपनाएं।

त्रिपुरा

अप्रैल

बीजफल बोने के लिए नर्सरी क्यारियाँ बनाएं। जहाँ जल निकासी की सुविधा नहीं होती है ऐसी भूमि में उठी क्यारियाँ बनाई जाएं। दीमक के प्रकोप से बीजफलों को बचाने के लिए 20 से 25 दिनों के अंतर से दो बार 0.05 प्रतिशत क्लोरपैरिफॉस से क्यारियों का उपचार करें।

बागों से खरपतवार निकालें एवं पानी बाहर बह जाने की सुविधाएं बनाएं। इस महीने पौदों का रोपण किया जाना चाहिए।

अगर कली सड़न रोग के व्यापक प्रकोप वाले क्षेत्र हो तो बाग में 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें। गैंडा भृंग एवं लाल ताड़ घुन के प्रकोप से पेड़ों को बचाने हेतु पेड़ के भीतरी तीन-चार पत्तों के कक्षों में 25 ग्रा. सेविडॉल 8 जी 250 ग्रा. महीन रेत मिलाकर भरें।

मई

बाग में निराई करें और जलनिकास के नालों की सफाई करें। खरपतवार निकालकर बागान की सफाई करें। जल निकासी की सुविधाएँ सुधारें। इस महीने के दौरान पौदों की रोपाई शुरू की जाए। बीजफलों की बुवाई के लिए नर्सरी क्यारियाँ तैयार करें। जल-जमाव वाले क्षेत्रों में ऊँची क्यारियों का निर्माण करें। दीमकों के प्रकोप से फलों को बचाने के लिए 20-25 दिनों के अंतराल में दो बार 0.05 प्रतिशत क्लोरपाइरिफोस से क्यारियों का उपचार करें। यदि कलिका विगलन रोग का प्रकोप है तो 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें, ताड़ों को गैंडा भृंग और लाल ताड़ घुन से बचाने के लिए 25 ग्राम सेविडोल 8 जी 250 ग्राम महीन रेत के साथ मिलाकर सबसे ऊपर के 3-4 पर्णकक्षों में भर दें। मृदा में अनुकूल वातन के लिए बीच की जगहों की जुताई करें।

लाल ताड़ घुन

जून

ताड़ के चारों ओर के थालों से खरपतवार निकाल दें। यदि मई में कोई हरी खाद फसल उगाई गई है तो जुताई करके वह मिट्टी में मिलाएं। गैंडा भृंग के प्रकोप से बचने के लिए रोगरोधी उपाय के रूप में साल में तीन बार सबसे ऊपर के तीन पर्णकक्षों में 250 ग्राम चालमुगरा/नीम खली चूर्ण में तुल्य मात्रा में रेत मिलाकर भर दें या नैफ्थलीन गोली (12 ग्राम/ताड़) रख दें और उसे मिट्टी से ढक दें। वर्षाकाल का फायदा उठाते हुए एकत्रित किए गए बीजफल बिना देरी के क्यारियों में बोएं।

पश्चिम बंगाल

अप्रैल

मानसून शुरू होने के पहले बीजफल बोएं और अगर आवश्यक हो तो सिंचाई करें। अगर रोपाई के लिए गड्ढ़े नहीं खोदे गए हैं तो अब खोदें। मेंड़ बनाएं और नाले साफ़ करें। अगर मानसून शुरू नहीं हुआ है तो सिंचाई जारी रखें। यदि उर्वरकों की पहली मात्रा का प्रयोग नहीं किया गया हो तो अब करें। कलिका विगलन और अन्य फफूँदजन्य रोगों से पेड़ों को बचाने के लिए रोगरोधी उपाय के रूप में 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें। आधा लीटर पानी में 10 ग्राम तूतिया और आधा लीटर पानी में अनबुझा चूने का घोल मिट्टी के घड़े में अलग अलग तैयार करें। अब तूतिया घोल को चूने के घोल में डालें। इसप्रकार एक प्रतिशत सांद्र एक लीटर बोर्डो मिश्रण तैयार हो जाता है। अम्लता की जाँच करने के लिए चाकू या ब्लेड इस घोल में डुबोकर देखें। यदि इसमें जंग लग रहा है तो चूने का घोल थोड़ा और डालें।

मई

सिंचाई जारी रखें। नई रोपाई के लिए स्थानों का चयन करें और गड्ढ़ा खोदें। ताड़ों के शिखरों पर गैंडा भृंग की तलाश करें और भृंग अंकुश से भृंगों को निकालकर मारें। 25 ग्राम सेविडोल 8 जी 250 ग्राम महीन रेत के साथ मिलाकर सबसे ऊपर के 3-4 पर्णकक्षों को भर दें। अदरक, हल्दी और अन्य मौसमी सब्जियों की खेती शुरू करें।

जून

प्रति ताड़ 25 कि.ग्राम की दर पर हरी खाद डालें। बागों से खरपतवार निकाल दें। मुख्य खेत में पौधों का रोपण शुरू करें। फफूंदजन्य रोगों से बचने के लिए 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण से रोगरोधी छिड़काव करें।

कृषि उन्नति मेला 2018

मिनी मैथ्यू, प्रचार अधिकारी, नाविबो, कोची-11

भारत के माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी कृषि उन्नति मेला 2018 का उद्घाटन करते हुए

भारत के माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने सूचित किया कि केन्द्रीय सरकार ने सभी अधिसूचित फसलों का न्यूनतम समर्थन भाव उनकी उत्पादन लागत के कम से कम डेढ़ गुणा अधिक सुनिश्चित करने का निर्णय लिया है। पारिश्रमिक, मशीनरी का किराया, बीज एवं उर्वरकों की कीमत, राज्य सरकार को दिए जा रहे राजस्व, श्रम पूँजी का ब्याज तथा पट्टे पर ली गई भूमि का किराया आदि संघटक लागत में शामिल हैं। वे कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के अधीन कृषि अनुसंधान संस्थाओं तथा संगठनों के सहयोग से भा.कृ.अनु.प.-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पुसा, नई दिल्ली के विशाल मैदान में *वर्ष 2022 तक किसानों की आय में दुगुनी वृद्धि* विषय पर 16 से 19 मार्च 2018 तक आयोजित तीसरे कृषि उन्नति मेले में सभा को संबोधित कर रहे थे।

श्री राधा मोहन सिंह, केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार; श्री पुरुषोत्तम रूपाला तथा श्रीमती कृष्णा राज, केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री; श्री शिवराज सिंह चौहान, मुख्य मंत्री, मध्यप्रदेश; श्री गजेंद्र सिंह शेखावत, केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा पंचायती राज राज्य मंत्री; श्री सर्बानंद सोनोवाल, असम मुख्य मंत्री; श्री सूर्य प्रताप शाही, उत्तर प्रदेश कृषि मंत्री; श्री एस.के.पट्टनायक, सचिव, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय; डा. त्रिलोचन महापात्र, सचिव (कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग) तथा महानिदेशक (भा.कृ.अ.प.); डा.ए.के.सिंह, निदेशक (भा.कृ.अ.प.-भा.कृ.अ.सं.) तथा उप महानिदेशक (कृषि विस्तार); डा.बी.एन.एस.मूर्ति, बागवानी आयुक्त तथा अध्यक्ष, नाविबो और डा.जे.पी.शर्मा, संयुक्त निदेशक-विस्तार (भा.कृ.अ.प.-भा.कृ.अ.सं.) आदि गणमान्य व्यक्ति इस अवसर पर उपस्थित थे।

माननीय प्रधान मंत्री जी ने अपने भाषण में किसान उत्पादक संगठनों की अहमियत पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा कि सहकारी समितियों की तरह किसान उत्पादक संगठनों को भी आयकर से राहत दी जाएगी। प्रधान मंत्री जी ने कहा कि जैव उत्पादों के लिए ई-विपणन पोर्टल की शुरुआत के साथ कृषि विपणन सुधार में एक नया अध्याय जोड़ा जा रहा है। कृषि विपणन में सुधार लाने के लिए बृहत् कदम उठाए जा रहे हैं। ग्रामीण खुदरे बाज़ारों को थोक और वैश्विक बाज़ारों के साथ जोड़े रखना अनिवार्य है। केन्द्रीय सरकार के हाल ही के बजट में ग्रामीण खुदरे कृषि बाज़ारों पर विचार किया

श्री नरेंद्र मोदी, माननीय प्रधान मंत्री सभा को संबोधित करते हुए

श्री राधा मोहन सिंह, माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री भाषण देते हुए

गया है। आवश्यक अवसंरचना के साथ 22,000 ग्रामीण बाज़ारों का उन्नयन करेंगे और इन्हें एपीएमसी तथा ई-नाम मंच के साथ एकीकृत करेंगे। प्रधान मंत्री जी ने समीक्षाधीन अवधि के दौरान कृषि क्षेत्र की उपलब्धियों के लिए पुरस्कार प्राप्त मेघालय राज्य का विशेष ज़िक्र किया है।

माननीय प्रधान मंत्री जी ने जैविक खेती का उद्घाटन किया और 25 कृषि विज्ञान केंद्रों का शिलान्यास भी किया जिससे भारत में कृषि विज्ञान केंद्रों की संख्या 700 हुई है। उन्होंने जैविक उत्पादों के लिए ई-विपणन पोर्टल का भी लोकार्पण किया। उन्होंने समारोह में कृषि कर्मण पुरस्कार और पंडित दीन दयाल उपाध्याय कृषि प्रोत्साहन पुरस्कार वितरित किए। इस अवसर पर 6 किसानों को आईएआरआई-फेलो फार्मर पुरस्कार और महिला किसानों सहित 46 प्रगतिशील किसानों को आईएआरआई-नवीन किसान पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

श्री राधा मोहन सिंह, केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री ने खेतों तक प्रौद्योगिकी पहुँचाने हेतु किसानों के लिए ***पुसा कृषि*** नामक एक नए मोबाइल एप्प का लोकार्पण किया। इस मोबाइल एप्प के उपयोग से किसानों को अपनी समस्याओं का समाधान आसानी से प्राप्त होता है। यह मोबाइल एप्प किसानों को जलवायु और फसलों की नई किस्में, संसाधन संरक्षित खेती विधियाँ तथा फार्म मशीनरी और इसके कार्यान्वयन संबंधी सूचनाएं प्रदान करेंगे जो किसानों की आमदनी बढ़ाने में सहायक होंगे।

उन्होंने अपने भाषण में पुसा संस्था के पुरस्कार प्राप्त सभी किसानों को बधाई दी और कहा कि ये किसान दूसरे किसानों के लिए भी प्रेरणा स्रोत बनेंगे। मंत्री जी ने इस वर्ष कृषि एवं बागवानी फसलों के उत्पादन में हुई रिकार्ड वृद्धि के लिए किसानों और वैज्ञानिकों को भी बधाई दी। उन्होंने किसानों से कहा कि वे धीरज से काम लें और सरकार उनके साथ है। सरकार और वैज्ञानिक समय समय पर नई प्रौद्योगिकियों के साथ उनका समर्थन करेंगे, उन्होंने जोड़ा। उन्होंने किसानों की आमदनी दुगुनी बनाने में नई एवं नूतन खेती प्रौद्योगिकियों की अहम भूमिका के बारे में दोहराया। उन्होंने कहा कि आधुनिक प्रौद्योगिकियाँ और फसलों की किस्में किसानों तक बिना विलंब के समय पर पहुँचनी चाहिए और किसानों का भरोसा जीतने के लिए खेतों में इनका निदर्शन किया जाना चाहिए। वर्ष 2022 तक किसानों की आमदनी में दुगुनी वृद्धि लक्षित करते हुए प्रधान मंत्री कृषि सिंचाई योजना, मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना और परंपरागत कृषि विकास योजना जैसी विविध योजनाओं के अंतर्गत किसानों द्वारा इन प्रौद्योगिकियों के उपयोग को बढ़ावा देने हेतु सरकार प्रयासरत है, माननीय मंत्री जी ने कहा।

मेले में केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों, विविध संगठनों द्वारा 800 से भी अधिक स्टाल लगाए गए। इन पवलियनों में किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए सूक्ष्म सिंचाई, नीम लेपित यूरिया, मृदा जाँच/मृदा स्वास्थ्य कार्ड, उर्वरकों का प्रयोग कम करके लागत में कटौती, फसल बीमा योजना की

प्रभावोत्पकता और आय अर्जन के नए आयाम जैसे पशुपालन, मधुमक्खी पालन, कुक्कुट पालन, नारियल के मूल्यवर्धन आदि विविध मार्ग प्रदर्शित किए गए। थीम पवलियन में स्टार्ट-अप पहलों पर विशेष ज़ोर दिए गए जिनका अभी कार्यान्वयन हो रहा है।

कृषि उन्नति मेले में नारियल विकास बोर्ड

नारियल विकास बोर्ड ने एमआईडीएच के होर्टि-18 पवलियन में नाविबो के थीम पवलियन सहित 40 स्टॉल लगाकर बड़ी शान से कृषि उन्नति मेले में भाग लिया। मेले का लक्ष्य कृषि क्षेत्र में हुए नूतन प्रौद्योगिकी विकास के बारे में व्यापक रूप से जागरूकता पैदा करना और किसान समूह से जानकारी लेना था ताकि कृषि अनुसंधान क्षेत्र में भविष्य की रणनीतियाँ और रूपरेखा तैयार करते वक्त आखिरकार मदद मिल सके।

बोर्ड ने कृषि मंत्रालय के मुख्य थीम पवलियन में नारियल के विविध मूल्यवर्धित उत्पाद प्रदर्शित किए। भारत के माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने नाविबो स्टाल का दौरा किया और नारियल उद्योग के विकास हेतु बोर्ड द्वारा कार्यान्वित की जा रही प्रमुख योजनाओं और गतिविधियों के बारे में जानकारी ली। डा.बी.एन.एस. मूर्ति, बागवानी आयुक्त एवं अध्यक्ष, नाविबो ने माननीय प्रधान मंत्रीजी को नारियल प्रसंस्करण क्षेत्र की नई प्रगति के बारे में विशेषतया नारियल के मूल्यवर्धन को बढ़ावा देने के लिए बनाई गई नूतन प्रौद्योगिकियों के बारे में विवरण दिया।

होर्टि-18 पवलियन में नाविबो के साथ राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड, राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड और बागवानी प्रभाग के अधीन अन्य विकासात्मक संस्थाओं ने भाग लिया। थीम पवलियन में नारियल विकास बोर्ड ने नारियल के विविध भागों से निर्मित मूल्यवर्धित उत्पाद - नारियल पुष्पक्रम आधारित खाद्य उत्पाद जैसे नीरा, नीरा शक्कर, नीरा शहद, नीरा गुड़, नीरा हल्वा, नीरा सिरप; नारियल की गरी से बनाए गए विर्जिन नारियल तेल, नारियल तेल, डेसिकेटड नारियल, खोपरा, नारियल चिप्स, स्प्रे ड्राइड नारियल दूध पाउडर, नारियल क्रीम जैसे स्वास्थ्य एवं सौंदर्यवर्धक उत्पाद, नारियल बिस्कुट, नारियल कैंडी, नारियल चाकलेट, नारियल बर्फी जैसे नारियल के सुविधाजनक खाद्योत्पाद; नारियल पानी आधारित उत्पाद जैसे डाब पानी, सिरका, नेटा डि कोको, नारियल स्क्वैश और नारियल खोपड़ी आधारित उत्पाद जैसे नारियल खोपड़ी कोयला, सक्रियित कार्बन एवं नारियल दस्तकारियाँ आदि प्रदर्शित की गईं। इसके अलावा नाविबो पवलियन में विभिन्न किस्मों के नारियल गुच्छे, नारियल पौध, नारियल पुष्पक्रम भी प्रदर्शित किए गए। पंजाब, राजस्थान, बिहार, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश आदि उत्तर भारतीय राज्यों से आए आगंतुक नाविबो पवलियन की प्रदर्शनी से काफी आकृष्ट हुए। लगभग सभी आगंतुकों से नारियल उत्पादों और नारियल पौधों की उपलब्धता संबंधी काफी अधिक पूछताछ भी प्राप्त हुई। लगभग एक लाख लोग कृषि उन्नति मेला प्रदर्शनी देखने

कृषि उन्नति मेला में बोर्ड का स्टाल

डा. बी. एन.एस. मूर्ति, अध्यक्ष, नाविबो उत्पाद विनिर्माताओं के साथ विचार-विनिमय करते हुए

डा. बी. एन.एस. मूर्ति, अध्यक्ष, नाविबो के साथ बोर्ड के पदाधिकारी मुख्य पवलियन में

आए। नाविबो गतिविधियों के बारे में वीडियो फिल्म प्रदर्शित की गई और नारियल पर लघु पुस्तिकाएं मुफ्त में वितरित की गई जिससे लोगों को नारियल संबंधी जानकारी प्रदान की जा सकी। आठ नारियल उत्पादक कंपनियों ने बाग के ताज़ा एवं गुणवत्तापूर्ण उत्पाद अपने अपने स्टाल में प्रदर्शित किए और उन्हें उत्तर भारत में अपने उत्पादों के लिए बाज़ार खोजने का अवसर इस मेले से प्राप्त हुआ। देशभर के नारियल उत्पाद विनिर्माताओं ने मेले में भाग लिया। मेले में भाग लिए नारियल उत्पाद निर्माताओं को संभावी पूछताछें प्राप्त हुईं जिससे व्यापार बढ़ाने का मार्ग प्रशस्त हुआ। कर्नाटक की श्रीमती सुधा मोहन और कशमीर की श्रीमती सुनिता कसबा जैसी महिला उद्यमियों ने अपने ब्रैंडेड डाब पानी की प्रदर्शनी और बिक्री की। डाब पानी के विनिर्माताओं ने अपने पक्ष के विनिर्माताओं का एक कंसोर्शियम बनाने का निर्णय भी लिया।

उद्यमियों की बैठक

डा.बी.एन.एस. मूर्ति, बागवानी आयुक्त एवं अध्यक्ष, नाविबो की अध्यक्षता में 17 मार्च 2018 को रिलैक्स होटल, पटेल नगर, नई दिल्ली में उद्यमियों की एक बैठक संपन्न हुई। परिचर्चा में किसान उत्पादक संगठन सहित 32 उद्यमियों ने भाग लिया। इस अवसर पर भारत में नारियल उद्योग को अलग पहचान देने में जुड़ गए उद्यमियों ने उनके द्वारा सामना की जा रही कई विचारपूर्ण मुद्दे उठाए। नाविबो के अध्यक्ष एवं श्री सरदिंदु दास, मुख्य नारियल विकास अधिकारी, श्री सरदार सिंह चोयल, उप निदेशक, श्री श्रीकुमार पोतुवाल, प्रसंस्करण इंजीनियर, श्रीमती दीप्ति नायर, सहायक निदेशक(विपणन) और श्रीमती मिनी मैथ्यू, प्रचार अधिकारी सहित टीम सदस्यों ने प्रत्येक समस्या के लिए निवारणात्मक उपाय सुझाए।

नारियल प्रसंस्करण क्षेत्र में उद्यमियों द्वारा उठाए गए प्रमुख मुद्दे और समस्याएं

1. उन्होंने नारियल पानी आधारित स्वास्थ्य पेय विशेषतया डाब पानी और नीरा को बढ़ावा देने हेतु नाविबो से और अधिक सहायता माँगी।

2. नीरा, नारियल दूध/फ्लेवर्ड नारियल दूध जैसे मूल्यवर्धित उत्पादों की गुणवत्ता सुधारने हेतु नाविबो से और अधिक तकनीकी समर्थन माँगे।

3. डाब पानी का 5 प्रतिशत वैट 12 प्रतिशत जीएसटी के रूप में बढ़ाने के कारण उद्यमी अपने उत्पादों की बिक्री करने में मुश्किलों का सामना कर रहे हैं। अतः उन्होंने कर संरचना में पूर्व स्थिति बनाई रखने के लिए आवश्यक कदम उठाने हेतु बोर्ड से अनुरोध किया।

4. नारियल के मूल्यवर्धित उत्पादों के व्यापक संवर्धन हेतु और अधिक प्रयास करने चाहिए।

5. नारियल प्रौद्योगिकी मिशन परियोजना के अंतर्गत मशीनरी विनिर्माताओं के लिए सब्सिडी प्रदान करने हेतु आवश्यक कदम उठाए जाने चाहिए।

6. कुछ नारियल उद्यमियों ने यह शिकायत की थी कि नारियल प्रौद्योगिकी मिशन के अंतर्गत नाविबो द्वारा मंजूर की गई बैक एंडेड सब्सिडी पर ब्याज लगाने वाली एकमात्र वित्तीय संस्था केएफसी है। उन्होंने जल्द से जल्द इस समस्या का निवारण करने हेतु इस संबंध में समुचित कार्रवाई करने के लिए बोर्ड का समर्थन माँगा।

7. डेसिकेटड नारियल उद्योग में मिलावट के कारण गुणवत्तापूर्ण डेसिकेटड नारियल का उत्पादन करने वाले विनिर्माता भी अपने असली उत्पाद के लिए अच्छा दाम मिलने से वंचित हो रहे हैं। उन्होंने खाद्य सुरक्षा मानदंडों के अनुसार मिलावट के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने का अनुरोध किया। इसके अलावा, यह भी अनुरोध किया कि जब कभी प्रसंस्करण इकाइयाँ स्थापित की जाती हैं, प्रयोगशाला उपस्करों के लिए भी सब्सिडी प्रदान की जानी चाहिए।

8. बोर्ड के वेब पोर्टल के ज़रिए नारियल उत्पादों की खूबियों के बारे में अधिकतम संवर्धन करना चाहिए।

नारियल प्रसंस्करण क्षेत्र की मुख्य समस्याओं का सामना करने के लिए नाविबो द्वारा प्रस्तुत निवारणात्मक उपाय

1. डा.बी.एन.एस.मूर्ति, अध्यक्ष ने सूचित किया कि नारियल विकास बोर्ड नीरा और डाब पानी जैसे कुदरती स्वास्थ्य पेयों के व्यापक संवर्धन हेतु आवश्यक कदम उठा रहे हैं। बोर्ड ने रेल मंत्रालय और नगर विमानन मंत्रालय को रेलवे के आईआरसीटीसी स्टालों और हवाई जहाज़ों एवं एयरपोर्टों में डाब पानी और नीरा की बिक्री के लिए अनुमति हेतु पत्र लिखे हैं। केरल में नारियल उत्पादक कंपनियाँ नीरा के प्रसंस्करण हेतु विभिन्न प्रौद्योगिकियाँ अपना रही हैं जिस वजह से नीरा के जायके में बदलाव होने की संभावना है। जब कभी थोक ऑर्डर प्राप्त होते हैं निर्यात की माँग को पूरा करने के लिए हम आम ब्रैंड अपना सकते हैं। जब कि दूसरी ओर भारतीय बाज़ारों में हरेक के अपने ब्रैंड को बढ़ावा दिया जा सकता है ताकि बाज़ार में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा बनाई रख सके।

2. नारियल के मूल्यवर्धित उत्पादों के उत्पाद हेतु तकनीकी जानकारी हासिल करने और नारियल उत्पादों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु उद्यमी केरल के आलुवा में स्थित नाविबो प्रौद्योगिकी संस्था का दौरा कर सकते हैं।

3. 12 प्रतिशत जीएसटी संबंधी मामले पर बोर्ड द्वारा विचार किया जाएगा और यह 5 प्रतिशत करने हेतु पूरा प्रयास किया जाएगा।

4. बोर्ड ने अपने दिशा-निर्देशों में मशीनरी विनिर्माताओं के लिए कोई सब्सिडी शामिल नहीं की है। नारियल प्रौद्योगिकी मिशन के अधीन वित्तीय सहायता मात्र उनको ही प्राप्त हो सकती है जो नारियल प्रसंस्करण संबंधी कार्य में लगे हैं।

5. नारियल के व्यापक संवर्धन के भाग स्वरूप नारियल विकास बोर्ड ने चालू वर्ष के दौरान नारियल तेल, विर्जिन नारियल तेल, नारियल दूध, नारियल दूध पाउडर, डाब पानी, नीरा और नीरा उत्पाद, नारियल चिप्स निहित नारियल उत्पाद बास्कुट पर प्रिंट और इलेक्ट्रोनिक मीडिया के ज़रिए तीव्र मीडिया अभियान चला रहा है। चालू वर्ष के दौरान बोर्ड ने नई दिल्ली के हवाई अड्डे(डोमेस्टिक टर्मिनल) में नारियल

के मूल्यवर्धित उत्पादों के 63 डिजिटल डिस्प्ले होर्डिंग्स लगाने, देशभर के रेल्वे स्टेशनों में रेलवे प्रसारण चैनल के ज़रिए बैनर विज्ञापन प्रदर्शित करने, नई दिल्ली में बस क्यू शेल्टर में होर्डिंग लगाने, आकाश वाणी, रेडियो मिर्ची, कम्यूनिटी रेडियो के ज़रिए नाविबो कार्यक्रमों को बढ़ावा देने, वेबसाइट द्वारा और देश के विविध भागों में डिजिटल बाज़ार अभियान चलाने जैसी गतिविधियाँ करके नारियल उत्पादों का व्यापक संवर्धन किया है। स्कूल विद्यार्थियों के लिए नारियल की खूबियों पर प्रतियोगिताएं चलाकर विद्यार्थी समूह के बीच नारियल के बारे में जागरूकता पैदा करने में भी बोर्ड कामयाब हुआ है।

6. अध्यक्ष ने यह आश्वासन दिया कि नाविबो द्वारा मंजूर की गई सब्सिडी पर केएफसी द्वारा ब्याज लगाने के संबंध में उद्यमियों ने जो मामला उठाया है इस पर बोर्ड आवश्यक कार्रवाई करेंगे और केएफसी के साथ चर्चा करके शीघ्र ही इस मामले को निपटाएंगे।

7. डेसिकेटड नारियल उद्योग में मिलावट करने वालों पर बोर्ड कड़ी कार्रवाई करेंगे। आगे, बोर्ड इस क्षेत्र के अपराधियों को एक चेतावनी पत्र भी जारी करेंगे।

8. बोर्ड अपने वेबसाइट के ज़रिए मूल्यवर्धित उत्पादों को बढ़ावा देने हेतु पहल कर रहा है। बिक्री के लिए बोर्ड के वेबसाइट द्वारा समर्थन देने की वैधता पर जाँच की जाएगी।

डा.बी.एन.एस.मूर्ति, अध्यक्ष, नाविबो ने सूचित किया कि अगली वित्तीय वर्ष के दौरान बोर्ड द्वारा हरेक मेट्रो शहर में एक क्रेता-बिक्रेता भेंट आयोजित की जाएगी। तदनुसार देशभर में कम से कम चार बैठकें आयोजित की जाएंगी।

नारियल उत्पादन की पहलुएं तथा संभावनाएं और मूल्यवर्धन पर राज्य स्तरीय कार्यशाला संपन्न

डा. रजत कुमार पाल, उप निदेशक, नाविबो विषय प्रवेश भाषण देते हुए

डा. बिश्वनाथ राठ, बोर्ड सदस्य कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए

नारियल विकास बोर्ड के राज्य केंद्र और प्रबीउ फार्म, पित्तापल्ली, ओड़िशा ने भुबनेश्वर में 17 जनवरी 2018 को नारियल उत्पादन की पहलुओं तथा संभावनाओं और मूल्यवर्धन पर राज्य स्तरीय कार्यशाला आयोजित की। विशेषज्ञ एवं अतिथि के रूप में केंद्रीय बागवानी अनुसंधान स्टेशन, केंद्रीय कंदमूल फसल अनुसंधान संस्थान, ओड़िशा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, एकीकृत संगरोध प्रबंधन केंद्र, बागवानी निदेशालय, ओड़िशा सरकार, ओड़िशा कृषि संवर्धन और निवेश निगम लिमिटेड आदि के प्रसिद्ध वैज्ञानिक, प्रोफसर, विभागाध्यक्ष एवं वरिष्ठ सरकारी अधिकारी कार्यशाला में उपस्थित रहे। डा.बिश्वनाथ राठ, बोर्ड सदस्य, नारियल विकास बोर्ड कार्यशाला के मुख्यातिथि रहे। डा.गोविन्द आचार्या, अध्यक्ष, केंद्रीय बागवानी अनुसंधान स्टेशन, डा.आर.के.मिश्रा, विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, ओड़िशा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, डा.सुदर्शन पाण्डा, पूर्व-सेवानिवृत्त बागवानी निदेशक, ओड़िशा सरकार, श्री श्रीकुमार पोतुवाल, प्रसंस्करण इंजीनियर, नाविबो, कोची और डा.रजत पाल, उप निदेशक, नारियल विकास बोर्ड, ओड़िशा इस अवसर पर उपस्थित थे। पुरी, कट्टक, केंद्रपारा, गंजम, जगतसिंहपुर, खुरदा आदि विभिन्न जिलों से 350 से अधिक किसानों और नारियल

श्री आर मधु ने नाविबो के सचिव का कार्यभार ग्रहण किया

श्री आर मधु ने 27 मार्च 2018 को नारियल विकास बोर्ड के सचिव का कार्यभार ग्रहण किया। इससे पूर्व वे कोट्टयम, केरल में स्थित रबड़ बोर्ड के मुख्यालय में लेखा अधिकारी के रूप में कार्य कर रहे थे। वे 15 अक्तूबर 2009 से 17 जून 2014 तक नाविबो में लेखा-परीक्षा अधिकारी (प्रतिनियुक्ति) का पद संभाल रहे थे। उन्हें लेखाकरण कार्यों में उन्नीस से अधिक वर्षों का अनुभव प्राप्त है।

उत्पादक समितियों के सदस्यों ने कार्यक्रम और बातचीत सत्र में भाग लिया। डा.बिश्वनाथ राठ ने अपने उद्घाटन भाषण में एक परिपक्व नारियल के लिए न्यूनतम समर्थन भाव 20 रुपए निश्चित करने पर ज़ोर दिया। उन्होंने ओड़िशा में नारियल खेती और उत्पादन तथा नारियल तेल उद्योग की स्थापना में नाविबो की भूमिका के बारे में बताया। डा.रजत पाल, उप निदेशक, नाविबो, ओड़िशा ने अपने मुख्य भाषण में कार्यशाला का उद्देश्य एवं विभिन्न नाविबो योजनाओं के सफल कार्यान्वयन के लिए रूपरेखा तैयार करने पर बात की। उन्होंने नारियल उत्पादक समितियों के गठन की आवश्यकता पर ज़ोर दिया।

इसके बाद संपन्न तकनीकी सत्र में डा.नेटुंचेषियन, अध्यक्ष, केंद्रीय कंदमूल फसल अनुसंधान संस्थान ने नारियल बाग में अंतर फसल के रूप में कंदमूल फसल की खेती की अहमियत पर बात की। डा.एस.सी.साहू, प्रोफसर एवं प्रभारी अधिकारी, अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना, ओड़िशा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय ने नारियल की उत्पादकता सुधारनेवाले प्रमुख घटकों जैसे जैव खाद और उर्वरक, थाला प्रबंधन, सिंचाई, पलवार, हरी खाद आदि का समय पर प्रयोग के बारे में बताया। श्री चौधरी बी.पी.दास, कृषि-परामर्शदाता, ओड़िशा राज्य विपणन बोर्ड ने ओड़िशा में नारियल विपणन की संभावनाओं तथा समस्याओं पर संक्षेप में कहा। उन्होंने राष्ट्रीय कृषि बाज़ार के पोर्टल के माध्यम से नारियल के ई-विपणन पर प्रकाश डाला जिससे नारियल के मज़बूरन बिक्री पर काबू पा सकता है। श्री श्रीकुमार पोतुवाल, प्रसंस्करण इंजीनियर, नाविबो प्रौद्योगिकी संस्था ने नारियल के मूल्य वर्धित उत्पादों जैसे विर्जिन नारियल तेल, डेसिकेटड नारियल पाउडर, पैकटबंद डाब पानी, नारियल चिप्स, खोपड़ी कोयला, सक्रियित कार्बन और अनेक अन्य उत्पाद जिनके प्रसंस्करण तथा निर्माण के ज़रिए आय में अच्छी तरह वृद्धि पाई जा सकती है, उन पर भाषण दिया। श्री चंद, बागवानी अधिकारी, बागवानी निदेशालय ने नारियल विकास बोर्ड की योजनाओं के साथ समवाय करते हुए नारियल के विकास में राज्य सरकार की भूमिका पर विवरण दिया।

5वीं असम अंतर्राष्ट्रीय एग्रि-होर्टि प्रदर्शनी 2018

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी ने इंडियन चेंबर ऑफ कोमर्स तथा असम कृषि विश्वविद्यालय के सहयोग से कृषि विभाग, असम सरकार द्वारा 5 से 8 जनवरी 2018 को चौकीडिंगी ग्राउंड, डिब्रूगढ़ में आयोजित 5वाँ असम अंतर्राष्ट्रीय एग्रि-होर्टि प्रदर्शनी में भाग लिया। असम अंतर्राष्ट्रीय एग्रि-होर्टि प्रदर्शनी असम में आयोजित वार्षिक कार्यक्रम है जो कृषि, बागवानी, खाद्य प्रसंस्करण, पुष्पकृषि तथा संबद्ध क्षेत्रों में उपलब्ध उन्नत प्रौद्योगिकियों तथा नए अवसरों को दर्शाता है।

श्री सर्बानन्दा सोनोवाल, माननीय असम मुख्य मंत्री ने 5वाँ असम अंतर्राष्ट्रीय एग्रि-होर्टि प्रदर्शनी 2018 का उद्घाटन किया। मुख्य मंत्री ने अपने उद्घाटन भाषण में सूचित किया कि सरकार नई पीढ़ी को आकर्षित करने हेतु कृषि क्षेत्र को सुदृढ़ करने के लिए प्रतिबद्ध है और किसानों को आश्वासन दिया कि सरकार सभी उत्पादों के लिए न्यूनतम समर्थन भाव सुनिश्चित करेंगे। राज्य कृषि मंत्री श्री अतुल बोरा ने अपने भाषण में उल्लेख किया कि

असम अंतर्राष्ट्रीय एग्रि-होर्टि प्रदर्शनी में नाविबो का स्टाल

बोर्ड के स्टाल में दर्शकगण

एग्रि-होर्टि प्रदर्शनी असम में कृषि क्षेत्र में निर्यात एवं निवेश की वृद्धि में सहायक होगा। उन्होंने यह भी बताया कि इस प्रदर्शनी से राज्य के किसानों को बहुत अधिक फायदे होंगे क्योंकि उन्हें उन्नत खेती प्रौद्योगिकियों के बारे में जानकारी मिलते हैं। असम सरकार के प्रधान सचिव श्री वी.के.पिपरसेनिया, अपर मुख्य सचिव (कृषि) डा.के.के.मित्तल, आयुक्त एवं सचिव (कृषि) श्री आमलान बरुआ, भाप्रसे तथा श्री प्रशांत फुकन, विधायक उद्घाटन सत्र में उपस्थित रहे।

प्रदर्शनी में 228 संगठनों ने भाग लिया जिसमें थाइलैंड, थाइवान, नेपाल, कानडा और चीन जैसे देशों से प्रतिभागी शामिल थे। नारियल विकास बोर्ड को मुख्य पवलियन के भीतर दो बड़ा स्टाल प्रदान किया गया था। बोर्ड ने नारियल के विविध किस्में, सुविधाजनक नारियल खाद्योत्पाद, नारियल गरी से मूल्य वर्धित उत्पाद, नारियल खोपड़ी और नारियल पानी, नारियल खोपड़ी/लकडी आधारित हस्तशिल्प और नारियल पर लीफलेट, पुस्तक एवं प्रकाशन तथा नारियल और उसके उत्पादों पर पौष्टिक एवं स्वास्थ्य लाभ संबंधी पोस्टर प्रदर्शित किए।

वैज्ञानिक नारियल खेती और मूल्य वर्धन पर कार्यशाला संपन्न

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी ने जोनाई ब्लॉक सीपीएस के सहयोग से धेमाजी जिला, असम में 8 मार्च 2018 को वैज्ञानिक नारियल खेती और मूल्य वर्धन पर जिला स्तरीय कार्यशाला आयोजित की। श्री कृष्णकांत मिलि, अध्यक्ष, जोनै सीपीएस ने सभा का स्वागत किया। श्री निसर्ग हिवारे, भाप्रसे, एसडीओ, जोनाई मुख्यातिथि रहे और श्री जितेन पाडी, एसडीएओ (कृषि) कार्यक्रम में उपस्थित थे। कार्यक्रम में लगभग 130 किसानों ने भाग लिया।

श्री लुंहार ओबेद, निदेशक, नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी ने मुख्य भाषण दिया। उन्होंने असम में नारियल के परिदृश्य एवं मूल्य वर्धन पर बात की।

श्री निसर्ग हिवारे, भाप्रसे, एसडीओ, जोनाई ने धेमाजी जिले में नारियल पर जिला स्तरीय कार्यशाला आयोजित करने के लिए नारियल विकास बोर्ड को बधाइयाँ दी। उन्होंने नाविबो द्वारा आयोजित विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए किसानों को प्रोत्साहित किया।

श्री जितेन पाडी, एसडीएओ (कृषि), जोनाई ने नारियल की वैज्ञानिक खेती करने के लिए किसानों को

श्री लुंहार ओबेद, निदेशक विषय प्रवेश भाषण देते हुए

आह्वान किया। उन्होंने असम में नारियल की वैज्ञानिक बागान के बारे में संक्षिप्त विवरण दिया। श्री रवींद्र कुमार, तकनीकी अधिकारी, नाविबो, गुवाहटी ने नारियल खेती प्रौद्योगिकी, नारियल के रोग एवं कीट प्रबंधन आदि पर बात की।

श्री कमल बैश्या, डीईओ, नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी ने नाविबो योजनाएं, प्रशिक्षण कार्यक्रम, सीपीएस गठन आदि पर भाषण दिया और साथ ही असम में सीपीएस के माध्यम से कार्यान्वित किए जा रहे नाविबो योजनाओं पर भी विवरण दिया। श्री नारायण पाओ, सचिव, जोनाई सीपीएस के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

कृषि ओड़िशा-2018

कृषि एवं किसान सशक्तिकरण विभाग, ओड़िशा सरकार ने कॉन्फेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्रीस के सहयोग से 6 से 9 मार्च 2018 तक बारामुंडा, भुबनेश्वर में राज्य स्तरीय प्रदर्शनी कृषि ओड़िशा-2018 आयोजित किया। माननीय

डा. रजत कुमार पाल, उप निदेशक, नाविबो बोर्ड के पदाधिकारियों के साथ स्टाल में

ओड़िशा मुख्य मंत्री श्री नवीन पटनायक उद्घाटन कार्यक्रम में मुख्यातिथि रहे।

नारियल विकास बोर्ड के राज्य केंद्र, ओड़िशा ने चार दिवसीय कार्यक्रम और प्रदर्शनी में भाग लिया। किसानों के लाभ हेतु नारियल किस्में और नारियल के मूल्य वर्धित उत्पादों को प्रदर्शित किया गया। नारियल विकास बोर्ड ने विविध मूल्य वर्धित उत्पाद जैसे विर्जिन नारियल तेल, विर्जिन नारियल तेल कैप्सूल, डेसिकेटड नारियल, नारियल दूध, नारियल जाम, स्क्वैश, नारियल तेल, नारियल दूध पाउडर, हस्तशिल्प वस्तुएं, नारियल ताड़ारोहण यंत्र, विभिन्न किस्म के नारियल पौध, विभिन्न किस्म के नारियल आदि प्रदर्शित किए। आगंतुकों को नाविबो गतिविधियों के बारे में संक्षिप्त विवरण दिया। डा.आर.के पाल, उप निदेशक, नाविबो और श्रीमती नीतु थॉमस, तकनीकी अधिकारी, नाविबो ने नाविबो योजनाओं,

बोर्ड के स्टाल का दृश्य

नारियल खेती, नारियल क्षेत्र में किसान उत्पादक संगठन, प्रशिक्षण कार्यक्रम, ताड़ारोहण यंत्र और नारियल पौध की उपलब्धता, नारियल के मूल्य वर्धन आदि पर किसानों की समस्याओं का समाधान किया। 15,000 से अधिक किसानों ने नाविबो स्टाल का दौरा किया। किसान-विशेषज्ञ बातचीत सत्र के दौरान डा.आर.के. पाल, उप निदेशक, नाविबो ने विपणन तथा नारियल के मूल्य वर्धन पर बात की। समापन समारोह में श्री प्रदीप महारथी, माननीय पंचायती राज और पेयजल मंत्री, कृषि एवं किसान सशक्तिकरण, मत्स्य पालन और पशु संसाधन विकास मुख्यातिथि रहे।

भारत ने पाम तेल का आयात शुल्क बढ़ा दिया

भारत में घरेलू खाद्य तेल निष्कर्षण उद्योग और तिलहन किसानों के हितों की रक्षा करने के उद्देश्य से वित्त मंत्रालय, भारत सरकार ने परिशुद्ध और क्रूड पाम तेल का आयात शुल्क पिछले दशक के उच्चतम स्तर तक बढ़ा दिया।

अधिसूचना सं.29/2018-सीमाशुल्क दिनांक 1 मार्च 2018 के द्वारा भारत ने क्रूड पाम तेल का आयात कर 30 प्रतिशत से 44 प्रतिशत और परिशुद्ध पाम तेल का कर 40 प्रतिशत से 54 प्रतिशत तक बढ़ा दिया।

105वाँ भारतीय विज्ञान कांग्रेस

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी ने 105वें भारतीय विज्ञान कांग्रेस द्वारा मणिपुर विश्वविद्यालय, इंफाल, मणिपुर में 16 से 20 मार्च 2018 तक आयोजित प्रैड ऑफ इंडिया एक्स्पो में भाग लिया। प्रदर्शनी के दौरान 1000 से अधिक लोगों ने नाविबो स्टाल का दौरा किया। नाविबो स्टाल में नारियल उत्पाद, हस्तशिल्प तथा पोस्टर प्रदर्शित किए गए। आगंतुकों को नाविबो योजना, नीरा और नारियल उत्पादों पर ब्रोशर वितरित किए गए। श्री लुंहार ओबेद, निदेशक, नाविबो ने आगंतुकों को नाविबो योजना और नारियल खाद्य उत्पादों पर विवरण दिया।

श्री लुंहार ओबेद, निदेशक स्टाल में छात्राओं को नारियल उत्पादों का परिचय कराते हुए

नाविबो की परियोजना अनुमोदन समिति की बैठक में 22.69 करोड रुपए की 23 परियोजनायें मंजूर

नारियल विकास बोर्ड ने डा.बी एन एस मूर्ति, अध्यक्ष, नाविबो की अध्यक्षता में 19 जनवरी 2018 को कोची में संपन्न नारियल प्रौद्योगिकी मिशन की परियोजना अनुमोदन समिति की 51वीं बैठक में 22.69 करोड रुपए के कुल परिव्यय और 4.75 करोड रुपए की वित्तीय सहायता के साथ 23 परियोजनाओं के लिए अनुमोदन प्रदान किया जिनकी वार्षिक प्रसंस्करण क्षमता 521 लाख नारियल है तथा इनमें से दो परियोजनाओं में 4200 मे.टन नारियल खोपडी कोयले का उत्पादन होता है। 23 परियोजनाओं में से 3 अनुसंधान परियोजनाएं हैं तथा 19 परियोजनाएं मूल्य वर्धन हेतु नारियल प्रसंस्करण संबंधी हैं और एक बाज़ार संवर्धन पर है।

'प्रसंस्करण तथा उत्पाद विविधीकरण' उप संघटक के तहत, प्रति वर्ष 330 लाख नारियल का प्रसंस्करण करके डेसिकेटड नारियल पाउडर निर्माण के लिए 4 परियोजनाएं, प्रति वर्ष 118.95 लाख नारियल एवं 1.5 लाख लीटर नीरा और तीन लाख लीटर नारियल पानी का प्रसंस्करण करके डेसिकेटड नारियल पाउडर एवं विर्जिन नारियल तेल, नारियल दूध एवं शर्करा, नारियल सिरका तथा नेटा-डि-कोको आदि के उत्पादन के लिए 4 एकीकृत प्रसंस्करण इकाइयाँ, प्रति वर्ष 15 लाख नारियल का प्रसंस्करण करके डाब पानी प्रसंस्करण तथा पैकिंग की एक इकाई, प्रति वर्ष 42.10 लाख नारियल की प्रसंस्करण क्षमतावाली 7 गोल खोपरा निर्माण इकाइयाँ, प्रति वर्ष 15 लाख नारियल की प्रसंस्करण क्षमतावाली एक नारियल तेल इकाई, प्रति वर्ष 4200 मे.टन खोपडी कोयले की उत्पादन क्षमतावाली 2 खोपडी कोयला निर्माण इकाइयाँ मंजूर की गयी हैं।

केरल में प्रति दिन 72,500 नारियल की प्रसंस्करण क्षमतावाली 2 डेसिकेटड नारियल पाउडर इकाइयाँ, प्रतिदिन 1000 नारियल एवं 1000 लीटर नारियल पानी का प्रसंस्करण करके नारियल सिरका तथा नेटा-डि-कोको और नारियल चिप्स आदि के उत्पादन के लिए एक एकीकृत नारियल प्रसंस्करण इकाई, प्रतिदिन 5000 नारियल की प्रसंस्करण क्षमतावाली एक नारियल तेल इकाई, प्रति वर्ष 4.30 लाख नारियल की प्रसंस्करण क्षमतावाली तीन गोल खोपरा निर्माण इकाइयाँ और प्रति दिन 19 मे.टन खोपडी कोयले की उत्पादन क्षमतावाली एक खोपडी कोयला निर्माण इकाई मंजूर की गयी हैं।

तमिलनाडु में प्रति दिन 37,500 नारियल की प्रसंस्करण क्षमतावाली 2 डेसिकेटड नारियल पाउडर निर्माण इकाइयाँ, प्रति दिन 5,000 नारियल की प्रसंस्करण क्षमतावाली एक डाब पानी प्रसंस्करण और पैकिंग इकाई और विर्जिन

परियोजना अनुमोदन समिति की बैठक का दृश्य

नारियल तेल, डेसिकेटड नारियल और नारियल शर्करा के उत्पादन के लिए प्रतिदिन 38,650 नारियल और 500 लीटर नीरा की प्रसंस्करण क्षमतावाली तीन एकीकृत नारियल प्रसंस्करण इकाइयाँ और प्रति दिन 4 मे.टन खोपडी कोयले की उत्पादन क्षमतावाली एक खोपडी कोयला निर्माण इकाई मंजूर की गयी हैं।

आन्ध्र प्रदेश में प्रति वर्ष 37.80 लाख नारियल की प्रसंस्करण क्षमतावाली चार गोल खोपरा निर्माण इकाइयाँ मंजूर की गई हैं।

श्री नवीन के. रस्तोगी, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, सीएफटीआरआई, मैसूर, श्री पी.के. हमीद कुट्टी, उप कृषि विपणन सलाहकार, विपणन और निरीक्षण निदेशालय, कोची, श्रीमती उषा के., उप महाप्रबंधक, नबार्ड, क्षे.का., तिरुवनंतपुरम, श्री वसंतकुमार पी., सहायक मुख्य प्रबंधक, इंडियन ओवरसीस बैंक, क्षे.का., कोची, श्री सरदिंदु दास, मुख्य नारियल विकास अधिकारी, नाविबो, कोची, श्री इ.अरवाड़ी, श्री आर ज्ञानदेवन और श्री सरदार सिंह चोयल, उप निदेशक तथा श्री श्रीकुमार पोतुवाल, प्रसंस्करण इंजीनियर, नाविबो, कोची ने बैठक में भाग लिया।

नारियल पर जागरूकता कार्यक्रम

नारियल विकास बोर्ड, राज्य केंद्र, पोर्ट ब्लेयर ने बियोडनबाड गांव, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में 23 मार्च 2018 को नारियल पर ब्लॉक स्तरीय किसान जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। श्रीमती वी शांती, प्रधान, ग्राम पंचायत, बियोडनबाड ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। श्री एस प्रदीप, पंचायत सचिव तथा प्रगतिशील किसान, बियोडनबाड गांव, श्री अविनाश नोर्मन, तकनीकी अधिकारी, नाविबो, राज्य केंद्र, पोर्ट ब्लेयर तथा दक्षिण अंडमान के विभिन्न क्षेत्रों के किसान इस अवसर पर उपस्थित थे।

सभा का दृश्य

श्री अविनाश नोर्मन ने सभा का स्वागत किया। श्रीमती वी शांती, प्रधान ने अपने उद्घाटन भाषण में किसानों के हित के लिए ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने के लिए नाविबो को बधाई दी। उन्होंने बोर्ड द्वारा कार्यान्वित विभिन्न कार्यक्रमों का लाभ उठाते हुए बडे पैमाने पर नारियल की खेती करने के लिए किसानों को आह्वान किया।

बाद में संपन्न तकनीकी सत्र में श्री अविनाश नोर्मन ने नाविबो योजना, नीरा टैप्पिंग तथा नीरा के मूल्य वर्धन पर बात की। उन्होंने नारियल खेती, नर्सरी तकनीकियाँ,मातृ-वृक्ष चयन एवं अन्य प्रबंधन प्रणाली आदि पर संक्षिप्त विवरण दिया। कार्यक्रम के भाग स्वरूप बातचीत सत्र भी संपन्न हुआ जिसमें नारियल खेती पर किसानों की समस्याओं का समाधान किया गया।

किसान मेला

भा.कृ.अ.प.-केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान (सीपीसीआरआई), अनुसंधान केंद्र, काहिकुची ने सुपारी आधारित फसल प्रणाली के माध्यम से किसानों का आय दुगुना बढ़ाने के लिए 19 फरवरी 2018 को कें.रो.फ.अ.सं.

बोर्ड का स्टाल

परिसर काहिकुची, गुवाहटी में किसान मेला आयोजित किया। नारियल विकास बोर्ड के क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी ने कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम में असम के विभिन्न जिलों से लगभग 600 किसान उपस्थित रहे। नारियल विकास बोर्ड ने सुविधाजनक नारियल खाद्योत्पाद, नारियल गरी से मूल्य वर्धित उत्पाद, नारियल खोपड़ी और नारियल पानी, नारियल खोपड़ी/लकडी आधारित हस्तशिल्प और नारियल विषयक लीफलेट, नारियल पत्रिका और नारियल तथा उसके उत्पादों पर पौष्टिक एवं स्वास्थ्य लाभ संबंधी पोस्टर को प्रदर्शित किया। किसानों के साथ एक बातचीत सत्र भी संपन्न हुआ जिसमें किसानों ने नारियल रोपण और योजनाओं पर अपनी विभिन्न समस्याएं उठायीं। श्री लुंहार ओबेद, निदेशक, नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी ने उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में कार्यान्वित नाविबो योजनाओं पर भाषण दिया और किसानों की अर्थव्यवस्था बढ़ाने में असम में नारियल की अहमियत पर ज़ोर दिया।

नारियल बागों में *रुगोस स्पैरालिंग* सफेद मक्खी के प्रकोप पर जागरूकता कार्यक्रम

एक नई सफेद मक्खी प्रजाति *रुगोस स्पैरालिंग* सफेद मक्खी का फैलाव शुरू में काफी तेज़ी से होगा। दक्षिण भारत में नारियल बागों में रुगोस स्पैरालिंग सफेद मक्खी के फैलाव पर जागरूकता पैदा करने के लिए भा.कृ.अ.प.-अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना केंद्र ने तमिलनाडु और आन्ध्र प्रदेश में कृषक समूह को संवेदनशील बनाने के लिए जागरूकता कार्यक्रम और क्षेत्र दौरा आयोजित किया। संवेदीकरण कार्यक्रम में रुगोस सफेद मक्खी के परजीवी एनकार्सिया प्रजाति का प्रकोपित क्षेत्रों में जैव-नियंत्रण प्रणाली के रूप में प्राकृतिक रूप से विकसित करने पर ध्यान दिया जा रहा है।

तमिलनाडु

रुगोस स्पैरालिंग सफेद मक्खी से प्रकोपित नारियल बागों में 12 अक्तूबर 2018 को श्री दक्षिणामूर्ति, भाप्रसे, कृषि निदेशक, तमिलनाडु, श्री रासु, कृषि उप निदेशक, (पौधा संरक्षण), कृषि संयुक्त निदेशक (कोयंबत्तूर जिला), डा.के.वेंकटेशन, प्रोफसर एवं अध्यक्ष, सीआरएस, अलियारनगर, डा.के.राजमानिक्यम, कीटविज्ञान प्रोफसर, डा.टी. श्रीनिवासन, सहायक प्रोफसर (कीटविज्ञान), पोल्लाच्ची (उत्तर), पोल्लाच्ची दक्षिण और आनमलै ब्लॉकों के सहायक निदेशक (कृषि)

तमिलनाडु में संपन्न कार्यशाला के दृश्य

सहित एक टीम ने संयुक्त क्षेत्र दौरा किया। सीआरएस, अलियारनगर द्वारा अप्रैल 2017 से ओडयाकुलम (आनमलै), अवलप्पाम्पट्टी (पोल्लाच्ची), टी.के. पुदूर (पोल्लाच्ची), आरआरएस, पय्यूर (कृष्णगिरी जिला) और सीआरएस, अलियारनगर में रुगोस स्पैरालिंग सफेद मक्खी के फैलाव एवं प्रबंधन उपायों के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनमें लगभग 400 किसानों ने भाग लिया।

आन्ध्र प्रदेश

सर्वश्री कृषिवला नारियल उत्पादक कंपनी द्वारा रोल्लापालम गाँव में 12 जनवरी 2018 को आयोजित बैठक में स्पैरालिंग सफेद मक्खी एवं इसके प्रबंधन उपायों के बारे

जागरूकता कार्यक्रम का दृश्य

में जागरूकता कार्यक्रम संपन्न हुआ। 17 जनवरी 2018 को पूर्व गोदावरी जिले के कडियपुलंका गाँव में सफेद मक्खी से प्रकोपित नारियल नर्सरियों में डा.पी.कालिदास, प्रधान वैज्ञानिक (कीटविज्ञान), आईआईओपीआर, पेडावेगी और कोणासीमा क्षेत्र से किसानों ने नैदानिक दौरा किया और बागवानी विभाग द्वारा 19 जनवरी 2018 को जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया तथा डा.एन.बी.वी.चलपति राव, बागवानी अनुसंधान स्टेशन, अंबाजीपेटा ने आक्रामक कीट के खिलाफ लेनेवाले प्रबंधन उपायों के बारे में विवरण दिया। कलवप्पल्ली गाँव, पश्चिम गोदावरी जिला में 20 जनवरी 2018 को और रामबिल्ली गाँव, विशाखपट्टनम जिले में 5 जनवरी 2018 को भी जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए।

नीरा - मैसूरु-बेंगलूरु सड़क यात्रियों के बीच बन गई लोकप्रिय

नारियल के पुष्पगुच्छ से निकालती अत्यधिक पौष्टिक स्वास्थ्य पेय नीरा एक कुदरती स्वास्थ्य पेय के रूप में विश्व भर में लोकप्रियता प्राप्त कर रही है। यह नारियल पेड़ से प्राप्त दूसरी तोहफा है। ताड़ी से भिन्न नीरा का अद्भुत स्वास्थ्य लाभ है और यह नशा रहित है।

कर्नाटक राज्य सरकार ने नीरा के स्वास्थ्य लाभों को पहचानकर नीरा नीति पर एक अंतिम राजपत्र अधिसूचना जारी की है। राज्य के नारियल किसानों को अब अपने नारियल पेड़ से नीरा उतारने की अनुमति है।

श्री एस.एन.सिद्धेगौडा अपने नीरा ज्यूस पार्लर के सामने

श्री एस.एन.सिद्धेगौडा ने मंड्या जिले के तुबिनाकेरे गाँव के पास मैसूरु-बेंगलूरु हाइवे पर एक नीरा ज्यूस पार्लर खोला है, जो यात्रियों के बीच लोकप्रिय बन गया है। यहाँ 15 रुपए प्रति गिलास की दर पर प्रति दिन 60 लीटर नीरा की बिक्री होती है। किसान सिद्धेगौडा को नीरा की सीधी आपूर्ति करते हैं।

नीरा पार्लर में इसके स्वास्थ्य लाभ और पोषण संघटकों को दर्शानेवाला पोस्टर प्रदर्शित किया गया है। उन्होंने केंद्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान (सीएफटीआरआई) से प्राप्त प्रमाणपत्र भी प्रदर्शित किया है जो बताता है कि नीरा शराबी पेय नहीं है बल्कि पौष्टिक है।

सिद्धेगौडा ने तुबिनाकेरे में नारियल पेड़ों को पट्टे पर लिया है और वे प्रति दिन लगभग 100 लीटर नीरा उतारते हैं। कुछ ग्राहक नीरा के लिए सीधे नारियल बाग का दौरा करते हैं और सप्ताहांत में मांग बढ़ जाती है।

सिद्धेगौडा के अनुसार किसानों की कोशिशों के फलस्वरूप सरकार ने आबकारी अधिनियम में संशोधन किया और नीरा उतारने की अनुमति दी। नीरा टैप्पिंग संकटग्रस्त नारियल किसानों की मदद करने और नारियल पेड़ की सुरक्षा के लिए भी एक शानदार तरीका है।

सेवानिवृत्ति

श्री बाबू एन. श्रीनिलयम, सहायक, मुख्यालय, कोची 30 साल की सेवा के बाद 28.02.2018 को बोर्ड की सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने 29 अक्तूबर, 1987 को बोर्ड में सेवा प्रारंभ की थी।

स्वीडिश टीम ने केरल में ओणाट्टुकरा नारियल उत्पादक कंपनी का दौरा किया

नारियल उत्पादक कंपनी द्वारा विकसित विभिन्न नारियल आधारित उत्पादों के बारे में वैयक्तिक रूप से अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए श्री आन्डेर्सन लिमेस के नेतृत्व में एक स्वीडिश टीम ने ओणाट्टुकरा नारियल उत्पादक कंपनी का दौरा किया और नारियल उत्पादक कंपनी की गतिविधियों की सराहना की। टीम ने कंपनी द्वारा उत्पादित विभिन्न नारियल आधारित उत्पाद जैसे डाब पानी, चटनी पाउडर, नारियल स्क्वैश और चिप्स की मज़ा ली। कंपनी ने स्वीडन में स्थित सहकारी समितियों में से एक में अपने ब्रैंडेड प्रीमियम ब्रैंड के नारियल तेल का परिचय दिया था जिससे टीम को नारियल तेल के विभिन्न औषधीय लाभों के बारे में जानकारी प्राप्त करने का अवसर मिला और वे ओणाट्टुकरा नारियल उत्पादक कंपनी द्वारा निर्मित प्रीमियम ब्रैंड के नारियल तेल से प्रभावित भी हुए। टीम ने स्वीडन में कंपनी के नारियल आधारित विभिन्न उत्पादों का परिचय एवं आयात करने का वादा किया।

स्वीडिश टीम ओणाट्टुकरा नारियल उत्पादक कंपनी में निर्मित उत्पादों के बारे में जानकारी लेते हुए

डेस्टिनेशन गोवा

नारियल विकास बोर्ड के क्षेत्रीय कार्यालय, बंगलूरु ने रवींदर भवन, मडगाँव, गोवा में 2 से 4 फरवरी 2018 तक संपन्न मेगा प्रदर्शनी डेस्टिनेशन गोवा-2018 में भाग लिया। श्री नरेंद्र सवायकर, सांसद, दक्षिण गोवा ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। नारियल विकास बोर्ड ने विविध किस्मों के नारियल गुच्छ, पोस्टर, नारियल के मूल्य वर्धित उत्पाद, नारियल हस्तशिल्प एवं नारियल लकड़ी आधारित वस्तुएं प्रदर्शित किए। बोर्ड के अधिकारियों ने नारियल की वैज्ञानिक खेती तथा बोर्ड की योजनाओं पर तकनीकी समस्याओं का समाधान किया। सर्वश्री केराटेक (प्रा) लिमिटेड ने बोर्ड के स्टाल में अपने उत्पादों व सेवाओं को प्रदर्शित किया।

बोर्ड के स्टाल का दृश्य

नारियल खेती प्रौद्योगिकी पर प्रशिक्षण कार्यक्रम पुरी में संपन्न

नारियल विकास बोर्ड, राज्य केंद्र, पित्तापल्ली, ओड़िशा ने 16 फरवरी 2018 को पुरी जिले में ब्लॉक स्तर पर नारियल खेती प्रौद्योगिकी पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। डा.बिश्वनाथ राठ, बोर्ड सदस्य, नाविबो ने स्वागत भाषण दिया और डा.रजत कुमार पाल, उप निदेशक, राज्य केंद्र, ओड़िशा ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

बाद में संपन्न तकीकी सत्र में श्री देबदास दत्ता, सहायक बागवानी अधिकारी, सत्यबाडी ब्लॉक ने पुरी जिले में नारियल खेती बढ़ाने के लिए की जानेवाली गतिविधियों के बारे में कहा। डा.रजत कुमार पाल ने निदर्शन प्लॉटों की स्थापना योजना पर ज़ोर देकर नारियल विकास बोर्ड की योजनाओं पर बात की। डा.एस.सी. साहू, एसोसियेट प्रोफसर एवं प्रभारी अधिकारी, अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना, ओड़िशा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय ने नारियल खेती प्रौद्योगिकियों जैसे मातृ-वृक्ष चयन, पौध चयन, नर्सरी प्रबंधन, रोपण के वैज्ञानिक तरीके, अंतरा-खेती प्रचालन, एकीकृत पोषण प्रबंधन, नारियल में एकीकृत कीट एवं रोग प्रबंधन पर भाषण दिया।

डा. रजत कुमार पाल, उप निदेशक, नाविबो उद्घाटन भाषण देते हुए

श्रीमती नीतु थोमस, तकनीकी अधिकारी, नाविबो ने नारियल के मूल्य वर्धन पर बात की और नारियल के विविध मूल्य वर्धित उत्पाद जैसे विर्जिन नारियल तेल, चिप्स, सिरका, डेसिकेटड नारियल, नारियल दूध, कयर आधारित उत्पाद एवं छिलका आधारित उत्पादों के बारे में विवरण दिया।

बातचीत सत्र के दौरान किसानों ने नारियल खेती, नाविबो योजना, मूल्य वर्धन, नारियल उत्पादक समितियों के गठन आदि के बारे में प्रश्न उठाए। नाविबो अधिकारियों ने किसानों की समस्याओं का समाधान किया। सत्यबाडी नारियल खेती के लिए परंपरागत एवं बहुत ही संभावित क्षेत्र है। प्रशिक्षण कार्यक्रम किसानों को नारियल की वैज्ञानिक खेती संबंधी पहलुएं, नारियल के मूल्य वर्धन, नारियल विकास बोर्ड की योजनाएं आदि पर जानकारी प्राप्त करने के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम सहायक बन गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में लगभग 65 किसानों ने भाग लिया। श्रीमती नीतु थोमस के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

बनाना फेस्टिवल

नारियल विकास बोर्ड ने कल्लियूर, तिरुवनंतपुरम, केरल में 17 से 21 फरवरी 2018 को संपन्न नेशनल बनाना फेस्टिवल (एनबीएफ) 2018 में भाग लिया। श्री राधा मोहन सिंह, माननीय केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

श्री राधा मोहन सिंह, माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री ने बोर्ड के स्टाल का दौरा किया और बोर्ड के अधिकारियों एवं उद्यमियों से बातचीत की। बोर्ड के स्टाल में सर्वश्री कैप्पुषा नारियल उत्पादक कंपनी, कोल्लम, सर्वश्री प्यूपिल्स नारियल उत्पादक संघ, सर्वश्री दिनेश फुड्स,

माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह बोर्ड के स्टाल में

श्री सुरेष गोपी, सांसद (राज्य सभा) ने एनबीएफ 2018 के भाग स्वरूप संपन्न प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। नारियल विकास बोर्ड ने विभिन्न मूल्य वर्धित उत्पाद, बोर्ड के प्रकाशन तथा नारियल पर सूचनात्मक पोस्टर प्रदर्शित किए।

सर्वश्री केराटेक और श्री प्रतापन, नारियल हस्तशिल्प निर्माता ने अपने उत्पादों को प्रदर्शित किया। श्री सुरेष गोपी, सांसद (राज्य सभा), एड्वोकेट वी.एस. सुनिल कुमार, कृषि मंत्री, केरल सरकार, श्री ओ.राजगोपाल, विधायक और

एड्वोकेट वी.एस. सुनिल कुमार, कृषि मंत्री, केरल

श्री सुरेष गोपी, सांसद (राज्य सभा)

श्री मोहनन मास्टर, बोर्ड सदस्य

श्री ओ. राजगोपाल, विधायक

श्री पी.आर. मुरलीधरन एवं श्री मोहनन मास्टर, नाविबो सदस्य ने बोर्ड के स्टाल का दौरा किया।

बनाना फेस्टिवल प्रदर्शनी ने केले के बारे में सबकुछ प्रदर्शित किया और किसानों तथा आम जनता को इसके बहुमुखी उपयोगों के बारे में नयी सूचनाएं प्रदान कीं। केंद्र एवं राज्य सरकार विभागों, संस्थानों तथा विश्वविद्यालयों, गैर सरकारी संगठनों, स्वयं सेवा समूहों और किसान समूहों सहित पूरे भारत से 200 से अधिक प्रदर्शकों ने अपने उत्पादों तथा सेवाओं को प्रदर्शित किया।

पाँच दिवसीय मेले में राष्ट्रीय संगोष्ठी, प्रशिक्षण कार्यक्रम, किसान बैठक तथा अन्य गतिविधियाँ शामिल हैं। मेले ने नवीन जानकारी तथा प्रवृत्तियाँ अद्यतन करने के अलावा भागीदारों को नेटवर्किंग एवं लाभकर सहयोग बनाने के लिए अवसर प्रदान किया। विज्ञान एवं सामाजिक कार्यवाही में नवीनता केंद्र (सीआईएसएसए) ने कल्लियूर ग्राम पंचायत की भागीदारी और राष्ट्रीय एवं राज्य संगठनों की मेज़बानी में मेला आयोजित की।

कोकोनट फेस्टिवल 2018

नारियल विकास बोर्ड के क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै ने कोन्फेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्री, कोयंबत्तूर ज़ोन द्वारा 27 से 28 जनवरी 2018 तक कोडिसिया ट्रेड फेयर कोम्पलक्स, कोयंबत्तूर में आयोजित कोकोनट फेस्टिवल 2018 में भाग लिया।

श्री सी.पी.राधाकृष्णन, अध्यक्ष, कयर बोर्ड ने श्री एस.जे,चीरु, भाप्रसे, प्रधान सचिव और आयुक्त, कृषि विपणन और कृषि व्यवसाय, तमिलनाडु सरकार, डा.के.रामसामी, उप कुलपति, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, डा.पी.चौडप्पा, निदेशक, भा.कृ.अ.प.-कें.रो.फ.अ.सं., डा.सी.अनंतरामकृष्णन, निदेशक, भारतीय खाद्य प्रौद्योगिकी संस्था और श्री एस.नारायण, अध्यक्ष, सीआईआई-कोयंबत्तूर ज़ोन की उपस्थिति में कोकोनट फेस्टिवल 2018 का उद्घाटन किया। केंद्र और राज्य सरकार के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी इस अवसर पर उपस्थित थे। कोकोनट फेस्टिवल का विषय था -'प्रति पेड़ अधिक फल, प्रति फल अधिक मूल्य।'

कोकोनट फेस्टिवल के दौरान दो दिवसीय प्रदर्शनी एवं हितधारक सम्मेलन आयोजित किया गया था। उद्घाटन सत्र के दौरान 'भारतीय नारियल उद्योग में मूल्य वर्धन का हस्तक्षेप' पर रिपोर्ट जारी की गयी थी। कोकोनट फेस्टिवल के सिलसिले में तकनीकी सत्र में 'खेती पर और खेती के बाहर नारियल में मूल्य वर्धन' पर दो दिवसीय सम्मेलन आयोजित हुए।

कोकोनट फेस्टिवल 2018 में 48 प्रदर्शकों ने भाग लिए जिनमें एशियन और पसेफिक कोकोनट कम्यूनिटी, विभिन्न केंद्र/राज्य सरकार संस्थानों जैसे भा.कृ.अ.प. - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, भारतीय खाद्य प्रौद्योगिकी संस्था, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय तथा कृषि विपणन

बोर्ड के स्टाल में दर्शकगण

और कृषि व्यवसाय, तमिलनाडु सरकार शामिल हैं। प्रदर्शनी में मशीनों, उपकरणों, कृषि आदान सामग्री आपूर्तीकर्ताओं और नारियल उद्योग में अल्प संसाधित उत्पादों के प्रमुख निर्माताओं ने अपने उत्पादों को प्रदर्शित किया।

क्षेत्रीय कार्यालय, नारियल विकास बोर्ड, चेन्नै ने प्रदर्शनी में भाग लिया। बोर्ड ने विभिन्न किस्मों के नारियल गुच्छों के अलावा विभिन्न मूल्य वर्धित नारियल उत्पादें जैसे डाब पानी, सिरका, नाटा-डी-कोको, नारियल दूध पाउडर, नारियल क्रीम, डेसिकेटड नारियल, विर्जिन नारियल तेल, नीरा, नीरा शक्कर, नीरा गुड़, नीरा शहद, नीरा चाकलेट, नीरा बिस्कुट, नीरा कैन्डी, नारियल खोपड़ी पाउडर, सक्रियित कार्बन, नारियल कयर/खोपड़ी/लकड़ी से निर्मित हस्तशिल्प और सूचनापरक पोस्टर, बैनर, चार्ट प्रदर्शित किए। नारियल विकास बोर्ड के पवलियन में मूल्य वर्धन, वैज्ञानिक नारियल खेती, नारियल नर्सरी प्रबंधन आदि के बारे में लीफलेट, पुस्तिकायें आदि वितरित भी किए गए। इस अवसर पर बोर्ड की अंग्रेज़ी, हिन्दी, तमिल और मलयालम पत्रिकाओं और अन्य प्रकाशनों को भी वितरित किए गए।

विभिन्न निर्माता/नारियल उत्पादक कंपनियाँ जैसे सर्वश्री पोल्लाच्ची नारियल उत्पादक कंपनी लिमिटेड, सर्वश्री कोयंबत्तूर नारियल उत्पादक कंपनी लिमिटेड, सर्वश्री विनायक नारियल उत्पादक कंपनी लिमिटेड, सर्वश्री उदुमलपेट मटत्तुकुलम नारियल उत्पादक कंपनी लिमिटेड, सर्वश्री कर्पगा वृक्षम नारियल उत्पादक कंपनी लिमिटेड, सर्वश्री अन्नामलै नारियल उत्पादक कंपनी लिमिटेड, सर्वश्री वटकरा नारियल किसान उत्पादक कंपनी लिमिटेड, सर्वश्री पालक्काट नारियल उत्पादक कंपनी लिमिटेड, मुतलमटा, सर्वश्री मधुरा अग्रो प्रोसस प्रा.लिमिटेड, कोयंबत्तूर, सर्वश्री शक्ति कोको प्रोडक्ट्स, पोल्लाच्ची, सर्वश्री वेट्री विर्जिन नारियल तेल, पोल्लाच्ची, सर्वश्री केराटेक नारियल तेल निर्माता कंपनी (प्रा)लिमिटेड, त्रुश्शूर और सर्वश्री दिनेश फुड्स, कण्णूर ने भाग लिए और बोर्ड के बैनर के अधीन अपने उत्पादों को प्रदर्शित किए।

प्रदर्शनी में अंतर्राष्ट्रीय और देशीय विशेषज्ञ उपस्थित थे जिन्होंने नारियल क्षेत्र के लिए बड़ा पेशेवर मंच बनाया। श्री सी.पी.राधाकृष्णन, अध्यक्ष, कयर बोर्ड के साथ राज्य और केंद्र सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों ने बोर्ड के स्टाल का दौरा किया और मूल्य वर्धित नारियल उत्पादों के बारे में पूछताछ की। देश के विविध भागों से किसानों, बिजनेस समुदायों, विभिन्न राज्य एवं केंद्र सरकारी अधिकारियों, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों सहित पचास से अधिक दर्शकों ने बोर्ड के स्टाल का दौरा किया।

नाविबो में गणतंत्र दिवस मनाया गया

बोर्ड के मुख्यालय में 26 जनवरी 2018 को गणतंत्र दिवस मनाया गया। श्री आर.ज्ञानदेवन, उप निदेशक ने प्रातः 8.30 बजे मुख्यालय के प्रांगण में राष्ट्र ध्वज फहराया। बोर्ड के अधिकारी एवं कर्मचारीगण इस अवसर पर उपस्थित हुए।

बाज़ार समीक्षा

दिसंबर 2017

देशीय भाव

नारियल तेल

नारियल तेल का भाव दिसंबर 2017 के दौरान कोची और आलप्पुषा बाज़ारों में प्रति क्विंटल 19000 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 21300 रुपए पर खुला। महीने के दौरान तीनों बाज़ारों में नारियल तेल के भाव में बढ़ाव का रुख रहा।

कोची और आलप्पुषा बाज़ारों में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 1400 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 20400 रुपए पर बंद हुआ। कोषिक्कोट बाज़ार में 700 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 22000 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 17333 रुपए पर खुला और मिश्रित रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 1800 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 19133 रुपए पर बंद हुआ।

पेषण खोपरा

प्रमुख बाज़ारों में पेषण खोपरे का भाव नारियल तेल के भाव के अनुरूप रहा। महीने के दौरान पेषण खोपरे का भाव कोची बाज़ार में प्रति क्विंटल 13800 रुपए, आलप्पुषा बाज़ार में 12600 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 13900 रुपए पर खुला। महीने के दौरान तीनों बाज़ारों में पेषण खोपरे के भाव में मिश्रित रुख दर्शित हुआ।

कोची बाज़ार में भाव प्रति क्विंटल 500 रुपए, आलप्पुषा बाज़ार में 800 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में 400 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ प्रति क्विंटल क्रमशः 14300 रुपए, 13400 रुपए और 14300 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में भाव में बढ़ाव का रुख रहा। भाव 12300 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल 600 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 12900 रुपए पर बंद हुआ।

खाद्य खोपरा

कोषिक्कोट बाज़ार में राजापुर खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 15000 रुपए पर खुला और महीने के दौरान भाव में मिश्रित रुख रहा और प्रति क्विंटल 300 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 15300 रुपए पर बंद हुआ।

गोल खोपरा

तिप्तुर बाज़ार में गोल खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 12600 रुपए पर खुला और महीने के दौरान थोडा बढ़ाव का रुख रहा और प्रति क्विंटल 800 रुपए के लाभ के साथ 13400 रुपए पर बंद हुआ।

सूखा नारियल

कोषिक्कोट बाज़ार में सूखा नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 9350 रुपए पर खुला। महीने के दौरान भाव में बढ़ाव का रुख रहा और प्रति क्विंटल 850 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 10200 रुपए पर बाज़ार बंद हुआ।

नारियल

नेटुमंगाट बाज़ार में आंशिक रूप में छिले नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 21000 रुपए पर खुला और प्रति हज़ार फल 1200 रुपए के लाभ के साथ 22200 रुपए पर बंद हुआ। तमिलनाडु के पोल्लाच्ची बाज़ार में नारियल का भाव 19000 रुपए पर खुला और प्रति हज़ार फल 1000 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 20000 रुपए पर बंद हुआ। बैंगलूर एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिले नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 18500 रुपए पर खुला और महीने के दौरान प्रति हज़ार फल 500 रुपए के घाटे सहित 18000 रुपए पर बंद हुआ। मैंगलूर एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिले ग्रेड-1 गुणवत्ता के नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 22,500 रुपए पर खुला और पूरे महीने उसी पर स्थिर रहा।

डाब

कर्नाटक के मद्दूर एपीएमसी बाज़ार में डाब का भाव प्रति हज़ार फल 10000 रुपए पर खुलकर पूरे महीने उसी भाव पर स्थिर रहा।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

नारियल तेल

प्रमुख नारियल तेल उत्पादक देशों में नारियल तेल के अंतर्राष्ट्रीय एवं देशीय भाव में महीने के दौरान अनियमित रुख रहा। विविध अंतर्राष्ट्रीय/देशीय बाज़ारों में नारियल तेल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

नारियल

फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, श्रीलंका और भारत के विविध देशीय बाज़ारों में नारियल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

खोपरा

महीने के दौरान फिलीपीन्स और इंडोनेशिया के बाज़ारों में खोपरे के भाव में घटाव का रुख दर्शित हुआ जबकि श्रीलंका और भारत में खोपरे के भाव में मिश्रित रुख रहा। विविध देशीय बाज़ारों में खोपरे का भाव सारणी में दर्शित है।

जनवरी 2018

देशीय भाव

नारियल तेल

नारियल तेल का भाव जनवरी 2018 के दौरान कोची और आलप्पुषा बाज़ारों में प्रति क्विंटल 20400 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 22000 रुपए पर खुला। महीने के दौरान कोची और आलप्पुषा बाज़ारों में नारियल तेल के भाव में संपूर्ण घटाव का रुख रहा जबकि कोषिक्कोट बाज़ार में बढ़ाव का रुख रहा।

कोची और आलप्पुषा बाज़ारों में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 600 रुपए के शुद्ध घाटे के साथ 19800 रुपए पर बंद हुआ और कोषिक्कोट बाज़ार में 100 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 22100 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 19133 रुपए पर खुला और मिश्रित रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 800 रुपए के शुद्ध घाटे के साथ 18333 रुपए पर बंद हुआ।

पेषण खोपरा

महीने के दौरान पेषण खोपरे का भाव कोची बाज़ार में प्रति क्विंटल 14300 रुपए, आलप्पुषा बाज़ार में 13400 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 14400 रुपए पर खुला। महीने के दौरान कोची और आलप्पुषा बाज़ारों में पेषण खोपरे के भाव में संपूर्ण घटाव का रुख दर्शित हुआ जबकि कोषिक्कोट बाज़ार में घट-बढ़ का रुख रहा।

कोची बाज़ार में भाव प्रति क्विंटल 600 रुपए और आलप्पुषा बाज़ार में 350 रुपए शुद्ध घाटे के साथ प्रति क्विंटल क्रमशः 13700 रुपए और 13050 रुपए पर बंद हुआ। कोषिक्कोट बाज़ार में 50 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 14450 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में भाव 12900 रुपए पर खुलकर बंद हुआ।

खाद्य खोपरा

कोषिक्कोट बाज़ार में राजापुर खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 15300 रुपए पर खुला और भाव में महीने के दौरान मिश्रित रुख रहा और प्रति क्विंटल 900 रुपए के शुद्ध घाटे के साथ 14400 रुपए पर बंद हुआ।

गोल खोपरा

तिप्तुर बाज़ार में गोल खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 13550 रुपए पर खुला और महीने के दौरान मिश्रित रुख रहा और प्रति क्विंटल 150 रुपए के घाटे के साथ 13400 रुपए पर बंद हुआ।

सूखा नारियल

कोषिक्कोट बाज़ार में सूखा नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 10200 रुपए पर खुला। महीने के दौरान भाव में बढ़ाव का रुख रहा और प्रति क्विंटल 550 रुपए के शुद्ध घाटे के साथ 9650 रुपए पर बाज़ार बंद हुआ।

नारियल

नेटुमंगाट बाज़ार में आंशिक रूप में छिले नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 22000 रुपए पर खुला और प्रति हज़ार फल 2000 रुपए के घाटे के साथ 20000 रुपए पर बंद हुआ। तमिलनाडु के पोल्लाच्ची बाज़ार में नारियल का भाव 20000 रुपए पर खुला और प्रति हज़ार फल 1000 रुपए के शुद्ध घाटे के साथ 19000 रुपए पर बंद हुआ। बैंगलूर एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिले नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 18000 रुपए पर खुला और महीने के दौरान प्रति हज़ार फल 500 रुपए के घाटे सहित 17500 रुपए पर बंद हुआ। मैंगलूर एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिले ग्रेड-1 गुणवत्ता के नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 25000 रुपए पर रहा।

डाब

कर्नाटक के मद्दूर एपीएमसी बाज़ार में डाब का भाव प्रति हज़ार फल 10000 रुपए पर खुलकर पूरे महीने उसी भाव पर स्थिर रहा।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

नारियल तेल

इंडोनेशिया और भारत में नारियल तेल के अंतर्राष्ट्रीय एवं देशीय भाव में महीने के दौरान घटाव का रुख रहा जबकि फिलीपीन्स देशीय बाज़ार में घट-बढ़ का रुख रहा। विविध अंतर्राष्ट्रीय/देशीय बाज़ारों में नारियल तेल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

नारियल

फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, श्रीलंका और भारत के विविध देशीय बाज़ारों में नारियल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

खोपरा

महीने के दौरान फिलीपीन्स, इंडोनेशिया और भारत के बाज़ारों में खोपरे के भाव में संपूर्ण घटाव का रुख दर्शित हुआ जबकि श्रीलंका में खोपरे के भाव में थोडा बढ़ाव का रुख रहा। विविध देशीय बाज़ारों में खोपरे का भाव सारणी में दर्शित है।

फरवरी 2018

देशीय भाव

नारियल तेल

नारियल तेल का भाव फरवरी 2018 के दौरान कोची और आलप्पुषा बाज़ारों में प्रति क्विंटल 19800 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 22000 रुपए पर खुला। महीने के दौरान तीनों बाज़ारों में नारियल तेल के भाव में संपूर्ण घटाव का रुख रहा।

कोची बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 200 रुपए के शुद्ध घाटे के साथ 19600 रुपए पर बंद हुआ और आलप्पुषा बाज़ार में 100 रुपए के शुद्ध घाटे के साथ 19700 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में 1000 रुपए के शुद्ध घाटे के साथ 21000 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 18333 रुपए पर खुला और मिश्रित रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 333 रुपए के शुद्ध घाटे के साथ 18000 रुपए पर बंद हुआ।

पेषण खोपरा

महीने के दौरान पेषण खोपरे का भाव कोची बाज़ार में प्रति क्विंटल 13700 रुपए, आलप्पुषा बाज़ार में 13050 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 14400 रुपए पर खुला। महीने के दौरान तीनों बाज़ारों में पेषण खोपरे के भाव में संपूर्ण घटाव का रुख रहा।

कोची बाज़ार में भाव प्रति क्विंटल 700 रुपए, आलप्पुषा बाज़ार में 50 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में 1200 रुपए शुद्ध घाटे के साथ कोची और आलप्पुषा बाज़ार में प्रति क्विंटल 13000 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में 13200 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में भाव प्रति क्विंटल12900 रुपए पर खुलकर प्रति क्विंटल 400 रुपए के शुद्ध घाटे के साथ 12500 रुपए पर बंद हुआ।

खाद्य खोपरा

कोषिक्कोट बाज़ार में राजापुर खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 14400 रुपए पर खुला और भाव में महीने के दौरान मिश्रित रुख रहा और प्रति क्विंटल 400 रुपए के शुद्ध घाटे के साथ 14000 रुपए पर बंद हुआ।

गोल खोपरा

तिप्तुर बाज़ार में गोल खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 13200 रुपए पर खुला और महीने के दौरान मिश्रित रुख रहा और प्रति क्विंटल 450 रुपए के घाटे के साथ 12750 रुपए पर बंद हुआ।

सूखा नारियल

कोषिक्कोट बाज़ार में सूखा नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 9650 रुपए पर खुला। महीने के दौरान भाव में घटाव का रुख रहा और प्रति क्विंटल 100 रुपए के शुद्ध घाटे के साथ 9550 रुपए पर बाज़ार बंद हुआ।

नारियल

नेटुमंगाट बाज़ार में आंशिक रूप में छिले नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 20400 रुपए पर खुला और प्रति हज़ार फल 1800 रुपए के लाभ के साथ 20400 रुपए पर बंद हुआ। तमिलनाडु के पोल्लाच्ची बाज़ार में नारियल का भाव 19000 रुपए पर खुला और प्रति हज़ार फल 1000 रुपए के शुद्ध घाटे के साथ 18000 रुपए पर बंद हुआ। बैंगलूर एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिले नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 20000 रुपए पर खुला और महीने के दौरान प्रति हज़ार फल 5000 रुपए के लाभ सहित 25000 रुपए पर बंद हुआ। मैंगलूर एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिले ग्रेड-1 गुणवत्ता के नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 25000 रुपए रहा।

डाब

कर्नाटक के मद्दूर एपीएमसी बाज़ार में डाब का भाव प्रति हज़ार फल 10000 रुपए पर खुलकर पूरे महीने उसी भाव पर स्थिर रहा।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

नारियल तेल

फिलीपीन्स, इंडोनेशिया और भारत में नारियल तेल के अंतर्राष्ट्रीय एवं देशीय भाव में महीने के दौरान घटाव का रुख रहा। विविध अंतर्राष्ट्रीय/देशीय बाज़ारों में नारियल तेल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

नारियल

फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, श्रीलंका और भारत के विविध देशीय बाज़ारों में नारियल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

खोपरा

महीने के दौरान फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, श्रीलंका और भारत के बाज़ारों में खोपरे के भाव में संपूर्ण घटाव का रुख दर्शित हुआ। विविध देशीय बाज़ारों में खोपरे का भाव सारणी में दर्शित है।

बाज़ार भाव-देशीय

दिसंबर 2017

तारीख	नारियल तेल				पेषण खोपरा				खाद्य खोपरा	गोल खोपरा		सूखा नारियल	आंशिक रूप से छिले नारियल				डाब
	(रु. / क्वि.)											(रु./1000 फल)					
	कोची	आलप्पुषा	कोषि़क्कोट	कंगयम	कोची (एफएक्यू)	आलप्पुषा (राशि खोपरा)	कोषि़क्कोट	कंगयम	कोषि़क्कोट	तिप्तूर	अरसिकेरे	कोषि़क्कोट	नेटुमंगाट	पोल्लाच्ची	बैंगलूर	मैंगलूर (ग्रेड-1)	मदुर
01.12.2017	19000	19000	21300	17333	13800	12600	13900	12300	15000	12600	रि.प्रा.नहीं	9350	21000	19000	18500	22500	10000
10.12.2017	19700	19400	21600	19333	14500	12800	14200	12700	15800	13000	रि.प्रा.नहीं	9650	21000	20000	18500	22500	10000
17.12.2017	20300	20300	21900	19000	15000	13300	14400	12800	15000	13000	रि.प्रा.नहीं	9900	22200	20000	18000	22500	10000
24.12.2017	20200	20200	21700	18667	14100	13250	14000	12900	14400	13000	रि.प्रा.नहीं	10200	22200	20000	18000	22500	10000
31.12.2017	20400	20400	22000	19133	14300	13400	14300	12900	15300	13400	रि.प्रा.नहीं	10200	22200	20000	18000	22500	10000

जनवरी 2018

तारीख	नारियल तेल				पेषण खोपरा				खाद्य खोपरा	गोल खोपरा		सूखा नारियल	आंशिक रूप से छिले नारियल				डाब
	(रु. / क्वि.)											(रु./1000 फल)					
	कोची	आलप्पुषा	कोषि़क्कोट	कंगयम	कोची (एफएक्यू)	आलप्पुषा (राशि खोपरा)	कोषि़क्कोट	कंगयम	कोषि़क्कोट	तिप्तूर	अरसिकेरे	कोषि़क्कोट	नेटुमंगाट	पोल्लाच्ची	बैंगलूर	मैंगलूर (ग्रेड-1)	मदुर
01.01.2018	20400	20400	22000	19133	14300	13400	14400	12900	15300	13550	रि.प्रा.नहीं	10200	22000	20000	18000	25000	10000
07.01.2018	20400	20400	22200	18667	14300	13400	14400	13000	15100	13000	रि.प्रा.नहीं	9950	22000	20000	18000	25000	10000
14.01.2018	20100	20100	22000	18333	14000	13200	14200	12800	14700	13400	रि.प्रा.नहीं	9950	22000	19000	18000	25000	10000
21.01.2018	20000	20000	22100	18333	13900	13150	14500	12800	14800	13500	रि.प्रा.नहीं	9750	22000	19000	17500	25000	10000
28.01.2018	20000	20000	22100	18333	13900	13150	14500	13000	14400	13400	रि.प्रा.नहीं	9750	22000	19000	17500	25000	10000
31.01.2018	19800	19800	22100	18333	13700	13050	14450	12900	14400	13400	रि.प्रा.नहीं	9650	20000	19000	17500	25000	10000

फरवरी 2018

तारीख	नारियल तेल				पेषण खोपरा				खाद्य खोपरा	गोल खोपरा		सूखा नारियल	आंशिक रूप से छिले नारियल				डाब
	(रु. / क्वि.)											(रु./1000 फल)					
	कोची	आलप्पुषा	कोषि़क्कोट	कंगयम	कोची (एफएक्यू)	आलप्पुषा (राशि खोपरा)	कोषि़क्कोट	कंगयम	कोषि़क्कोट	तिप्तूर	अरसिकेरे	कोषि़क्कोट	नेटुमंगाट	पोल्लाच्ची	बैंगलूर	मैंगलूर (ग्रेड-1)	मदुर
01.02.2018	19800	19800	22000	18333	13700	13050	14400	12900	14400	13200	रि.प्रा.नहीं	9650	20400	19000	20000	25000	10000
04.02.2018	19800	19800	22000	18200	13700	13050	14400	12900	14800	13100	रि.प्रा.नहीं	9650	20400	19000	20000	25000	10000
11.02.2018	19800	19800	22000	18333	13700	13200	14200	12900	14500	13200	रि.प्रा.नहीं	9650	20400	19000	20000	25000	10000
18.02.2018	19800	19800	21800	18333	13700	13200	14100	13000	14900	12900	रि.प्रा.नहीं	9650	22200	19000	20500	25000	10000
25.02.2018	19700	19700	21500	18333	13500	13100	13800	12700	14600	12900	रि.प्रा.नहीं	9550	22200	19000	25000	25000	10000
28.02.2018	19600	19700	21000	18000	13000	13000	13200	12500	14000	12750	रि.प्रा.नहीं	9550	22200	18000	25000	25000	10000

स्रोत

कोची : कोचिन तेल व्यापारी संघ व वाणिज्य मंडल, कोची-2
कोषि़क्कोट : 'मातृभूमि'
आलप्पुषा : 'मलयाला मनोरमा'
अरसिकेरे : ए पी एम सी, अरसिकेरे
कोषि़क्कोट बाज़ार में 'ऑफीस पास' खोपरे का और आलप्पुषा बाज़ार में 'राशि' खोपरे का बताया गया भाव

बाज़ार भाव-अंतर्राष्ट्रीय

दिसंबर 2017

तारीख	नारियल तेल (यूएस $/ मे.ट.)				नारियल (यूएस $/ मे.ट.)				खोपरा (यूएस $/ मे.ट.)			
	अंतर्राष्ट्रीय	देशीय										
	फिलिपीन्स	फिलिपीन्स	इंडोनेशिया	भारत*	फिलिपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलिपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*
2.12.2017	1514	1481	1490	2973	232	236	446	654	936	827	1485	2164
09.12.2017	1510	1475	1479	3067	202	229	447	669	927	827	1486	2257
16.12.2017	1525	1420	1480	3160	223	217	447	685	893	795	1483	2459
23.12.2017	1427	1375	1474	3144	223	217	447	724	880	795	1497	2195
30.12.2017	1458	1400	1420	3175	223	217	447	724	880	757	1497	2226

जनवरी 2018

तारीख	नारियल तेल (यूएस $/ मे.ट.)				नारियल (यूएस $/ मे.ट.)				खोपरा (यूएस $/ मे.ट.)			
	अंतर्राष्ट्रीय	देशीय										
	फिलिपीन्स	फिलिपीन्स	इंडोनेशिया	भारत*	फिलिपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलिपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*
6.1.2018	1458	1408	1410	3149	225	210	447	309	900	750	1520	2207
13.1.2018	1447	1422	1410	3102	224	210	447	293	910	750	1520	2161
20.1.2018	1410	1369	1362	3087	222	203	447	293	881	749	1528	2145
27.1.2018	1380.	1343	1345	3087	216	200	447	293	831	749	1546	2145

फरवरी 2018

तारीख	नारियल तेल (यूएस $/ मे.ट.)				नारियल (यूएस $/ मे.ट.)				खोपरा (यूएस $/ मे.ट.)			
	अंतर्राष्ट्रीय	देशीय										
	फिलिपीन्स	फिलिपीन्स	इंडोनेशिया	भारत*	फिलिपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलिपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*
03.2.2018	1300	1268	1270	3190	189	200	446	668	788	672	1556	2128
10.2.2018	1257	1240	1270	3190	186	200	443	675	741	651	1561	2128
17.2.2018	1255	1200	1210	3157	186	185	448	668	719	644	1535	2113
24.2.2018	1255	1190	1190	3122	186	182	448	660	716	639	1531	2070

***भारत**

नारियल तेल : कोची बाज़ार
खोपरा : कोची बाज़ार
नारियल : पोल्लाच्ची बाज़ार

नारियल विकास बोर्ड के कार्यालय

मुख्यालय

डा. बी. एन. एस. मूर्ति
अध्यक्ष : 0484 2375216
श्री सरदिंदु दास
मुख्य नारियल विकास अधिकारी : 2375999
श्री आर. मधु
सचिव : 2377737

नारियल विकास बोर्ड
(कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार)
पो.बो.सं. 1021, केरा भवन
कोची - 682 011, केरल, भारत
कार्यालय ईपीएबीएक्स: 2376265, 2376553, 2377266, 2377267

ग्राम्स : KERABOARD
फैक्स : 91 484 2377902
ई-मेल : kochi.cdb@gov.in, cdbkochi@gmail.com
वेबसाइट : www.coconutboard.gov.in

क्षेत्रीय कार्यालय

कर्नाटक
श्री हेमचंद्रा
निदेशक,
क्षेत्रीय कार्यालय सह प्रौद्योगिकी केन्द्र
नारियल विकास बोर्ड, हूलिमावु,
बन्नेरघट्टा रोड
बंगलुरु - 560076.
दू.भा. : 080-26593750, 26593743
फैक्स : 080-26594768
ई-मेल : coconut_dev@dataone.in
cdbroblr@gmail.com

असम
श्री लुम्हार ओबेद
निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय
नारियल विकास बोर्ड, उत्तर पूर्वी
राज्य कार्यालय/ प्रशिक्षण/प्रौद्योगिकी केन्द्र,
हाउसफेड काम्प्लेक्स, (छठा तल),
वायरलेस बसिष्ठा रोड, लास्ट गेट,
दिसपुर, गुवाहटी -781 006
दू.भा. : (0361) 2220632
फैक्स : 0361-2229794
ई-मेल : cdbassam@gmail.com

तमिलनाडु
श्री राजीव भूषण प्रसाद
निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय,
नारियल विकास बोर्ड
सं 47, एफ-1,डा. रामस्वामी शालइ,
के.के. नगर, चेन्नई-600 078
दूर भाष 044- 23662684
23663685
ई-मेल : cdbroc@gmail.com

बिहार
उप निदेशक,
किसान प्रशिक्षण केंद्र सह क्षेत्रीय कार्यालय
नारियल विकास बोर्ड, बीएमपी तालाब के सामने,
जगदेवपथ, फुलवारी रोड़,
डाक-बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय (बी.वी.सी.),
पटना-800014
दू.भा. : (0612) 2272742
फैक्स : 0612- 2272742
E-mail: cdbpatna@gmail.com

राज्य केन्द्र

अन्डमान व निकोबार द्वीप समूह
उप निदेशक, नारियल विकास बोर्ड
मुख्य डाक कार्यालय के पास,
हाउस एम बी सं. 54, गुरुद्वारा लेइन,
पोर्ट ब्लेयर-744 101, दक्षिण अन्डमान
अन्डमान व निकोबार द्वीप समूह
दू.भा. : (03192)-233918
ई-मेल : cdban@rediffmail.com

महाराष्ट्र
उप निदेशक, राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड
फ्लैट नं - 203, दूसरा तल, यूकालिप्टस बिल्डिंग,
घोडबंदर रोड, ठाणे(वेस्ट)-400 610, महाराष्ट्र
दू.भा. : 022-65100106
ई-मेल : cdbthane@gmail.com

ओड़िशा
डा. रजतकुमार पाल
उप निदेशक, राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड
पित्तापल्ली, कुमरबस्ता डाक
खुरदा जिला - 752 055, ओडिशा
दू.भा. : 06755-211505, 212505
ई-मेल : cdborissa@gmail.com

आंध्र प्रदेश
श्री आर. जयनाथ
सहायक निदेशक
राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड, डो.नं.4-123, राजुला बाज़ार
रामवरप्पडु डाक, जिला परिषद हाइ स्कूल के पास
विजयवाड़ा-521108, कृष्णा जिला, आंध्र प्रदेश
टेलीफैक्स नं. 0866-2842323/मोबाइल: 09866479650
ई-मेल: cdbvijap@gmail.com

पश्चिम बंगाल
श्री खोकन देबनाथ
उप निदेशक, राज्य केन्द्र,
नारियल विकास बोर्ड, बी.जे.-108-सेक्टर-11
साल्ट लेक, कोलकात्ता - 700 091
दू.भा. : (033) 23599674, फैक्स : 91 33-23599674
ई-मेल : cdbkolkata@gmail.com

बाज़ार विकास सह सूचना केन्द्र,दिल्ली
श्री वेदपाल सिंह
सहायक निदेशक, नारियल विकास बोर्ड
बाज़ार विकास सह सूचना केन्द्र,120,
हरगोबिन्द एनक्लेव, दिल्ली- 110 092,
दू.भा.: 011-22377805, फैक्स : 011-22377806
ई-मेल : cdbmdic@gmail.com

क्षेत्र कार्यालय, तिरुवनंतपुरम
क्षेत्र कार्यालय, नारियल विकास बोर्ड,
एग्रिकल्चरल अर्बन हॉलसेल मार्केट
(वॅर्ल्ड मार्केट) आनयरा पी.ओ.
तिरुवनंतपुरम - 695 029
दूरभाष, फैक्स : 0471-2741006
ई-मेल : cdbtvm@yahoo.in

सी आई टी, आलुवा
श्री श्रीकुमार पोतुवाल
प्रसंस्करण इंजीनियर
नारियल विकास बोर्ड, प्रौद्योगिकी विकास केन्द्र, कीनपुरम,
दक्षिण वाषक्कुलम, आलुवा पिन-683105,
दूरभाष:0484 2679680,
ई-मेल : citaluva@gmail.com, cdbtdc@gmail.com

प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म

आंध्र प्रदेश
सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, वेगिवाडा (गाँव) मकान संख्या 688,
तडिकलापुडी (द्वारा), पश्चिम गोदावरी (जिला),
आंध्र प्रदेश - 534 452, दू.भा. : (08812) 212359,
ई-मेल : dspfmvgda@gmail.com

असम
सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, अभयपुरी, बोंगैगांव,
असम - 783 384, टेलि. फैक्स : (03664) 210025
ई-मेल : cdbdspabhayapuri@gmail.com

बिहार
सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, सिंहेश्वर (डाक),
मधेपुरा जिला, बिहार - 852 128. दू.भा. : (06476) 283015.
ई-मेल : dspfms@gmail.com

कर्नाटक
सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, पुरा गाँव, लोकसारा (डाक),
मंड्या जिला, कर्नाटक-571478 दू.भा.:(08232) 298015
ई-मेल:dspfarmmandya@gmail.com

केरल
सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, नेर्यमंगलम, पिन - 686 693
दू.भा. : (0485) 2554240,
ई-मेल : cdbnrlm@gmail.com

छत्तीसगढ़
सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, कोंडागाँव - 494 226, बस्तर जिला
दू.भा. : (07786) 242443, फैक्स : (07786) 242443
ई-मेल : cdbkgn1987@gmail.com

ओड़िशा
सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, पित्तापल्ली,
कुमरबस्ता डाक, खुरदा जिला - 752055,
दू.भा. : (06755) 212505, (06755) 211505
ई-मेल : cdbdspfarmodisha@gmail.com

महाराष्ट्र
सहायक निदेशक , नारियल विकास बोर्ड, प्रबीउ फार्म,
पालघर, दापोली गाँव, सतपति डाक,
पालघर-401405, महाराष्ट्र, दू.भा.: 02525 256090
ई-मेल : dspfarmpalghar@gmail.com

तमिलनाडु
सहायक निदेशक, प्रबीउ फार्म,
नारियल विकास बोर्ड, धली, तिरुमूर्ति
नगर डाक, उदुमलपेट,
तमिलनाडु-642112, दू.भा.:(0425) 2290289,
ई-मेल: dspfarmdhali@gmail.com

त्रिपुरा
सहायक निदेशक, प्रबीउ फार्म,
नारियल विकास बोर्ड, हिच्चाचेरा,
सकबारी डाक, जोलाइबारी(मार्ग),
सबरूम, दक्षिण त्रिपुरा, त्रिपुरा-799141
दू.भा.: 038 23263059
ईमेल- dspfarmhichacharatripura@gmail.com

Regd/7-19817/89
भाग XXVIII संख्या : 4

भारतीय नारियल पत्रिका

जनवरी - मार्च 2018
मूल्य : 10 रु.

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

नारियल विकास बोर्ड (कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय), भारत सरकार, केरा भवन
एसआरवी रोड कोची -682 011, भारत

ई मेल:kochi.cdb@gov.in, cdbkochi@gmail.com, वेब:www.coconutboard.nic.in दूरभाष: 0484-2376265, 2377266, 2377267